नेपोलियन बोनापार्ट

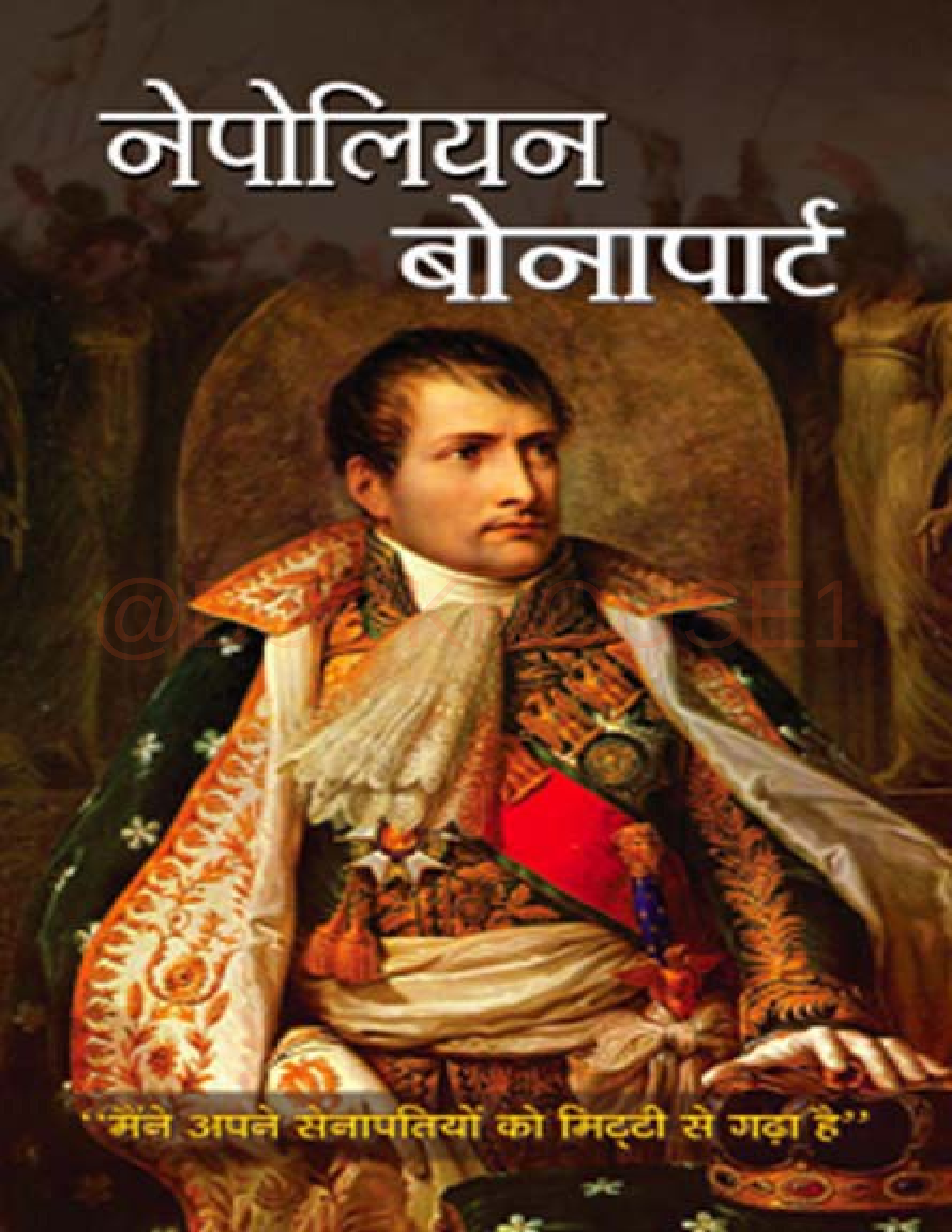

''मैंने अपने सेनापतियों को मिट्टी से गढ़ा है''

VISIT…

नेपोलियन बोनापार्ट

विमल कुमार

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

@BOOKHOUSE1

प्रस्तावना

शायद नेपोलियन बोनापार्ट के जीवन का सबसे आकर्षक पहलू था, उनकी साधारण शुरुआत। उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति के एक जनरल से लेकर सम्राट् नेपोलियन बोनापार्ट तक का सफर तय किया। वे 11 नवंबर, 1799 से लेकर 18 मई, 1804 तक फ्रेंच रिपब्लिक के पहले काउंसिल के रूप में फ्रांस के शासक रहे। 18 मई, 1804 से लेकर 6 अप्रैल, 1814 तक वे नेपोलियन प्रथम के रूप में फ्रांस के सम्राट् और इटली के राजा थे। 20 मार्च से 22 जून, 1815 के बीच थोड़े से समय के लिए उन्हें फिर से सम्राट् की पदवी मिली। नेपोलियन का सामान्य जीवन से सत्ता तक का सफर वास्तव में प्रभावशाली था। उनकी सैन्य शक्तियों और इच्छाशक्ति की मजबूती ने एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले तथा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का उत्थान देखा, जिसकी त्रुटियाँ आखिरकार उनके पतन का कारण बनीं।

किसी भी भूमिका में वे पश्चिम के इतिहास के अब तक के सबसे यशस्वी व्यक्तित्वों में से एक हैं। वे फ्रांसीसी राज्य के सैन्य विस्तार के लिए समर्पित थे, जिसके लिए उन्होंने सैन्य संगठन और प्रशिक्षण में क्रांति ला दी। उन्होंने शिक्षा में सुधार लाने का प्रयास किया और रोमन चर्च के साथ दीर्घकालीन समझौता कायम किया।

नेपोलियन के कई सुधारों ने फ्रांस के संस्थानों और पश्चिमी यूरोप के अनेक हिस्सों पर अमिट छाप छोड़ी। कई देशों ने अपनी नागरिक विधि संहिताएँ बनाते समय नेपोलियनिक कोड को आदर्श रूप में अपनाया। हालाँकि उन्होंने अंत में फ्रांस की सीमाएँ पहले से छोटी कर दीं, लेकिन अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुत सम्मान अर्जित किया और इसीलिए उन्हें इतिहास का एक महान नायक माना गया।

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन ने खुद कुछ नए सैन्य प्रयोग किए, जैसे—मिस्र में तैनात डिविजनल स्क्वायर और तोपों को समूह में रखना। इसके अलावा उन्होंने बहुत से स्रोतों से बेहतरीन रणनीतियाँ सीखीं और आधुनिकीकृत फ्रांसीसी सेना का इस्तेमाल करते हुए कुछ बड़ी जीतें हासिल कीं। दुनिया भर की सैन्य अकादमियों में उनके अभियानों का अध्ययन किया जाता है और उन्हें सामान्यत: अब तक का एक महानतम कमांडर माना जाता है। उन्होंने सिर्फ दस वर्ष से कुछ अधिक समय में यूरोप के लगभग सभी शक्तिशाली देशों से लड़ाई की। उन्होंने यूरोप के अधिकांश पश्चिमी तथा मध्य मुख्यभूमि पर कब्जा किया। नेपोलियन ने रूस तक लड़ाई या गठबंधन द्वारा अपना विस्तार जारी रखा। अक्तूबर, 1812 में, लीपजिग की लड़ाई में नेपोलियन को पराजय मिली और उन्हें गद्दी छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। कई महीने बाद उन्हें निर्वासित करके एल्बा द्वीप भेज दिया गया। उन्होंने नाटकीय ढंग से वापसी की, जो हंड्रेड डेज के रूप में प्रसिद्ध है, लेकिन फिर से वे 18 जून, 1815 को वाटरलू की लड़ाई में बुरी तरह परास्त हुए। इसके कुछ ही समय बाद उन्होंने अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, तब उन्हें निर्वासित करके सेंट हेलेना द्वीप पर भेज दिया गया, जहाँ छह वर्ष बाद उनका निधन हो गया। अपनी सैन्य उपलब्धियों के अलावा नेपोलियन को नेपोलियनिक कोड की स्थापना के लिए भी याद किया जाता है। कुछ लोगों की नजर में 'प्रबुद्ध तानाशाह' रहे नेपोलियन ने भाई-भतीजावाद की सुव्यवस्थित नीति अपनाई। उन्होंने बोनापार्ट परिवार के बहुत से सदस्यों को अपने अधीन देशों का राजा बना दिया। उन्होंने नजदीकी मित्रों को सरकार में महत्त्वपूर्ण पद सौंपे, लेकिन नेपोलियन के पतन के बाद इनमें से कोई भी लंबे समय तक सत्ता में नहीं रह सका। केवल एक भतीजे नेपोलियन तृतीय ने बाद में उन्नीसवीं सदी में फ्रांस पर शासन किया।

आरंभिक जीवन

नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 को कोरसिका के अजेशियो शहर में हुआ था। फ्रांस ने सन् 1768 में एक इटालियन द्वीप कोरसिका को अपनी सीमा में मिला लिया था, इसलिए एक इटालियन के रूप में जन्म लेने के बावजूद नेपोलियन आधिकारिक रूप से फ्रांसीसी नागरिक थे। उनके माता-पिता बहुत संपन्न तो नहीं थे, लेकिन वे अभिजात वर्ग से संबंध रखते थे।

नेपोलियन द बोनापार्ट के रूप में जन्मे नेपोलियन ने बाद में अधिक फ्रांसीसी लगने वाला नाम 'नेपोलियन बोनापार्ट' अपना लिया। वे एक वकील कार्लो बोनापार्ट की चौथी संतान थे, जिन्हें सन् 1778 में फ्रांस के लुई सोलहवें की अदालत में कोरसिका का प्रतिनिधि बनाया गया था। उनकी पत्नी मारिया लेटिजिया रेमोलिनो का नेपोलियन के बचपन पर काफी प्रभाव रहा। वे एक विद्रोही, अव्यवस्थित, उद्दंड और मुँहजोर बालक थे, जिसके लिए उन्हें 'रेबुलियन' यानी तोड़-फोड़ करनेवाले का उपनाम दिया गया। केवल उनकी माँ का सख्त अनुशासन ही उन्हें कुछ सीमा तक बांध सकता था।

एक कुलीन और कुछ प्रभावशाली परिवार के कार्लो बोनापार्ट ने खूबसूरत और दृढ़ इच्छाशक्ति की स्वामिनी लेटिजिया से उस समय विवाह किया था, जब वे सिर्फ 14 वर्ष की थीं। उन्होंने साथ मिलकर बहुत मुश्किल समय में आठ बच्चों का पालन-पोषण किया। हालाँकि नेपोलियन ने अपने अभावग्रस्त और संघर्षशील शुरुआती जीवन के बारे में एक भ्रम बनाने का प्रयास किया, लेकिन वे उस समय अधिकांश कोरसिकन परिवारों की तुलना में अधिक संपन्न थे। उनकी समृद्ध पृष्ठभूमि और पारिवारिक संपर्कों ने ही उन्हें बाद के वर्षों में अध्ययन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए।

@BOOKHOUSE1

कार्लो बोनापार्ट

उनके मूल देश पर फ्रांसीसी कब्जे का बहुत से कोरसिकावासियों ने विरोध किया, जिनका नेतृत्व पास्कल पाओली ने किया। कार्लो बोनापार्ट पाओली की पार्टी में शामिल हो गए, लेकिन जब विरोध को कुचल दिया गया तो पाओली को भागना पड़ा। अन्य कोरसिकावासियों की तरह बोनापार्ट ने भी फ्रांसीसियों से समझौता कर लिया और जल्दी ही उन्हें सन् 1771 में अजेशियो के न्यायिक जिले का कर निर्धारक नियुक्त कर दिया गया। सन् 1778 में उन्होंने अपने दो बड़े बेटों जोसेफ और नेपोलियन का दाखिला स्कूल ऑफ ऑटन में करा दिया। यहाँ पर नेपोलियन ने फ्रेंच सीखी, लेकिन वे कभी भी इस भाषा पर पूरा अधिकार नहीं कर पाए। अंत तक वे स्पेलिंग में कमजोर रहे, हालाँकि नौ वर्ष की आयु से उनकी शिक्षा फ्रेंच स्कूलों में हुई। महाद्वीपीय फ्रांस में आने के बाद कुछ समय तक नेपोलियन अपने आपको विदेशी मानते रहे। उन्होंने कभी भी अपने नए देश की परंपराओं और पूर्वग्रहों को नहीं अपनाया। वे अपनी शिक्षा और अपने ज्ञान में हमेशा स्वभावत: एक कोरसिकावासी रहे।

नौ वर्ष की आयु में नेपोलियन ट्राय के निकट एक छोटे से शहर 'ब्रियेन-ली-शेटो' के फ्रेंच सैन्य स्कूल में भर्ती हुए। हालाँकि उन्होंने फ्रेंच बोलना सीख लिया था, लेकिन वे तब भी अच्छे-खासे इटालियन लहजे में बोलते थे।

अपने शिक्षकों के लिए नेपोलियन एक आदर्श और प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे। खासकर गणित में जिसमें उन्हें सबसे अधिक अंक मिलते थे। स्कूल इंस्पेक्टर का कहना था कि गणित और भूगोल की ओर नेपोलियन का झुकाव उन्हें नौसेना के लिए उपयुक्त बनाएगा। दूसरे विषयों में उन्हें सिर्फ पास होने योग्य अंक मिलते थे।

सन् 1784 में ब्रियेन से ग्रेजुएशन करने के बाद नेपोलियन ने पेरिस के अभिजात एकोल रॉयल मिलिटेयर में दाखिला लिया। यहाँ उन्होंने एक वर्ष के भीतर दो वर्षीय कोर्स पूरा किया। यहाँ पाया गया कि उन्हें गणित और भूगोल का बहुत अच्छा ज्ञान है। इसके आधार पर उन्होंने पहले नौसेना संबंधी काम ढूँढ़ा, लेकिन आखिरकार उन्होंने आर्टिलरी का अध्ययन किया। सोलह वर्ष की आयु में ग्रेजुएशन करने के बाद नेपोलियन आर्टिलरी के सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में फ्रांसीसी सेना में भर्ती हो गए।

❑

@BOOKHOUSE1

1798 तक सैन्य कैरियर

सन् 1789 में क्रांति की शुरुआत तक नेपोलियन वेलेंस और ऑक्जोन में गैरिसन ड्यूटी पर तैनात रहे। इस दौरान उन्होंने पहले क्रांतिकारी और बाद में जेकोबिनों के लिए संघर्ष हेतु कोरसिका और पेरिस में लगभग दो वर्ष की छुट्टी ली। वह राजतंत्रवादियों, क्रांतिकारियों और कोरसिकन राष्ट्रवादियों के बीच एक तीनतरफा संघर्ष था। उन्होंने वालंटियरों की एक रेजीमेंट में लेफ्टिनेंट कर्नल का पद हासिल कर लिया। जब अगली गरमियों में जेकोबिनों को सत्ता से बेदखल किया गया तो वे मुश्किल से अपना पद बचा पाए, लेकिन नेपोलियन जल्दी ही अधिक कट्टर राष्ट्रवादी नेता पास्कल पाओली से उलझ गए और उन्हें जून, 1793 में अपने परिवार के साथ फ्रांस भागना पड़ा।

एक कोरसिकन साथी की मदद से नेपोलियन को टूलों पर घेरा डाले फ्रांसीसी सैन्यबलों में आर्टिलरी कमांडर नियुक्त कर दिया गया। टूलों की लड़ाई ने उन्हें उनका वास्तविक सैन्य अवसर दिया। टूलों की घेराबंदी के दौरान उन्होंने महत्त्वपूर्ण किलों पर कब्जा किया और ब्रिटिश नौसेना तथा थलसेना पर बमबारी करते हुए उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने तोपें लगाईं और बंदरगाह में मौजूद ब्रिटिश जहाजों को उड़ाने की धमकी देते हुए उन्हें भागने पर विवश कर दिया। इस लड़ाई के दौरान नेपोलियन की जांघ में गोली लगी, लेकिन वे शहर पर पुन : अधिकार करने में सफल रहे। उनके उस अद्भुत रण-कौशल को देखते हुए उन्हें ब्रिगेडियर जनरल के रूप में पदोन्नति मिल गई।

@BOOKHOUSE1

युवा नेपोलियन

अब एक ब्रिगेडियर जनरल के रूप में बोनापार्ट ने इटली में लड़ाई लड़ रही सेना में कार्य किया। यहाँ उन्होंने कमिटी ऑफ पब्लिक सेफ्टी का ध्यान अपनी ओर खींचा और क्रांतिकारी नेता मैक्सीमिलियन रोबेसपियरे के छोटे भाई ऑगस्टिन रोबेसपियरे के निकट सहयोगी बन गए। 1794 में मैक्सीमिलियन रोबेसपियरे के पतन के साथ उनसे जुड़े सभी लोगों को जेल में डाल दिया गया। नेपोलियन को भी सींकचों के पीछे जाना पड़ा, लेकिन दो सप्ताह के भीतर उन्हें छोड़ दिया गया।

नेपोलियन बेरोजगार थे और तुर्की सेना या यहाँ तक कि ऑस्ट्रेलिया पर नौसैनिक धावे में शामिल होने पर विचार कर रहे थे। आखिरकार वे डायरेक्टरी के एक सदस्य पॉल बरास के साथ चले गए। पॉल ने इस युवक के उत्साह को पहचाना और सन् 1795 में एक राजतंत्रवादी भीड़ को दबाने के लिए उनका इस्तेमाल किया। नेपोलियन न केवल पूरी तरह वफादार थे, बल्कि समय पड़ने पर वे निर्दयी भी हो सकते थे। उन्हें ट्यूलेरिये पैलेस में कॉन्वेंट की रक्षा कर रहे कामचलाऊ बलों का भार सौंपा गया। जब राजतंत्रवादियों और क्रांतिकारियों ने 3 अक्तूबर को राष्ट्रीय सम्मेलन के खिलाफ एक हथियारबंद विरोध प्रदर्शन किया तो नेपोलियन ने हमलावरों को भगाने के लिए तोपखाने का इस्तेमाल किया। उन्होंने घुड़सवार सेना के एक युवा अधिकारी जोआचिम मुराट, जो बाद में नेपोलियन के रिश्तेदार बने, की मदद से इन तोपों पर अधिकार किया था। हालाँकि पूरे पेरिस में घमासान संघर्ष चल रहा था, तथापि नेपोलियन ने बाद में यह डींग मारी थी कि उन्होंने 'गोलियों की एक बौछार' में सड़कों को खाली करा दिया था। इस जीत ने उन्हें आकस्मिक प्रसिद्धि, समृद्धि और नई डायरेक्टरी, खासकर उसके नेता बरास का संरक्षण

दिलाया। कुछ ही सप्ताह के अंदर वे बरास की पूर्व प्रेमिका जोसफिन डि ब्यूहरनैस से रोमांस करने लगे, जिनके साथ उन्होंने 9 मार्च, 1796 को विवाह कर लिया।

विवाह के कुछ समय बाद नेपोलियन को फ्रांसीसी सेना का पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो गया, जिसका उपयोग उन्होंने इटली पर एक सफल चढ़ाई के लिए नेतृत्व करने में किया। अपने मित्रवत् व्यवहार और अपने सैनिकों के साथ नजदीकी के कारण उन्हें 'द लिटिल कॉरपोरल'

जोसफिन डि ब्यूहरनैस

(नन्हा नायक) का उपनाम मिला। वे अपने अधिकतर सैनिकों को नाम से पहचानते थे।

उन्होंने ऑस्ट्रियनों को लोंबारडी से भगा दिया और पपल स्टेट्स की सेना को हराया, क्योंकि पोप पायस षष्ठम ने लुई सोलहवें की हत्या का विरोध किया था। फ्रांस ने दो छोटे पपल इलाकों को अपने राज्य में मिलाते हुए बदला लिया, लेकिन नेपोलियन ने रोम पर चढ़ाई करने और पोप को गद्दी से उतारने के डायरेक्टरी के आदेश को अनदेखा कर दिया।

सन् 1797 के आरंभ में बोनापार्ट ने ऑस्ट्रिया पर चढ़ाई की और उसे एक शांति समझौता करने के लिए विवश कर दिया। इसके कारण हुई कैम्पो की संधि ने फ्रांस को उत्तरी इटली के अधिकांश क्षेत्र पर नियंत्रण दिला दिया।

@BOOKHOUSE1

एडमिरल होराशियो नेल्सन

फ्रांस ने नीदरलैंड्स और तेजी से विकसित हो रहे औद्योगिक क्षेत्र राइनलैंड को भी अपने अधीन कर लिया था। एक पूर्व शर्त के अनुसार ऑस्ट्रिया को वेनिस का वादा किया गया था, लेकिन नेपोलियन ने एक बड़ी सैन्य टुकड़ी के साथ वेनिस पर चढ़ाई कर दी। आत्मसमर्पण के लिए विवश वेनिस की लगभग 1,000 वर्षों की आजादी समाप्त हो गई। बाद में सन् 1797 में बोनापार्ट ने इटली में कुछ फ्रांसीसी प्रभुत्ववाले इलाकों को सिसलपाइन रिपब्लिक के रूप में एकीकृत किया। कुल मिलाकर इटली में ऑस्ट्रियन और सर्दिनियन सेनाओं को कुचलते हुए और कैम्पो संधि के लिए विवश करते हुए गठबंधन के साथ युद्ध को समाप्त करने में नेपोलियन की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। इसके बाद उनका दर्जा एक राष्ट्रीय नायक का हो गया। अगले वर्ष बोनापार्ट को इटली की सेना का कमांड मिल गया, जहाँ कई पुराने जनरलों के ऊपर उन्हें पदोन्नत किया गया। वे जनरल नेपोलियन को संदेह और तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे, लेकिन लड़ाई के मैदान में उतरने और किए गए वादों ने उन्हें दुर्व्यवहार पीड़ित सैनिकों से सराहना और विश्वास दिलाया। मोंटेनोट, मान्डोवी, आरकोला और रिवोली सहित बहुत-सी लड़ाइयों में बोनापार्ट ने बूढ़े होते ऑस्ट्रियन जनरलों को दरकिनार कर अपने आपको अपने समय के एक प्रमुख सैनिक के रूप में स्थापित किया। अब तक वे फ्रांस और यूरोप में लगभग पूर्ण प्रभुत्व हासिल कर चुके थे।

अब केवल ब्रिटेन ही ऐसा देश था, जो फ्रांस से युद्ध कर रहा था। नेपोलियन ब्रिटिश सेना के साथ सीधी लड़ाई से डरते थे, इसलिए उन्होंने अपना ध्यान मिस्र की ओर लगा दिया। मिस्र ऑटोमन साम्राज्य के अंतर्गत था, जो पूर्वी दुनिया के साथ ब्रिटेन के व्यापार मार्ग में एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र था। नेपोलियन ने भूमध्य सागर के माध्यम से ब्रिटिश व्यापार को तोड़ने की योजना बनाई।

1 अगस्त, 1798 को अबुकीर के युद्ध में एडमिरल होराशियो नेल्सन ने फ्रांसीसी सेना को परास्त कर दिया। इससे न केवल नेपोलियन का मिस्र अभियान विफल हो गया, बल्कि उन्हें रूस के गुस्से का भी सामना करना पड़ा। रूस कुछ समय से उत्तरी अफ्रीका में भूभाग हथियाने की कोशिश कर रहा था।

❑

@BOOKHOUSE1

जनरल नेपोलियन बोनापार्ट

नेपोलियन को पारंपरिक सैन्य विचारधारा का व्यापक ज्ञान था और वे वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में उनका सफलतापूर्वक प्रयोग करते थे। उनके अपने शब्दों में—'मैं साठ लड़ाइयाँ लड़ा हूँ और मैंने ऐसा कुछ नहीं सीखा जो मैं शुरू में नहीं जानता था।'

इटालियन अभियान के दौरान उनके मुख्यालय की समकालीन पेंटिंगों में उन्हें दुनिया की पहली दूरसंचार प्रणाली इस्तेमाल करते हुए दिखाया गया है।

जनरल (सेनानायक) के रूप में नेपोलियन बोनापार्ट

नेपोलियन निर्देश देते हुए

@BOOKHOUSE1

उन्होंने 1792 में पहली बार कार्यान्वित चैप सीमाफोर लाइन स्थापित की थी।

नेपोलियन बुद्धिमत्ता और छल के उस्ताद थे। उनका एक अद्भुत इंद्रियबोध उन्हें यह बताता था कि हमला करने का बेहतरीन समय क्या है। वे नि:शंक शत्रु पर अपनी शक्तियाँ केंद्रित करते थे और विरोधी ताकतों के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए गुप्तचरों का इस्तेमाल करते थे। साथ ही वे इतने चतुर थे कि अपनी सैन्य टुकड़ियों की तैनातियों का पता नहीं लगने देते थे। इटली अभियान जिसे उनका महानतम युद्ध माना जाता है, में नेपोलियन की सेना ने 1,60,000 बंदियों, 2,000 तोपों और 170 स्टैंडर्ड पर कब्जा किया।

इसी बीच जनरल बोनापार्ट फ्रांसीसी राजनीति में एक उल्लेखनीय ताकत बन गए थे। वे अपने सैनिकों के लिए जिन दो समाचार-पत्रों को प्रकाशित करते थे, वे जल्दी ही फ्रांस में भी व्यापक रूप से प्रसिद्ध हो गए। मई, 1797 में उन्होंने पेरिस में प्रकाशित एक तीसरे समाचार-पत्र की स्थापना की, जिसका नाम था—लि जर्नल डि बोनापार्ट एट डेस हॉम्स वर्टेक्स।

बरास

सन् 1797 के मध्य में हुए चुनावों के बाद राजतंत्रवादी पार्टी की ताकत बढ़ गई, जिससे डायरेक्टरी में बरास और

उनके सहयोगियों को परेशानी हो गई। बदले में राजतंत्रवादियों ने नेपोलियन पर इटली को लूटने और ऑस्ट्रियनों के साथ निरंकुश व्यवहार करने का आरोप लगाया। अपनी सेना की मदद से बोनापार्ट ने 4 सितंबर को सभी राजतंत्रवादियों को पेरिस से भगा दिया। बरास और उनके रिपब्लिकन सहयोगियों को पुन: नियंत्रण मिल गया, लेकिन वे नेपोलियन और उनकी सैन्य कमांड पर अत्यधिक निर्भर थे। दिसंबर में पेरिस लौटने तक नेपोलियन बोनापार्ट विजेता नायक बन चुके थे, जो किसी भी डायरेक्टर से अधिक लोकप्रिय थे।

❑

@BOOKHOUSE1

1798-99 का मिस्र अभियान

फ्रांस और यूरोप के अधिकांश हिस्सों पर अपना अधिकार स्थापित करने के बाद भी नेपोलियन अंग्रेजों के हमलों से परेशान थे। उन्हें शक्तिशाली अंग्रेज सेनाओं, खासकर उसकी नौसेना का सामना करने की व्यर्थता का पता था। उस समय ब्रिटेन भारत के साथ अपने व्यापारिक संपर्कों की सुरक्षा के लिए उत्सुक था। वह मार्ग भूमध्य सागर के जलमार्ग और फिर स्थल में ऑटोमन साम्राज्य से होते हुए

मिस्र में युद्ध करते हुए ब्रिटिश

जाता था। उस समय ऑटोमन साम्राज्य का एक प्रांत रहा मिस्र उस मार्ग में रणनीतिक स्थान पर था। नेपोलियन का इरादा मिस्र पर अधिकार करने और इस प्रकार भारत के साथ ब्रिटिश व्यापार को बाधित करना था। इस अभियान के परिणाम और लागत के बारे में संदेह होने के बावजूद डायरेक्टर इससे तुरंत सहमत हो गए, क्योंकि वे लोकप्रिय जनरल को केंद्र से दूर देखना चाहते थे। नेपोलियन ने अपने मिस्र अभियान में बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों को शामिल किया, जो ज्ञान और शिक्षा के प्रति उनके समर्पण का दृढ़ संकेत था। बहरहाल, बहुत लोग इसे अपने वास्तविक साम्राज्यवादी उद्देश्यों को छिपाने का उनका तरीका मानते हैं। वहाँ की गई बहुत सी खोजों में रोजेटा स्टोन बहुत महत्त्वपूर्ण था। नेपोलियन ने खुद को ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रदर्शित करते हुए स्थानीय लोगों का समर्थन जीतने की कोशिश की, जो उन लोगों को ऑटोमन दमन से आजाद कराने आया था। यहाँ तक कि उन्होंने इसलाम की उक्तियों की भी प्रशंसा की। नेपोलियन की सेना ने 9 जून को माल्टा पर अधिकार कर लिया।

@BOOKHOUSE1

1 जुलाई को नेपोलियन और उनकी सेना ब्रिटिश रॉयल नेवी से सफलतापूर्वक बचते हुए एलेक्जेंड्रिया पहुँचे। उनका सामना तुरंत मध्य पूर्व में एक पूर्व शक्ति मेमल्यूक से हुआ। वे पिरामिडों से लगभग 4 मील दूर स्थापित थे और उन्हें डर था कि इस लड़ाई में पराजय उनकी ताकत को पूरी तरह समाप्त कर देगी। उन्होंने 25,000 से लेकर 1,00,000 तक की घुड़सवार सेना भेजी और लड़ाई तुरंत समाप्त हो गई। हालाँकि वे संख्या में काफी अधिक थे, लेकिन नेपोलियन ने मुख्य रूप से अपनी रणनीति की वजह से लड़ाई में विजय हासिल की।

उनके सैनिकों ने खोखले वर्ग (हॉलो स्क्वायर) बनाए, हर साइड बाहर की ओर थी जिसके अंदर तोप और आपूर्तियाँ सुरक्षित रखी थीं। इससे एक सशक्त रक्षा प्रणाली बनी, जिसने साथ-ही-साथ सैनिकों का हर दिशा में बाहर की ओर फायर करना आसान बनाया। कुल मिलाकर केवल 300 फ्रांसीसी सैनिक मारे गए, जबकि लगभग 6,000 मिस्र के मूल निवासी मारे गए।

उस समय अंग्रेजों के पास एडमिरल होराशियो नेल्सन की कमांड में दुनिया की सबसे शक्तिशाली नौसेना थी। फ्रांसीसियों ने स्थल पर

फ्रांसीसी सैनिक

भारी विजय प्राप्त की और वे मानते थे कि मिस्र के तट पर उनके साथ मौजूद छोटा बेड़ा सुरक्षित था; ब्रिटिश जहाज केवल खुले समुद्र की ओर से ही हमला कर सकते थे।

1 अगस्त को ब्रिटिश बेड़े ने फ्रांसीसी युद्धपोतों को अबुकीर की खाड़ी में खड़े पाया। वे एक मजबूत रक्षात्मक पंक्ति में खड़े थे, लेकिन कुछ ब्रिटिश जहाज भूमि और फ्रांसीसी पंक्ति के बीच घुसने में सफल हो गए। इसके बाद ब्रिटिश टुकड़ियों ने दोनों ओर से आक्रमण किया और आखिरकार दो फ्रांसीसी पोतों को छोड़कर सभी पर या तो अधिकार कर लिया गया या उन्हें नष्ट कर दिया गया। दो जहाज गिलुम टेल और जेनेरक्ष बच निकले, लेकिन पहले जहाज को जल्दी ही माल्टा पर ब्रिटिश विजय के क्रम में पकड़ लिया गया।

नील की इस लड़ाई में फ्रांसीसी पराजय विफल रक्षात्मक रणनीति की वजह से हुई, लेकिन इसकी मुख्य वजह फ्रांसीसी जहाजों पर लोगों की कमी थी जिसमें 'युवा और उद्धत' सैनिक थे।

कुल मिलाकर लगभग 250 ब्रिटिश और 1,700 फ्रांसीसी मारे गए। बोनापार्ट और उनके बचे हुए सैनिक स्थल तक सीमित हो गए। भूमध्य सागर में फ्रांस की स्थिति को मजबूत करने का उनका लक्ष्य पूरी तरह विफल हो गया। इसके बावजूद उनकी सेना मिस्र में ताकत बढ़ाने में सफल रही। हालाँकि उन्हें बार-बार राष्ट्रवादी विद्रोहों का सामना करना पड़ा।

@BOOKHOUSE1

सन् 1799 के आरंभ में नेपोलियन ने अपना ध्यान सीरिया के ऑटोमन प्रांत पर लगा दिया, जो आधुनिक इस्राइल है। संख्या में मजबूत होने के बावजूद ऑटोमन सैनिकों का अनुभवी और सक्षम फ्रांसीसी सेना से कोई मुकाबला नहीं था। उन्होंने ऑटोमन सैनिकों के साथ कई लड़ाइयों में सेना को जीत दिलाई।

बरसों की लड़ाई ने अपना दुष्प्रभाव दिखा दिया था। सेना लड़ाइयों से थक चुकी थी और रोगों तथा अपर्याप्त आपूर्तियों से कमजोर हो चुकी थी। नेपोलियन एक्र के किले को जीतने में विफल रहे और मई में मिस्र लौटने के लिए विवश हुए। 25 जुलाई को ऑटोमन सैनिकों ने जमीन पर और अबुकीर के समुद्र में फ्रांसीसी टुकड़ियों पर हमला कर दिया। नेपोलियन उन्हें हराने में सफल रहे, लेकिन आखिरकार सन् 1799 में उन्हें मिस्र छोड़ना पड़ा। वे अपने अधिकार वाले इलाकों को अपने सैनिकों को सौंपकर आ गए, लेकिन उन पर लगातार ब्रिटिश और ऑटोमन आक्रमण होते रहे। शेष सैनिकों ने आखिरकार ब्रिटिश सैनिकों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, लेकिन उससे पहले हर तीन में से एक की मौत हो चुकी थी।

❑

18 ब्रूमैयर का तख्तापलट

यह आकस्मिक तख्तापलट वह घटना है, जिसने फ्रांस में डायरेक्टरी के अंतर्गत सरकारी व्यवस्था को पलट दिया। इसे अक्सर फ्रांसीसी क्रांति के एक प्रभावशाली अंत और नेपोलियन बोनापार्ट की तानाशाही के लिए मार्ग प्रशस्त होने के रूप में देखा जाता है। मिस्र में बोनापार्ट ने अखबारों और डिस्पैचों के माध्यम से यूरोपीय मामलों पर निगरानी रखने का प्रयास किया था। फ्रांसीसी तटीय बंदरगाहों को अवरुद्ध करके ब्रिटिश जहाजों की अस्थायी रवानगी का लाभ उठाते हुए 23 अगस्त, 1799 को वे अचानक समुद्री रास्ते से फ्रांस के लिए रवाना हो गए। उनके राजनीतिक विरोधियों ने उन पर अपने सैनिकों को छोड़कर भाग आने का आरोप लगाया, लेकिन यह तथ्य अपनी जगह है कि उन्हें डायरेक्टरी से पेरिस लौट आने का आदेश मिला था। हालाँकि असंख्य फ्रांसीसी जीतों से सैन्य स्थिति सुधरी थी, लेकिन गणतंत्र कंगाल हो चुका था और भ्रष्ट व अक्षम डायरेक्टरी फ्रांसीसी जनता में काफी अलोकप्रिय हो चुकी थी जिससे आंतरिक अशांति बढ़ रही थी।

पाँच डायरेक्टरों में से एक ऐबे सिये ने सबसे पहले तख्तापलट की योजना बनाई। पूर्व में कई जीत हासिल करने के बाद नेपोलियन का जनता ने जिस उत्साह से स्वागत किया था, उससे सिये को लगता था कि उनके तख्तापलट में जनरल बोनापार्ट का होना अत्यावश्यक है, लेकिन सितंबर, 1799 में मिस्र से लौटने के बाद बोनापार्ट ने घटनाओं को इस चतुराई से घुमा दिया कि तख्तापलट से सत्ता सिये की नहीं, बल्कि उनकी झोली में आ गिरी।

इस तख्तापलट में प्रमुख अवरोध खुद सेना में ही थे। जीन बैप्टिस्ट जॉर्डन जैसे कुछ जनरल रिपब्लिकनवाद में भरोसा करते थे; कुछ अन्य जैसे बर्नाडोट खुद को ही फ्रांस पर शासन करने में सक्षम मानते थे। अपने गुणों के अनुरूप बोनापार्ट ने चालाकी से सबकी भावनाओं को ध्यान में रखा और अपने इरादों को गुप्त रखा।

@BOOKHOUSE1

सेना के एक कांट्रेक्टर कॉलोट ने तख्तापलट के लिए दो मिलियन फ्रैंक दिए। योजना यह थी कि पहले सैनिक डायरेक्टरों को त्यागपत्र देने के लिए विवश करेंगे और फिर दोनों परिषदों को एक नया संविधान बनाने के लिए एक आज्ञाकारी आयोग नियुक्त करने हेतु तैयार किया जाएगा। इस योजना में बोनापार्ट के भाई लुसियन, जो तब काउंसिल ऑफ फाइव हंड्रेड के स्पीकर थे, एक अन्य डायरेक्टर रोजर डुकोस और टेलीरेंड शामिल थे।

18 ब्रूमैयर, 9 नवंबर की सुबह, तख्तापलट के प्रति सहानुभूति रखनेवाले काउंसिल ऑफ एल्डर्स के कुछ सदस्यों, ने अपने सहयोगियों को जेकोबिन षड्यंत्र के बारे में चेताया और उन्हें पेरिस छोड़ने के लिए विवश किया। सिये और रोजर डुकोस ने डायरेक्टर के पद से इस्तीफा दे दिया। टेलीरेंड ने बरास को भी ऐसा करने के लिए विवश कर दिया। बाहर बगीचे में सैनिकों की उपस्थिति उन्हें विरोध की निरर्थकता बताने के लिए पर्याप्त थी। तीन डायरेक्टरों का त्यागपत्र एकता को खत्म करने के लिए पर्याप्त था, लेकिन दो जेकोबिन डायरेक्टरों—गोहीर और मौलिन ने इस्तीफा देने से इनकार कर दिया। मौलिन बच निकले, लेकिन गोहीर को बंदी बना लिया गया। हालाँकि दोनों परिषदों को तत्काल भंग नहीं किया गया और उनकी बैठक जारी रही।

उस सुबह बाद में बोनापार्ट के नेतृत्व में सैनिकों ने नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। उन्होंने लेजिस्लेटिव परिषदों को तितर-बितर कर दिया और बोनापार्ट, सिये तथा डुकोस को सरकार चलाने के लिए अस्थायी काउंसिल नियुक्त कर दिया।

क्रांति से ऊब चुकी फ्रांसीसी जनता ने तख्तापलट का स्वागत किया। लोग अब बुद्धिमान और सुदृढ़ शासन चाहते थे। जेकोबिन क्रांतिकारियों के प्रतिरोध को तुरंत कुचल दिया गया, कुछ विरोध करने वाले जेकोबिन

लेजिस्लेटरों को निर्वासन दे दिया गया और अन्य को गिरफ्तार कर लिया गया।

सिये को उम्मीद थी कि वे नई शासन व्यवस्था पर हावी होंगे, लेकिन बोनापार्ट ने तख्तापलट करते हुए अपने उत्थान को पूर्ण सत्ता प्राप्त करने के साथ पूरा किया। उन्होंने संविधान तैयार किया और प्रथम काउंसिल के रूप में अपना चुनाव सुनिश्चित किया, जिसने उन्हें अन्य दो से अधिक शक्ति दी। इसके अतिरिक्त उन्होंने सीनेट को नियुक्त किया और सीनेट ने संविधान की व्याख्या की। बोनापार्टिस्ट सीनेट ने उन्हें डिक्री द्वारा शासन करने की अनुमति दी, जिससे राज्य परिषद और ट्रिब्यूनेट केवल सजावटी वस्तु बनकर रह गए।

प्रथम काउंसिल—18 ब्रूमैयर के तख्तापलट के बाद 1799 से 1804 तक फ्रांस सरकार को द काउंसिलेट के रूप में देखा जाता था। इस अवधि के दौरान प्रथम काउंसिल के रूप में नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने आपको फ्रांस में प्रमुख ताकत के रूप में स्थापित कर लिया था, लेकिन अभी खुद को सम्राट् घोषित नहीं किया था। नई सरकार तीन संसदीय असेंबलियों से बनी थी : काउंसिल ऑफ स्टेट जो विधेयक तैयार करता था, ट्रिब्यूनेट जो बिना मतदान किए उन पर चर्चा करता था और लेजिस्लेटिव असेंबली जो बिना उन पर चर्चा किए मतदान करती थी। कार्यकारी अधिकार तीन काउंसिलों में निहित थे, जिन्हें दस वर्षों के लिए चुना जाता था। समय के साथ नेपोलियन ने घटनाओं को अपने हिसाब से प्रभावित करते हुए प्रथम काउंसिल के रूप में अपनी ताकत बढ़ाई और दो अन्य काउंसिलों तथा उसके साथ असेंबलियों को कमजोर कर अपने अधीन बना दिया। इस प्रकार उन्होंने चतुराई से एरिस्टोक्रेटिक संविधान को एक अप्रत्यक्ष तानाशाही में बदल दिया। 7 फरवरी, 1800 को स्पष्ट रूप से प्रभावित किए गए चुनाव ने नेपोलियन को अन्य दो काउंसिलों से अधिक कार्यकारी शक्तियाँ प्रदान करते हुए प्रथम काउंसिल का दर्जा सुनिश्चित कर दिया। संक्षेप में, अब वह वन मैन गवर्नमेंट थे।

@BOOKHOUSE1

शुरुआती राजाओं की तरह बोनापार्ट ने कई स्थायी सुधार किए, जैसे—केंद्रीकृत और उपयोगितावादी पर्सियासनिक व्यवस्था, एक कर प्रणाली, एक केंद्रीय बैंक, विधि संहिताएँ और सड़क तथा निकास प्रणालियों की व्यवस्था। उन्होंने राष्ट्रीय संस्थानों, उच्च शिक्षा, एक न्यायिक व्यवस्था और वित्त के अंगों, बैंकों, संहिताओं और ईमानदार अनुशासित श्रम शक्ति की परंपराओं के लिए आवश्यक धनराशि सृजित की या उसे बढ़ाया।

नेपोलियन ने दिया नेपोलियनिक कोड

क्रांतिकारी कानूनों ने फ्रांस की बहुसंख्यक कैथोलिक जनसंख्या को क्षुब्ध कर दिया था। लोगों के समर्थन से सफलतापूर्वक सर्वोच्च शक्ति प्राप्त करने के बाद नेपोलियन बोनापार्ट को विश्वास था कि कैथोलिक चर्च के साथ अच्छे संबंध उनके प्रयासों की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण होंगे। सन् 1801 की धर्मसंधि (कॉनकॉरडेट ऑफ 1801) नेपोलियन बोनापार्ट और पोप पायस सप्तम के बीच एक संधि थी, जिसने फ्रांस में रोमन कैथोलिक चर्च को पुनर्स्थापित कर दिया। बोनापार्ट की समझ में आ गया कि धार्मिक शांति को बहाल रखना देश में शांति कायम रखने के लिए आवश्यक सभी चीजों से कहीं ऊपर था। इसके साथ वे अधिकांशत: कैथोलिक जनसंख्या को अपने शासन पर भरोसा दिलाना चाहते थे।

नेपोलियनिक कोड या कोड नेपोलियन नेपोलियन प्रथम द्वारा स्थापित नागरिक संहिता थी। वह 21 मार्च, 1804

को लागू हुई। हालाँकि यह एक नागरिक विधि प्रणाली के साथ किसी यूरोपीय देश में स्थापित होने वाली पहली विधि संहिता नहीं थी। इसने कई अन्य देशों के कानूनों को काफी प्रभावित किया। स्पष्ट रूप से लिखित और सुलभ कानून, कानून व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में एक प्रमुख कदम था। उनके नागरिक कानून अब भी कई देशों में बहुत महत्त्व रखते हैं। विधि विशेषज्ञों की समितियों द्वारा तैयार यह संहिता फ्रांसीसी क्रांति का परिणाम थी। इस संहिता से पहले फ्रांस के विभिन्न क्षेत्रों पर स्थानीय कानूनों का शासन था, जो स्थानीय प्रथाओं पर निर्भर थे। बदले में ये राजाओं या सामंतों द्वारा दी गई छूटों और विशेषाधिकारों पर आधारित थे। क्रांति से सामंतवाद का अंत हो गया। इसने फ्रांस के विभिन्न भागों में इस्तेमाल होने वाली भिन्न-भिन्न कानून व्यवस्थाओं को एक केंद्रीय विधि संहिता से बदलने की आवश्यकता को प्रेरित किया। संहिताबद्ध रोमन कानून से प्रेरित इस संहिता ने कानूनों को अधिक स्पष्ट बना दिया।

जीन जैकस रेजिस डि कैंबेकेरेस, जो सन् 1799 से 1804 तक द्वितीय काउंसिल के पद पर रहे, उन्होंने संहिता के निर्माण का निरीक्षण किया। वैसे बोनापार्ट ने मसौदों का संशोधन करने वाले सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

अपराध और वाणिज्य कानून को संहिताबद्ध करने के लिए बोनापार्ट ने अन्य संहिताओं को अधिकार दिए। नेपोलियनिक कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीड्यर (आपराधिक प्रक्रिया की नेपोलियनवादी संहिता) प्रतिवादी को अदालत में अपना वकील नियुक्त करने की अनुमति देता था। 1808 में एक कोड ऑफ क्रिमिनल इंस्ट्रक्शन (आपराधिक निर्देश संहिता) प्रकाशित की गई, जिसने न्यायिक क्रियाविधि के सटीक नियमों को अधिनियमित किया। हालाँकि समकालीन मानक भले ही इन क्रियाविधियों को अभियोजन पक्ष की ओर झुका हुआ

@BOOKHOUSE1

आल्प्स पहड़ी को पार करते हुए नेपोलियन

बताएँ, लेकिन वे व्यक्तिगत आजादी की सुरक्षा और दोषी के साथ दुव्यर्वहार, जो उस काल की यूरोपीय अदालतों में आम बात थी, उन्हें सुधारने के हित में थे। बाद में नेपोलियन ने नागरिक संहिता को अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि बताया।

शांति का मध्य काल— नेपोलियन के नेतृत्व में फ्रांस में काफी शांति और व्यवस्था थी, जिसने खासकर आम आदमी को काफी आराम पहुँचाया। मूलभूत चीजें, जिन्होंने अकसर लोगों को भूख और प्यास सहने पर मजबूर किया था, सस्ती और प्रचुर हो गईं—वहाँ आग और रोशनी की कोई कमी नहीं थी; व्यापार फल-फूल रहा था और मजदूरी अच्छी थी। नव धनाढ्यों का ठाठ-बाट और विलासिता गुड जोसफिन, खूबसूरत मदाम टेलियन और 'दिव्य' जूलियट रिकेमियर के सैलूनों में प्रदर्शित हो रही थी।

1800 ई. में बोनापार्ट इटली लौटे जिस पर उनके मित्र में रहते ऑस्ट्रियनों ने फिर से कब्जा कर लिया था। अभियान गलत तरीके से आरंभ हुआ, लेकिन उन्होंने वसंत में अपने सैनिकों के साथ आलप्स पार कर लिया और मरेंगो में ऑस्ट्रियनों को पूरी तरह से हरा दिया जिसके बाद एक अस्थायी युद्धविराम हो गया। नेपोलियन के भाई जोसेफ, जो लुनविले में शांतिवार्त्ताओं की अगुआई कर रहे थे, ने खबर दी कि अंग्रेजों द्वारा ऑस्ट्रिया के समर्थन

के की वजह से ऑस्ट्रिया फ्रांस द्वारा नए हासिल क्षेत्र को मान्यता नहीं देगा। वार्त्ताओं के लगातार विवादास्पद होते जाने के कारण बोनापार्ट ने अपने जनरल मोरू को एक बार फिर ऑस्ट्रिया पर आक्रमण करने का आदेश दिया। मोरू ने होहेनलिंडन में फ्रांस को विजय दिलाई। परिणामस्वरूप, फरवरी, 1801 में लुनविले की संधि पर हस्ताक्षर हुए। इस संधि ने कैंपो फोरमियो की संधि के फ्रांसीसी लाभों को और पुष्ट कर दिया। ब्रिटेन ने मार्च, 1802 में एमीयन्स की संधि पर हस्ताक्षर किए, जिसमें कई औपनिवेशिक इलाकों के विभाजन सहित शांति की शर्तें तय की गईं।

25 मार्च, 1802 को फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम के बीच जोसेफ बोनापार्ट और मारकस कॉर्नवालिस द्वारा 'निर्णायक शांति संधि' के रूप में एमीयन्स की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। इस संधि के तहत यूनाइटेड किंगडम ने फ्रांसीसी गणतंत्र को मान्यता दी और उसके बाद एक वर्ष तक शांति स्थापित रही। यही वह एकमात्र अवधि थी जिसके दौरान तथाकथित 'महान् फ्रांसीसी युद्ध' के दौरान यूनाइटेड किंगडम और फ्रांस के बीच युद्ध नहीं हो रहा था।

फ्रांस और ब्रिटेन के बीच एक वर्ष की शांति असहज रही, क्योंकि यूरोप की 'वैध' राजशाहियाँ गणतंत्र को मान्यता देने की अनिच्छुक थीं। उन्हें आशंका थी कि उनके अपने लोग भी क्रांति के विचारों से प्रेरित हो सकते हैं। ब्रिटेन में लुई सोलहवें के भाई का एक राजकीय अतिथि के रूप में स्वागत किया गया, जबकि आधिकारिक रूप से ब्रिटेन ने फ्रांस को गणतंत्र के रूप में मान्यता दे दी थी। ब्रिटेन वादे के अनुसार माल्टा और मिस्र को खाली कराने में विफल रहा और उसने फ्रांस द्वारा पीडमोंट को मिलाए जाने और स्विट्जरलैंड में नेपोलियन द्वारा मध्यस्थता किए जाने का विरोध किया।

@BOOKHOUSE1

सन् 1803 में बोनापार्ट को एक बड़ी पराजय का सामना करना पड़ा, जब हैती को फिर से जीतने के लिए उनके द्वारा भेजी गई सेना पीत ज्वर (येलो फीवर) और टुसेंट एल' ओवरच्योर के नेतृत्व में जोरदार प्रतिरोध का शिकार हो गई। यह महसूस करते हुए कि उत्तरी अमेरिका की मुख्य भूमि पर फ्रांसीसी अधिकार अब हमलों के लिए संवेदनशील होंगे और ब्रिटेन के साथ आसन्न युद्ध को देखते हुए उन्होंने वे इलाके यूनाइटेड स्टेट्स को बेच दिए। इसे 'लुसियाना परचेज' का नाम दिया गया, जिसके द्वारा नेपोलियन ने उस इलाके को तीन सेंट प्रति एकड़ से भी कम कीमत पर बेच दिया। माल्टा को लेकर विवाद ने ब्रिटेन को सन् 1803 में फ्रांसीसी राजतंत्रवादियों के समर्थन में फ्रांस के खिलाफ युद्ध घोषित करने का बहाना दे दिया।

❑

फ्रांस का सम्राट्

सन् 1802 के संविधान ने आधिकारिक रूप से नेपोलियन को एक स्थायी तानाशाह बना दिया। सत्ता के अविश्वसनीय रूप से प्रभावी केंद्रीयकरण के साथ नेपोलियन फ्रांस के अप्रत्यक्ष राजा बन गए। निश्चित रूप से यह बात बहुतों को पसंद नहीं आई, जिनमें से कुछ ने उनकी हत्या का षड्यंत्र रचा। नेपोलियन ने अपनी शक्तियों को और बढ़ाने के लिए उनका इस्तेमाल किया और उन लोगों का निर्दयतापूर्ण सख्ती से दमन किया।

जनवरी, 1804 में फ्रांसीसी पुलिस ने नेपोलियन की हत्या के एक षड्यंत्र का पर्दाफाश किया। वह कथित रूप से बोर्बनों के नेतृत्व में किया गया था। बोर्बन वह सत्ताधारी दल था, जिसे फ्रांसीसी क्रांति के दौरान सत्ता से उखाड़ फेंका गया था। इस आंदोलन ने पूरे यूरोप में राष्ट्रवाद फैला दिया था और इससे सत्ताधारी वर्ग नाराज था। बोनापार्ट ने ड्यूक डि' एंजियें की गिरफ्तारी के आदेश दिए और एक त्वरित गुप्त मुकदमे के बाद 21 मार्च को ड्यूक को फाँसी पर लटका दिया गया। इसके बाद बोनापार्ट ने खुद को सम्राट् बनाते हुए फिर से फ्रांस में एक आनुवंशिक राजशाही के आरंभ को उचित ठहराने के लिए इस घटना का इस्तेमाल किया। सन् 1804 में नेपोलियन ने फ्रांस का सम्राट् बनने के अपने इरादे की घोषणा की। इस कदम से उनका पद आनुवंशिक हो जाता और इससे उनकी हत्या के सभी षड्यंत्र बेकार हो जाते। उनके कहने का अर्थ था कि तुम मुझे मार सकते हो, लेकिन तुम संस्था को नहीं मार सकते। संविधान में बोनापार्ट वंश को दृढ़ता से डाले जाने के बाद उन्हें लगता था कि बोर्बन का फिर से सत्ता में आना असंभव होगा।

फ्रांसीसी सीनेट ने प्रथम काउंसिल बोनापार्ट के सामने सम्राट् के पद का प्रस्ताव रखा। 18 मई, 1804 को एक कानून के लिए वोट किया जिसमें कहा गया, 'गणतंत्र की सरकार एक सम्राट्' में निहित है, जो फ्रांस के सम्राट् का पद ग्रहण करते हैं।'

@BOOKHOUSE1

2 दिसंबर, 1804 को नोट्र डेम डि पेरिस में नेपोलियन की सम्राट् के रूप में ताजपोशी हुई। नेपोलियन ने अपने राज्याभिषेक की योजना उतनी ही सतर्कता से बनाई, जितनी सतर्कता वे लड़ाइयों में करते थे। उन्होंने समारोहों के एक ग्रैंड मास्टर, अस्थायी सजावट के लिए प्रसिद्ध शिल्पकारों और विस्तृत पोशाकों के लिए एक डिजाइनर की सेवाएँ लीं।

नेपोलियन पोप को अपना अधिपति स्वीकार नहीं करना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने पोप द्वारा अभिषेक न करवाने की योजना बनाई। पोप ने शाही ताजों को अभिमंत्रित करने के बाद वापस वेदी पर रख दिया और अपना आसन ग्रहण कर लिया। नेपोलियन आगे बढ़े और वेदी से अपना ताज उठाकर अपने सिर पर रख लिया। इसके बाद वे वेदी की ओर लौटे और जोसफिन का ताज उठाया। इस प्रकार नेपोलियन ने अपनी पत्नी जोसफिन को साम्राज्ञी के रूप में ताज पहनाने से पहले अपनी ताजपोशी की। इसके बाद 26 मई, 1805 को मिलान के कैथेड्रल में लोंबारडी के लौह ताज के साथ इटली के राजा के रूप में नेपोलियन का राज्याभिषेक किया गया।

नेपोलियन ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे महाद्वीप में अपनी विस्तारवादी लड़ाइयों को समाप्त नहीं करेंगे; इसलिए सन् 1805 में ब्रिटेन को अनिच्छा से एक तीसरे गठबंधन की ओर जाना पड़ा। यह फ्रांस के खिलाफ यूनाइटेड किंगडम, ऑस्ट्रिया, रूस, नेपल्स और स्वीडन का गठबंधन था। नेपोलियन जानते थे कि फ्रांसीसी बेड़ा रॉयल नेवी को परास्त नहीं कर पाएगा, इसलिए उन्होंने ब्रिटिश बेड़े को इंग्लिश चैनल से दूर ले जाने की चाल चली, ताकि संयुक्त रूप से स्पेनिश और फ्रांसीसी बेड़े चौबीस घंटे के लिए चैनल का नियंत्रण वापस प्राप्त कर

सकें। उन्होंने सोचा कि इससे फ्रांसीसी सेनाओं को इंग्लिश चैनल पार करने का पर्याप्त समय मिल जाएगा, लेकिन

फ्रांस के सम्राट् नेपोलियन

ऑस्ट्रिया और रूस द्वारा फ्रांस तथा उसके सहयोगियों पर चढ़ाई करने की तैयारी के कारण उन्हें अपनी योजना बदलकर महाद्वीप पर अपना ध्यान केंद्रित करना पड़ा। नवनिर्मित ग्रांड आर्मी ने चुपचाप जर्मनी की ओर प्रस्थान किया। 20 अक्तूबर, 1805 को उन्होंने उल्म में ऑस्ट्रियनों को चकित कर दिया। अगले दिन त्राफलगर की निर्णायक लड़ाई (21 अक्तूबर, 1805) में ब्रिटेन ने समुद्र पर स्थायी अधिकार कर लिया। कुछ सप्ताह बाद ही 2 दिसंबर को नेपोलियन ने आस्टरलिज में ऑस्ट्रिया और रूस के खिलाफ एक बड़ी जीत हासिल की और फिर से ऑस्ट्रिया को शांति की मांग करने के लिए विवश कर दिया।

अगले वर्ष एक चौथा गठबंधन बना और 14 अक्तूबर, 1806 को नेपोलियन ने जेना-ऑरस्टेड की लड़ाई में पर्सिया को परास्त किया। वे पोलैंड से होकर आगे बढ़ती रूसी सेनाओं के खिलाफ आगे बढ़े और 6 फरवरी, 1807 को एलु की खूनी लड़ाई में उन पर हमला किया। फ्राइडलैंड में निर्णायक जीत के बाद उन्होंने पूर्वी पर्सिया के तिलसित में जार एलेक्जेंडर प्रथम के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे यूरोप दो शक्तियों के बीच बँट गया। उन्होंने जर्मनी के राज्यों के सिंहासन पर कठपुतली शासक बिठाए। पोलैंड के फ्रेंच नियंत्रित हिस्से में उन्होंने डची ऑफ वारसा स्थापित किया और उसके शासक के रूप में सेक्सोनी के किंग फ्रेडरिक ऑगस्टस प्रथम को रखा। सन् 1809 से लेकर 1813 के बीच नेपोलियन ने अपने भाई लुईस बोनापार्ट के लिए ग्रैंड डची ऑफ बर्ग के रीजेंट (प्रतिशासक) का भी काम किया।

@BOOKHOUSE1

प्रसिद्ध संगीतकार लुडविग वैन बीथोवन ने आरंभ में अपनी तीसरी सिंफनी इरोइका (साहसिक का इटालियन शब्द) नेपोलियन को समर्पित की। वे मानते थे कि जनरल फ्रांसीसी क्रांति के लोकतांत्रिक तथा गणतांत्रिक आदर्शों को बनाए रखेंगे, लेकिन सन् 1804 में जब नेपोलियन की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाएँ स्पष्ट हो गईं तो उन्होंने उस सिंफनी को नया नाम देते हुए 'एक महान् व्यक्ति की याद में बनाई गई धुन' बताया।

प्रायद्वीपीय युद्ध और पाँचवें गठबंधन का युद्ध—सैन्य अभियानों के अलावा नेपोलियन ने ब्रिटेन के खिलाफ आर्थिक युद्ध भी छेड़े। वे 'महाद्वीपीय व्यवस्था' नामक ब्रिटेन का एक यूरोप व्यापी वाणिज्यिक बहिष्कार लागू करना चाहते थे। हालाँकि इस काररवाई ने ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को चोट पहुँचाई। यही नहीं, उसने फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था को भी नुकसान पहुँचाया।

स्पेन के राजा जोसफ बोनापार्ट

पुर्तगाल ने इस महाद्वीपीय व्यवस्था का अनुसरण नहीं किया और सन् 1807 में नेपोलियन ने पुर्तगाल पर हमला करने के लिए स्पेन का सहयोग माँगा। स्पेन के इनकार करने पर नेपोलियन ने स्पेन पर भी चढ़ाई कर दी। उनके जनरलों द्वारा मिश्रित परिणाम दिए जाने पर नेपोलियन ने नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और स्पेनिश सेना को पराजित किया। उन्होंने मैड्रिड पर अधिकार कर लिया और फिर स्पेन के सहयोग के लिए भेजी गई ब्रिटिश सेना को भी पराजित किया। नेपोलियन ने अपने एक मार्शल और रिश्तेदार जोआचिम मुराट को नेपल्स के राजा और अपने भाई जोसेफ बोनापार्ट को स्पेन के राजा के रूप में स्थापित कर दिया।

❑

@BOOKHOUSE1

मैड्रिड का आत्मसमर्पण

राष्ट्रवाद और रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा प्रेरित तथा फ्रांसीसी सैनिकों की क्रूरता से नाराज स्पेनिशों ने विद्रोह कर दिया। उसी समय ऑस्ट्रिया ने अप्रत्याशित रूप से फ्रांस के साथ अपना गठबंधन तोड़ दिया। इसने नेपोलियन को डेन्यूब और जर्मन मोर्चों पर सैन्यबलों का कमांड ग्रहण करने के लिए विवश कर दिया। वियना के निकट एस्पर्न-एस्लिंग (21-22 मई, 1809) में एक भयावह युद्ध हुआ। दो माह के अंतराल के बाद मुख्य फ्रांसीसी और ऑस्ट्रियन सेनाओं ने एक बार फिर वियना के निकट एक-दूसरे का सामना किया और इसमें फ्रांस को विजय मिली। इसके बाद ऑस्ट्रिया और फ्रांस के बीच एक नई शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए। अगले वर्ष ऑस्ट्रियन आर्क्डचेस मैरी लुईस ने नेपोलियन से विवाह किया, इससे पहले जोसफिन से उनका तलाक हो चुका था।

रूस पर चढ़ाई

कांग्रेस ऑफ एरफर्ट का मुख्य उद्देश्य रूस-फ्रांसीसी गठबंधन को बनाए रखना रहा था, लेकिन 1811 तक दोनों देशों के बीच संबंध बहुत तनावपूर्ण हो गए। सन् 1807 में अपनी पहली मुलाकात के बाद से रूस के जार एलेक्जेंडर प्रथम और नेपोलियन के दोस्ताना व्यक्तिगत संबंध बन गए थे, लेकिन वे फ्रांस के साथ संबंध तोड़ने के लिए रूसी अभिजात तंत्र की ओर से गहरे दबाव में थे। उस संबंध का गिरावट की ओर जाने का पहला संकेत यह था कि रूस में महाद्वीपीय व्यवस्था के प्रयोग में ढील दिया जाना नेपोलियन को क्रोध दिला रहा था। सन् 1812 तक एलेक्जेंडर के सलाहकारों ने फ्रांसीसी साम्राज्य पर आक्रमण करने और पोलैंड पर फिर से कब्जा करने की योजना सुझाई। पोलैंड की सीमाओं पर बड़ी संख्या में सैन्य टुकड़ियाँ तैनात की गईं। रूस द्वारा युद्ध की तैयारियों की खबर मिलने पर नेपोलियन ने अपनी ग्रैंड आर्मी को लगभग 4,50,000-6,00,000 व्यक्तियों के विशाल बल तक विस्तृत करना शुरू कर दिया। विस्तृत रूसी इलाके पर हमला करने के खिलाफ नेपोलियन को बार-बार दी गई चेतावनी को पूरी तरह उपेक्षित कर दिया गया। उन्होंने एक आक्रामक अभियान के लिए अपनी सेनाओं को तैयार किया।

@BOOKHOUSE1

23 जून, 1812 को नेपोलियन ने रूस पर चढ़ाई शुरू की। पोलिश राष्ट्रवादियों और देशभक्तों से अधिक सहयोग प्राप्त करने के प्रयास में नेपोलियन ने उस युद्ध को 'दूसरे पोलिश युद्ध' (पहला पोलिश युद्ध रूस, पर्सिया और ऑस्ट्रिया से पोलैंड की आजादी का था) का नाम दिया। पोलिश देशभक्त विभाजित पोलैंड के रूसी हिस्से को ग्रैंड डची ऑफ वारसा में शामिल किए जाने और पोलैंड का एक नया राज्य बनाए जाने की इच्छा रखते थे, लेकिन नेपोलियन ने इससे इनकार कर दिया। उन्हें डर था कि इससे पर्सिया और ऑस्ट्रिया फ्रांस के खिलाफ युद्ध में उतर आएँगे। उन्होंने रूसी दासों को मुक्त करने के अनुरोधों को भी अस्वीकार कर दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि यह उनके पीछे एक रूढ़िवादी प्रतिक्रिया को प्रेरित कर सकता है।

नेपोलियन एक निर्णायक संघर्ष की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन मिखाइल बोगडानोविच बार्कले डि टॉली के नेतृत्व में रूसियों ने चतुराई से इसे टाल दिया। वे रूस में और अंदर की ओर लौट गए। स्मोलेन्स्क में प्रतिरोध का एक छोटा प्रयास किया गया (16-17 अगस्त), लेकिन इस क्षेत्र में युद्धों की एक श्रृंखला में रूसी हार गए। नेपोलियन ने आगे बढ़ना जारी रखा। अपनी रणनीतिक वापसी के दौरान रूसियों ने धन-संपदा को उजाड़ने का दाँव चला। उन्होंने फसलों को जला दिया और पशुओं को मार डाला, ताकि फ्रांसीसियों के पास खाने को कुछ न हो। भूख के

अतिरिक्त रूस की जानलेवा सर्दी फ्रांसीसी सैनिकों पर भारी पड़ रही थी। अपनी चढ़ाई के पहले आठ सप्ताह के दौरान ही अभियान की प्रमुख लड़ाई से पहले नेपोलियन की ग्रैंड आर्मी का प्रमुख हिस्सा आधा रह गया। यह ह्रस कुछ तो आपूर्ति केंद्रों की मोर्चाबंदी और कुछ रोगों, भाग जाने और हताहत होने की वजह से था। मुख्य लड़ाई से पहले हजारों सैनिक महत्त्वहीन और छोटी-मोटी लड़ाइयों में गँवा दिए गए। 7 सितंबर, 1812 को बोरोडिनो में नेपोलियन के पास 1,35,000 से अधिक सैनिक नहीं थे। कम-से-कम 30,000 लोग एक शत्रु इलाके में लगभग 600 मील अंदर एक छोटी और खूनी जीत प्राप्त करने में गँवा दिए गए। इसका नतीजा मास्को का उनके ऊपर संघर्षरहित कब्जा था।

लगातार पीछे हटने की अपनी अस्थायी रणनीति के लिए आलोचना के शिकार बार्कले की जगह कुतुजोव को लाया गया। कुतुजोव ने बार्कले की रणनीति को जारी रखा, लेकिन अंततः उन्होंने 7 सितंबर को मास्को से बाहर लड़ाई के लिए ललकारा। दोनों सेनाओं को बराबर क्षति हुई। रूसी पक्ष में हताहतों की संख्या थोड़ी अधिक थी। हालाँकि नेपोलियन पराजित नहीं हुए थे, लेकिन रूसी सेना भी डटी रही और उसने फ्रांसीसी सेनाओं का मुकाबला किया। इस युद्ध ने उन्हें वह निर्णायक जीत नहीं दिलाई जिसकी उन्हें उम्मीद थी। रूसी सेना पीछे हट गई और मास्को से पीछे चली गई।

अब नेपोलियन मास्को में प्रवेश करने में समर्थ थे और उनका अनुमान था कि मास्को की हार इस युद्ध को समाप्त कर देगी तथा एलेक्जेंडर प्रथम शांति समझौता कर लेंगे, लेकिन शहर के सैन्य पर्सियासक और कमांडर-इन-चीफ फियोदोर रोस्तोपचिन आत्मसमर्पण

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन की मास्को से वापसी

का अपमान सहने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने मास्को को जला देने के आदेश दिए। फ्रांस पर नियंत्रण खो देने के डर से नेपोलियन एक महीने के अंदर मास्को से वापस चले गए। इस वापसी से उन्हें और नुकसान हुआ। लगभग 6,50,000 फ्रंटलाइन सैनिकों के साथ अभियान शुरू करने वाले नेपोलियन की सेना में बेरेजिना नदी को पार करते हुए बचने के लिए (नवंबर, 1812 में) सिर्फ 40,000 लोग थे। इस अभियान में लगभग 4,00,000 रूसी हताहतों और लाखों नागरिक मौतों के मुकाबले फ्रांसीसियों को 5,70,000 सैनिकों की क्षति सहनी पड़ी।

❑

छठे गठबंधन की लड़ाई

सन् 1812-13 की सर्दियों के दौरान रूसी और फ्रांसीसी दोनों अपनी-अपनी विशाल क्षतियों से उबरने का प्रयास कर रहे थे। इस अवधि के दौरान युद्ध नहीं हुए, लेकिन पोलैंड में एक छोटी सी रूसी सेना ने फ्रांसीसी सैनिकों को परेशान करना जारी रखा। आखिरकार पोलैंड में मौजूद 30,000 सैनिक वहाँ से जर्मन राज्यों की ओर चले गए।

पोलैंड से की गई भर्तियों के साथ मिलकर नेपोलियन ने कुल 1,30,000 सैनिकों की सेना बना ली। यह सेना बढ़ती रही, क्योंकि नेपोलियन का ढाई लाख जर्मन सैनिकों के साथ कुल 4,00,000 फ्रांसीसी सैनिकों की सेना का लक्ष्य था।

रूस में नेपोलियन की क्षति से प्रोत्साहित होते हुए पर्सिया जल्दी ही उस गठबंधन में शामिल हो गया जिसमें अब रूस, यूनाइटेड किंगडम, स्पेन और पुर्तगाल थे। नेपोलियन ने जर्मनी में कमान सँभाली और जल्दी ही गठबंधन देशों पर पराजयों की झड़ी लगा दी। सबसे अधिक नुकसान ड्रेस्डन की लड़ाई में हुआ, जिसमें गठबंधन बलों के एक लाख से अधिक लोग मौत का शिकार हुए।

इन आरंभिक सफलताओं के बावजूद नेपोलियन के खिलाफ शत्रुओं की संख्या बढ़ती रही, क्योंकि स्वीडन और ऑस्ट्रिया भी गठबंधन में शामिल हो गए थे। आखिरकार लिपजिग में बैटल ऑफ नेशंस (16-19 अक्तूबर) में फ्रांसीसी सेना को अपने दुगने आकार के बलों द्वारा पराजय का सामना करना पड़ा। कुछ जर्मन राज्यों ने लड़ाई के मध्य ही पाला बदल लिया, जिससे फ्रांस की स्थिति और कमजोर हो गई। यह नेपोलियनिक युद्धों में से सबसे लंबा युद्ध था। इसमें दोनों पक्षों में कुल मिलाकर 1,20,000 लोग हताहत हुए।

@BOOKHOUSE1

इसके बाद नेपोलियन क्रमबद्ध रूप से वापस फ्रांस लौट गए, लेकिन उनकी सेना अब पाँच लाख गठबंधन सैनिकों के मुकाबले 1,00,000 से भी कम रह गई थी। अब फ्रांसीसी चारों ओर से घिरे हुए थे। ब्रिटिश सेनाएँ दक्षिण से दबाव डाल रही थीं, जबकि गठबंधन बल जर्मन राज्यों से अंदर आ रहे थे। फ्रांसीसी सेनाएँ अब एक अपरिहार्य पराजय को कुछ दिनों के लिए टाल सकती थीं।

एल्बा में निर्वासन, लेस सेंट-जोर्स (सौ दिन)

31 मार्च, 1814 को पेरिस पर कब्जा कर लिया गया। नेपोलियन ने अपने पुत्र के पक्ष में 6 अप्रैल को पद छोड़ दिया, लेकिन गठबंधन देशों ने बिना शर्त आत्मसमर्पण की माँग की और फिर से 11 अप्रैल को नेपोलियन ने बिना शर्त पद छोड़ दिया। फाउंटेनब्ल्यू की संधि में विजेताओं ने उन्हें निर्वासित करके भूमध्य सागर में एक छोटे से द्वीप एल्बा पर भेज दिया।

नेपोलियन के निर्वासन में सेंट हेलेना

फ्रांस में एक बार फिर राजतंत्रवादियों ने सत्ता पर अधिकार कर लिया था और किंग लुईस अठारहवें को गद्दी

सौंपी गई। नेपोलियन अपनी पत्नी और पुत्र से अलग हो चुके थे। वे ऑस्ट्रियन नियंत्रण में आ गए थे और फाउंटेनब्ल्यू की संधि में उनके लिए निर्धारित भत्ते से भी उन्हें वंचित कर दिया गया। इसके अलावा ऐसी अफवाहें थीं कि उन्हें देशनिकाला देकर अटलांटिक के एक दूरस्थ द्वीप पर भेजा जा रहा है। 26 फरवरी, 1815 को नेपोलियन एल्बा से बच निकले और 1 मार्च, 1815 को मुख्यभूमि पर पहुँच गए।

किंग लुईस अठारहवें ने 7 मार्च, 1815 को ग्रेनोबल में उनसे मिलने के लिए मार्शल माइकल के नेतृत्व में पाँचवीं रेजीमेंट भेजी। मार्शल माइकल पहले रूस में नेपोलियन के नेतृत्व में काम कर चुके थे। नेपोलियन अकेले रेजीमेंट पहुँचे। वे घोड़े से उतरे और जब वे सेनाओं के बिलकुल नजदीक पहुँच गए तो चिल्लाए, ''पंचम के सैनिको, तुम मुझे पहचानते हो। यदि कोई व्यक्ति अपने सम्राट् को गोली मार सकता हो तो वह अभी ऐसा कर सकता है।''

कुछ देर के मौन के बाद सैनिकों ने नारा लगाया, 'विव एल' एंपरेयर!' (सम्राट् दीर्घजीवी हों) और वे नेपोलियन के साथ पेरिस के लिए कूच कर गए। वे 20 मार्च को पेरिस पहुँचे और तुरंत 1,40,000 सैनिकों की नियमित सेना और लगभग 2,00,000 सैनिकों का एक स्वयंसेवक बल गठित कर लिया। वहाँ उन्होंने सौ दिनों तक शासन किया।

❑

@BOOKHOUSE1

वाटरलू की लड़ाई

18 जून, 1815 को लड़ी गई वाटरलू की लड़ाई नेपोलियन बोनापार्ट की आखिरी लड़ाई थी। एल्बा में अपने निर्वासन के बाद उन्होंने सौ दिनों के लिए फ्रांस की गद्दी पर फिर से अधिकार कर लिया था। इस दौरान यूनाइटेड किंगडम के ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और पर्सिया के गेबार्ड वॉन ब्लूशर के नेतृत्व में शेष यूरोप की सेनाएँ मिलकर उन पर टूट पड़ीं। नेपोलियन के पेरिस पहुँचने से छह दिन पहले 13 मार्च को वियना की कांग्रेस ने उन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया। चार दिन बाद यूनाइटेड किंगडम, रूस, ऑस्ट्रिया और पर्सिया ने साथ मिलकर 1,50,000 लोगों की सेना तैयार की और उनके शासन का अंत करने के लिए सहमत हुए। उनमें से एक या अधिक बलों को फ्रांस पर चढ़ाई करने से रोकने के नेपोलियन के प्रयास विफल हो गए। वे जानते थे कि गठबंधन देशों द्वारा साथ मिलकर जोरदार ताकत के इस्तेमाल से पहले हमला करना सत्ता में रहने का उनका एकमात्र तरीका है।

यदि वे विद्यमान गठबंधन बलों को सशक्त होने से पहले बैल्जियम में नष्ट कर सकते तो वे अंग्रेजों को वापस समुद्र की ओर भेजने और पर्सिया को युद्ध से बाहर करने में सफल हो सकते थे। नेपोलियन ने दो सेनाएँ, उत्तरी सेना (ए.ओ.टी.एन.) और रिजर्व सेना (आर.ए.) बैल्जियम की सीमा पर भेजीं। रिजर्व और सेना की दाहिनी शाखाओं को स्वयं सँभालते हुए उन्होंने 16 जून, 1815 को लिगनी की लड़ाई में जनरल ब्लूशर के नेतृत्व में पर्सिया पर हमला किया। मार्शल के नेतृत्व में सेना की बाईं शाखा ने क्वात्रे ब्रास के क्रॉसरोड्स पर निवेल्स-नेमुर रोड को अवरुद्ध कर दिया, ताकि वेलिंगटन के नियंत्रण में एंग्लो-गठबंधन बल पर्सिया की मदद के लिए न जा सकें। फ्रांसीसी सेना की शाखा ने उसी दिन वेलिंगटन की सेनाओं को क्वात्रे ब्रास की लड़ाई में उलझाए रखा, जबकि नेपोलियन पर्सिया से लड़

@BOOKHOUSE1

ड्यूक वेलिंगटन

रहे थे। उस दिन की लड़ाइयों का परिणाम यह रहा कि क्वात्रे ब्रास ने वेलिंगटन की सेनाओं को ब्लूशर के नेतृत्व में पर्सिया की मदद के लिए जाने से रोक दिया। यह अधिक विशाल गठबंधन सेना को टुकड़ों में बाँटने की नेपोलियन की रणनीति थी, ताकि वे अलग से उन पर आक्रमण करके उन्हें नुकसान पहुँचा सकें।

पर्सियन सेना के पीछे हटने से वह वेव्र शहर में पहुँच गई थी और यह सहज रूप में सेना का विन्यास बिंदु बन गया। पर्सियन चीफ ऑफ स्टाफ जनरल ऑगस्ट वॉन ग्नेसेनाउ ने पर्सियन सेना को टिल्ली तक ले जाने की योजना बनाई, जहाँ से सेना वेलिंगटन की सहायता के लिए जा सकती थी, लेकिन सेना के एक हिस्से के राइन की ओर पीछे हटने और उसके अधिकांश हिस्से के वेव्र की ओर वापस जाने की वजह से नियंत्रण छूट गया था। यहाँ ग्नेसेनाउ ने वेलिंगटन की बाईं ओर पहुँचने का फैसला किया। उन्होंने पहली, दूसरी और चौथी कोर के साथ भोर में चलना शुरू किया। जनरल बुलो वॉन डेनविट्ज की अगुआई में दूसरी कोर लिगनी में उपस्थित नहीं थी, लेकिन बाद में 17 और 18 मार्च की रात के समय पहुँच गई।

17 मार्च को नेपोलियन के अधीनस्थ मार्शल ग्राउची 30,000 लोगों की सेना के साथ पर्सिया पर हमला करने के आदेश का इंतजार कर रहे थे। नेपोलियन ने आदेश देने में देर लगाई, इसलिए ग्राउची ने यह अभियान देर से शुरू किया। यह विलंब नेपोलियन की पराजय का आखिरी कारण था। पर्सिया की सेना के मुख्य भाग की पहचान में मूल्यवान समय नष्ट हो गया। सेना को वेव्र पहुँचने से रोकने में काफी देर हो चुकी थी, जहाँ से वह वेलिंगटन की सहायता के लिए जा सकती थी।

18 मार्च को उत्तरी सेना की दाहिनी शाखा के साथ नेपोलियन ने वेव्र की लड़ाई में लेफ्टिनेंट जनरल बैरन जोहान वॉन थेलमन के नेतृत्व में पर्सिया की पिछली रक्षक सेना से मुकाबला किया। लिगनी में पर्सिया की हार के बाद क्वात्रे ब्रास में वेलिंगटन की स्थिति कमजोर हो गई थी। 17 मार्च के तूफानी आक्रमण के दौरान वेलिंगटन अपनी सेना को पीछे हटाते हुए वाटरलू के अपने मुख्यालय से लगभग एक मील दक्षिण में मोंट सेंट जीन पर पहले से खोजी गई पहाड़ी तक ले आए। मार्शलनेय के नेतृत्व में फ्रांसीसी उत्तरी सेना ने उनका पीछा किया। नेपोलियन पूर्व नियोजित रणनीति के अनुसार मार्शल नेय से आ मिले।

इस लड़ाई में 73,000 फ्रांसीसी सैनिक शामिल थे; जबकि गठबंधन सेना में लगभग 67,000 सैनिक थे। ढाई पर्सियन सैन्य कोर इस लड़ाई में शामिल थी, जिसने पूरी तरह शामिल पर्सियनों की संख्या को 48,000 तक पहुँचा दिया।

वाटरलू में वेलिंगटन के पास अपने दाहिनी शाखा के लिए बेस के रूप में मजबूत होजोमोंट फार्म था और उनकी बाईं ओर कई अन्य फार्म थे। अभी युद्ध शुरू भी नहीं हुआ था कि नेपोलियन को अपनी पहली बड़ी समस्या से रूबरू होना पड़ा। दो दिन पहले लिगनी से पर्सिया की सेना के भागने के बाद से उसकी स्थिति के बारे में अनिश्चित नेपोलियन को वेलिंगटन की सेनाओं पर हमला बोलने की आवश्यकता लग रही थी।

@BOOKHOUSE1

लड़ाई होजोमोंट पर एक आक्रमण के साथ लगभग 10 बजे शुरू हुई, लेकिन मुख्य हमले को घंटों विलंबित कर दिया गया, जब तक कि पिछली रात की वर्षा से गीली जमीन फ्रांसीसी सैनिकों का भार उठाने के लिए पर्याप्त रूप से सूख नहीं गई। कीचड़ ने पैदल सेना और घुड़सवार सेना को भी मोर्चा सँभालने में बाधित किया।

आखिरकार फ्रांसीसी तोपखाने ने लगभग 11.35 बजे वेलिंगटन की पहाड़ी की ओर गोलियाँ बरसाईं, लेकिन गठबंधन सेना पर उसका प्रत्याशित प्रभाव नरम जमीन की वजह से कम हो गया जिसने तोप के कई गोलों के प्रभाव को सोख लिया। इसके अतिरिक्त वेलिंगटन ने चतुराई से अधिकांश गठबंधन सेना को पहाड़ी रेखा के पीछे लगाया, ताकि सेना को गोलीबारी से बचाया जा सके। फ्रांसीसी युद्ध रणनीति का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व यह उम्मीद थी कि वेलिंगटन होजोमोंट की सुरक्षा के लिए अपने रिजर्व बलों को अपने दाहिनी ओर लगाएँगे। एक समय फ्रांसीसी भगाए जाने से पहले फार्म के आँगन में घुसने में सफल हो गए थे, लेकिन फार्म पर उनके हमले आखिरकार विफल हो गए और वेलिंगटन को अपनी रिजर्व सेनाओं के इस्तेमाल की जरूरत नहीं पड़ी। होजोमोंट एक युद्ध के अंदर युद्ध बन गया और उस पूरे दिन उसकी सुरक्षा ने हजारों मूल्यवान फ्रांसीसी सैनिकों को अपनी ओर खींचा, जबकि कुछ को छोड़कर वेलिंगटन की रिजर्व सेनाएँ उसके केंद्र में रहीं।

ड्यूक वेलिंगटन की सेना

दोपहर लगभग 1.30 बजे अपने दाहिनी ओर पर्सियनों के पहुँचने की खबर मिलने के बाद नेपोलियन ने मार्शलनेय को आगे फार्म ला हाये सेंट के पूर्व की ओर वेलिंगटन के सेंटर लेफ्ट से लड़ने के लिए डि' एर्लन की पैदल सेना को भेजने के आदेश दिए। डच प्रथम ब्रिगेड पर केंद्रित यह हमला मेजर जनरल विलियम फ्रेडरिक वॉन बाइलैंट के नेतृत्व में किया गया। तोपों की जोरदार गोलीबारी से जूझने और लगभग नौ मिनट तक डि एर्लन के प्रमुख तत्त्वों से गोलियों की बौछारों के आदान-प्रदान के बाद वॉन बाइलैंट के सैनिक पहाड़ी पर वापस जाने और जनरल थॉमस पिक्टन की डिविजन से होकर लौटने के लिए विवश हो गए। पिक्टन की डिविजन डि एर्लन से मुकाबला करने के लिए पहाड़ी रेखा की ओर बढ़ी। ब्रिटिश सेना को भी गोलियों की बौछारों और नजदीकी हमलों से नुकसान हुआ, लेकिन पिक्टन के सैनिक अड़े रहे।

पैदल सेना के आक्रमण के अतिरिक्त सहयोग के लिए घुड़सवार सेनाओं को मोर्चा सँभालने के आदेश दिए गए। इसके बाद स्कॉट ग्रेज के प्रसिद्ध हमले में अक्सब्रिज के नेतृत्व में भारी ब्रिटिश घुड़सवार सेना द्वारा फ्रांसीसी हमले को विफल कर दिया गया। घुड़सवार हमले ने डि एर्लन के सैन्य दल को नष्ट कर दिया, लेकिन लौटने के बजाय उन्होंने फ्रांसीसी तोपों पर हमला जारी रखा। फ्रांसीसी सेना ने प्रत्याक्रमण किया। संयुक्त ब्रिगेड का नेतृत्व कर रहे मेजर जनरल विलियम पॉनसोनबाइ मारे गए। उनकी मौत सेना के लिए एक बड़ी क्षति थी।

इस बीच पर्सियन मैदान पर नजर आने लगे। नेपोलियन ने उन्हें पीछे हटाने के लिए अपनी रिजर्व सेना लोबू के छठे कोर और दो सैन्य डिविजन (लगभग 15,000 सैनिक) भेजे। इसके साथ नेपोलियन ने गार्ड को छोड़कर अपनी सभी पैदल रिजर्व सेनाओं को लगा दिया था। नेपोलियन लड़ाई के इस चरण पर गार्ड को लगाने के अनिच्छुक थे। पैदल रिजर्व के अभाव में वे बस यही कर सकते थे कि अपनी घुड़सवार सेना से वेलिंगटन के केंद्र को तोड़ने का प्रयास करें। उन्हें वेलिंगटन के केंद्र के सामने पहुँचने के लिए चढ़ाई करने में संघर्ष करना पड़ा, जहाँ गठबंधन पैदल सेना का वर्ग व्यूह उनका इंतजार कर रहा था। घुड़सवार सेना के आक्रमणों को बार-बार मजबूत गठबंधन पैदल वर्ग व्यूहों, ब्रिटिश तोपखाने के गोलों की बौछारों और गठबंधन लाइट केवेलरी रेजीमेंटों तथा नीदरलैंड्स हैवी केवेलरी ब्रिगेड के निर्णायक प्रत्याक्रमणों द्वारा व्यर्थ कर दिया गया। पहाड़ी पर निष्फल हमलों के बाद फ्रांसीसी घुड़सवार सेना थककर चूर हो गई।

जब पर्सियन सेना इंपीरियल सेना के दाहिनी भाग से लड़ रही थी, तब ला हाये सेंट फ्रांसीसियों के कब्जे में चला गया। उसकी रक्षा कर रही राजा की जर्मन लिजन की फौज के पास शाम को गोला-बारूद की कमी हो गई। पर्सियन ने लोबू को प्लेंसनोइट से बाहर खदेड़ दिया था, जो रणभूमि के बिलकुल (गठबंधन) बाएँ में था।

इसके बाद नेपोलियन ने अपने 10 बटालियन मजबूत यंग गार्ड को पर्सियनों को हराने के लिए भेजा। भयंकर लड़ाई के बाद यंग गार्ड को वापस खदेड़ दिया गया, फिर नेपोलियन ने ओल्ड गार्ड की दो बटालियनें भेजीं। भीषण युद्ध के बाद उन्होंने पर्सियनों को बाहर खदेड़ दिया, लेकिन उन्हें बहुत दूर तक नहीं भगाया जा सका। लगभग 30,000 पर्सियनों ने फिर से प्लेंसनोइट पर हमला कर दिया। वहाँ 20,000 फ्रांसीसी गाँव के अंदर और चारों ओर रक्षा कर रहे थे। ओल्ड गार्ड और अन्य सहयोगी सेनाएँ लगभग एक घंटे तक टिके रहने

@BOOKHOUSE1

में सफल रहीं, जिसके बाद पर्सियन के भारी प्रत्याक्रमण ने उन्हें बाहर खदेड़ दिया। सबसे अंत में ओल्ड गार्ड भागे, जो चर्च और कब्रगाह की रक्षा कर रहे थे। दिन के अंत तक फ्रांसीसियों को भारी नुकसान हो चुका था।

फ्रांसीसियों द्वारा ला हाये सेंट पर कब्जे की वजह से वेलिंगटन के केंद्र के कमजोर होने के साथ ही नेपोलियन ने अपनी आखिरी रिजर्व सेना दुर्जेय इंपीरियल गार्ड को युद्ध में लगा दिया। भारी गोलीबारी के बीच से आगे निकलते हुए पहले से संख्या में कम हो चुकी मिडल गार्ड की 5 बटालियनों ने ब्रिटिश, ब्रन्सविक और नासो टुकड़ियों सहित गठबंधन सेना की प्रथम पंक्ति को हरा दिया। इसी बीच जनरल वॉन जीथेन की पहली पर्सियन सैन्य कोर के कुछ अंग आखिरकार वहाँ वेलिंगटन की बाईं सेना पर से दबाव कम करने में मदद करने पहुँच गए थे, इससे वेलिंगटन को अपने कमजोर केंद्र को मजबूत करने का मौका मिल गया।

फ्रांसीसी गार्ड बटालियन आगे बढ़ती रही और स्थिति संकटपूर्ण हो गई। चास की नीदरलैंड्स डिविजन को आगे की ओर भेजा गया। चास ने फ्रांसीसियों का आगे बढ़ना रोकने के लिए अपनी आर्टिलरी को आगे भेजा। उनकी गोलीबारी विजेता ग्रेनेडियरों को बगल तक ले गई। इससे भी गार्ड बटालियन का आगे बढ़ना नहीं रुका, इसलिए चास ने अपनी पहली ब्रिगेड को फ्रांसीसियों पर हमला करने का आदेश दिया।

इसी बीच पश्चिम की ओर मेटलैंड के नेतृत्व में 1,500 ब्रिटिश गार्ड अपने आपको फ्रांसीसी तोपों से बचाने के लिए लेटे हुए थे। वे एक साथ उठे और उन्होंने प्वाइंट ब्लैंक रेंज से गोलियाँ बरसाते हुए इंपीरियल गार्ड को भौंचक्का कर दिया। गोलीबारी का जवाब देने के लिए फ्रांसीसी घुड़सवार सेना फैल गई। 10 मिनट तक गोलियों के आदान-प्रदान के बाद संख्या में कम हो चुके फ्रांसीसियों ने डगमगाना शुरू कर दिया। यह संगीनों के हमले के लिए संकेत था, लेकिन फिर एक नई फ्रांसीसी शासर बटालियन सामने आई। ब्रिटिश गार्ड पीछे हट गए और फ्रांसीसियों ने उनका पीछा किया। इंपीरियल गार्ड अव्यवस्था और भगदड़ में छितरा गए। फ्रांसीसी पंक्तियों में आतंक की लहर दौड़ गई। वेलिंगटन ने बिलकुल सही अनुमान लगाया था कि इंपीरियल गार्ड द्वारा पीछे हटना, उसे देखने वाले सभी फ्रांसीसी सैनिकों का मनोबल तोड़ देगा, इसलिए वह कोपेनहेगेन (उनका पसंदीदा घोड़ा) पर सवार हुए और अपना हैट लहराया जो एक जनरल के आगे बढ़ने का संकेत था। लंबे समय से लड़ते हुए थक चुकी एंग्लो-गठबंधन पैदल सेना अपनी पंक्तियों से आगे की ओर बढ़ी और वापस लौटते फ्रांसीसियों पर टूट पड़ी।

गठबंधन केंद्र पर असफल हमले के बाद फ्रांसीसी इंपीरियल गार्ड ने ब्रिटिश के खिलाफ एक आखिरी लड़ाई के लिए ला हाये सेंट के दक्षिण में अपनी तीन बटालियनों के रिजर्व बलों को एकत्रित किया। लेफ्टिनेंट जनरल सर हेनरी क्लिंटन के नेतृत्व में दूसरी एंग्लो-गठबंधन डिविजन में जनरल एडम की बिग्रेड और 5वीं ब्रिगेड के एक हिस्से की ओर से किए गए हमले ने उन्हें भ्रम की स्थिति में डाल दिया। अर्ध संगठित इकाइयों में बच गए सैनिक लड़ते हुए ला बेल एलायंस की ओर लौटने लगे। इसी दौरान कर्नल ह्यू हाल्केट ने जनरल कैंब्रोन का आत्मसमर्पण करवाया। ऐसा ला हाये सेंट के आस-पास के क्षेत्र से ला बेले एलायंस की ओर वापस लौट रहे एक अर्ध संगठित वर्ग व्यूह के विनाश के दौरान हुआ।

जिस समय इंपीरियल गार्ड को वापस खदेड़ा जा रहा था, उसी समय पर्सियनों ने आखिरकार फ्रांसीसियों को प्लेंसनोइट गाँव से बाहर खदेड़ दिया। जीथेन के सैनिक डि एर्लन और लोबू के बीच की जगह में घुस गए और पीछे से फ्रांसीसियों की जगह ले ली। प्लेंसनोइट के कब्जे के बाद पूरा फ्रांसीसी मोर्चा एंग्लो-गठबंधन सेना और पर्सियनों के आगे बढ़ने के साथ बिखरना शुरू हो गया। आखिरी संगठित फ्रांसीसी सेना में ला बेल एलायंस नामक

सराय के पास मौजूद ओल्ड गार्ड की दो बटालियनें शामिल थीं। यह आखिरी रिजर्व सेना थी और नेपोलियन का एक व्यक्तिगत बॉडीगार्ड उसमें शामिल था। नेपोलियन ने उम्मीद की थी कि यदि वे दृढ़ रहे तो फ्रांसीसी सेना उनके पीछे आ सकती है, लेकिन जब यह वापसी एक भगदड़ में बदल गई तो वे गठबंधन घुड़सवार सेना से बचाव के लिए वर्ग व्यूह बनाने के लिए मजबूर हो गए। उन्होंने ला बेल एलायंस के दोनों ओर एक-एक कुल मिलाकर दो वर्ग व्यूह बनाए।

नेपोलियन ने वर्ग व्यूह का नेतृत्व किया, जो इनके (सराय) दाहिनी ओर उभरी हुई जमीन पर बनाए गए थे। उन्होंने ऐसा करना जारी रखा, जब तक कि उन्हें इस बात का भरोसा नहीं दिला दिया गया कि वे लड़ाई हार चुके हैं और उन्हें वहाँ से वापस लौट जाना चाहिए। पर्सियनों ने वर्ग व्यूह को बाईं ओर से उलझाया और जनरल एडम्स ब्रिगेड ने दाहिनी ओर से वर्ग व्यूह पर हमला किया। अँधेरा होने के साथ ही दोनों वर्ग व्यूह रणभूमि से अपेक्षाकृत व्यवस्थित क्रम में फ्रांस की ओर वापस लौटने लगे, लेकिन दुर्भाग्यवश फ्रांसीसी तोपखाना और उनकी बाकी हर चीज अंग्रेजों और पर्सियनों के हाथ पड़ गई। पीछे लौट रहे गार्ड हजारों भागते फ्रांसीसियों से घिर गए, जो अब किसी संगठित इकाई का अंग नहीं थे। ब्रिटिश और गठबंधन घुड़सवार सेना ने रात्रि लगभग 11.00 बजे तक भागते फ्रांसीसियों का पीछा किया। जनरल जॉन ग्नेसेनाउ के नेतृत्व में पर्सियनों ने रात भर उनका पीछा किया।

18 जून, 1815 को ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और गेबार्ड लेबेरेश्त वॉन ब्लूशर के हाथों वाटरलू की लड़ाई में नेपोलियन की आखिरी हार हुई। रात्रि लगभग 9.00 बजे वेलिंगटन और ब्लूशर की मुलाकात हुई, जिसका अर्थ था कि लड़ाई खत्म हो चुकी थी।

@BOOKHOUSE1

वॉन ब्लूशर

वाटरलू में एंग्लो-गठबंधन बलों के लगभग 15,000 सैनिक मारे गए और घायल हुए। पर्सियनों को कुल मिलाकर 7,000 सैनिकों का नुकसान हुआ। नेपोलियन की सेना में मृत और घायलों की संख्या 25,000 थी। उनके 8,000 सैनिकों को बंदी बना लिया गया।

वाटरलू में फ्रांसीसी हार और वेन्न की लड़ाई में नेपोलियनिक युद्धों की आखिरी लड़ाई के बाद नेपालियन को गद्दी से उतार दिया गया और वे कुछ समय के लिए फरार रहे। 15 जुलाई, 1815 को अंतत: उन्होंने रॉकफोर्ट बंदरगाह पर खड़े एच.एम.एस. बेलरोफन जहाज पर औपचारिक रूप से ब्रिटिशों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

इसके बाद उन्हें निर्वासित करके सेंट हेलेना भेज दिया गया, जहाँ सन् 1821 में उनकी मृत्यु हो गई।

❑

सेंट हेलेना पर निर्वासन और मृत्यु

नेपोलियन को बंदी बना लिया गया और फिर 15 अक्तूबर, 1815 में निर्वासित करके उन्हें सेंट हेलेना द्वीप भेज दिया गया। अपने कुछ सहयोगियों के साथ वहाँ रहने के दौरान उन्होंने अपने संस्मरण लिखवाए और खुद को गिरफ्तार करने वालों की आलोचना की। सेंट हेलेना में रहने के दौरान अधिकांश समय बीमार रहे नेपोलियन की 5 मई, 1821 को मृत्यु हो गई। उनके अंतिम शब्द थे, 'फ्रांस, सेना, सैन्य प्रमुख, जोसफिन।' उनकी विरासत को जनरल मारबोट जैसे उनके निकट सहयोगियों में बाँट दिया गया। उन्होंने जनरल मारबोट को 'ग्रैड्यूर द ला फ्रांस' पर अपना लेखन जारी रखने को कहा था। नेपोलियन ने अपनी वसीयत में सियेन के तट पर दफनाए जाने की इच्छा जाहिर की थी, लेकिन उन्हें सेंट हेलेना में दफनाया गया। सन् 1840 में उनके अवशेषों को फ्रांस में फ्रिजेट बेल-पॉल ले जाया गया और लेस इनवेलीड्स, पेरिस में दफना दिया गया। उस समय से लाखों लोग उनके मकबरे को देखने जा चुके हैं।

मृत्यु का कारण

कई अवसरों पर नेपोलियन की मृत्यु का कारण विवाद का विषय बना है और यह विवाद अब तक जारी है। नेपोलियन के व्यक्तिगत चिकित्सक फ्रांसिस्को एंटोमारची ने मृत्यु प्रमाणपत्र में पेट के कैंसर को नेपोलियन की मृत्यु की वजह बताई। सन् 1955 में नेपोलियन के अनुचर लुईस मार्चंड की डायरियाँ प्रकाशित हुईं। उन्होंने मृत्यु से पहले के कुछ महीनों में नेपोलियन का वर्णन किया है। उनके वर्णन ने बहुत सारे लोगों को यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित किया कि उन्हें आर्सेनिक (सँखिया) जहर देकर मारा गया था। उस समय कभी-कभार आर्सेनिक को जहर देने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, क्योंकि इसे लंबे समय तक दिए जाने पर उसका पता नहीं चलता था। आर्सेनिक को वालपेपर में और यहाँ तक कि कुछ पेटेंट औषधियों में भी इस्तेमाल किया जाता था। इससे उनके शव के कथित परिरक्षण को समझा जा सकता है। सन् 2001 में फ्रांस के स्ट्रासबर्ग फोरेंसिक इंस्टीट्यूट के पास्कल किंट्ज ने नेपोलियन की मौत के बाद संरक्षित नेपोलियन के बालों के एक गुच्छे की जाँच में पाए गए आर्सेनिक लेवल के एक अध्ययन से इन दावों को और बल दिया। यह लेवल सामान्य के मुकाबले सात से अड़तीस गुना तक अधिक था।

@BOOKHOUSE1

बालों को छोटे भागों में काटना और हर भाग का अलग से विश्लेषण करना शरीर में आर्सेनिक संकेंद्रण का एक हिस्टोग्राम उपलब्ध कराता है। नेपोलियन के बालों का यह विश्लेषण बताता है कि बीच-बीच में बड़ी डोज ली गई, लेकिन वह घातक नहीं थी। आर्सेनिक ने नेपोलियन को बहुत कमजोर कर दिया और वह उनके शरीर में बस गया।

हाल के विश्लेषण बताते हैं कि सन् 1805, 1814 और 1821 में लिए गए सैंपलों में नेपोलियन के बालों में आर्सेनिक के इसी प्रकार के संकेंद्रण पाए गए। पेरिस पुलिस में टॉक्सीकोलॉजी के प्रमुख मुख्य जाँचकर्ता इवान रिकार्डेट ने कहा कि यदि आर्सेनिक उनकी मृत्यु का कारण होता तो वे कई वर्ष पहले मृत्यु का शिकार हो जाते। ग्रुप ने अनुमान लगाया कि इस मामले में आर्सेनिक का सबसे संभाव्य स्रोत कोई हेयर टॉनिक हो सकता था। एंटीबायोटिक्स की खोज से पहले आर्सेनिक सिफिल्स के लिए भी व्यापक तौर पर इस्तेमाल होने वाला, अप्रभावी उपचार था। इससे यह अनुमान लगाया गया कि नेपोलियन उस रोग से पीड़ित हो सकते थे।

नेपोलियन के डॉक्टरों द्वारा किए गए उनके उपचार में उनकी मृत्यु से तत्काल पहले उनकी आँतों को साफ

करने के लिए एंटीमॉनी पोटेशियम टारट्रेट, नियमित एनीमा और मर्करिक क्लोराइड की एक 600 मिग्रा डोज के साथ उनकी चिकित्सा शामिल थी। सैन फ्रांसिस्को मेडिकल जाँचकर्ता विभाग के शोधकर्ताओं के एक समूह का अनुमान है कि इस उपचार की वजह से नेपोलियन को पोटेशियम की गंभीर

सेंट हेलेना द्वीप पर नेपोलियन की मौत

कमी हो गई होगी, जिसके कारण उनकी मौत हो गई होगी।

मई, 2005 में स्विस चिकित्सकों की एक टीम ने दावा किया कि नेपोलियन की मौत पेट के कैंसर की वजह से हुई, जो उनके पिता की भी मृत्यु का कारण था। अनेक फोरेंसिक रिपोर्टों से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि अपनी मृत्यु के समय नेपोलियन लगभग 76 कि.ग्रा. वजन के थे, जबकि एक वर्ष पहले उनका वजन लगभग 91 कि.ग्रा. था, जो एंटोमार्शी द्वारा दिए गए ऑटोप्सी परिणाम को पुष्ट करता है।

प्रो. बियोंडी की अगुवाई में मोंटेर्सपेरटोली विश्वविद्यालय के फिजिशियनों की एक टीम ने हाल में इसकी पुष्टि की है। अक्तूबर 2005 में स्कॉटलैंड में एक दस्तावेज मिला, जिसमें ऑटोप्सी का वर्णन था, जो फिर एंटोमार्शी के निष्कर्ष को पुष्ट करता प्रतीत होता है।

❑

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन : व्यक्ति के रूप में

विवाह

नेपोलियन ने पहली बार 9 मार्च, 1796 को जोसफिन द ब्यूहरनैस से विवाह किया। उन्होंने सत्ता हासिल करने के बाद औपचारिक रूप से जोसफिन के पुत्र यूगीन और कजिन स्टीफेनी को अपना लिया, ताकि उनके लिए 'शाही' विवाह की व्यवस्था हो सके। उन्होंने जोसफिन की बेटी होरटेंस की अपने भाई लुईस से शादी करवा दी। हालाँकि नेपोलियन और जोसफिन का विवाह गैर-पारंपरिक था और दोनों अपने कई प्रेम संबंधों के लिए जाने जाते हैं, लेकिन वे एक-दूसरे के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। जोसफिन तलाक के लिए तैयार हो

जोसफिन पत्नी के साथ नेपोलियन

गईं, ताकि वे उत्तराधिकारी प्राप्त करने की उम्मीद में दूसरा विवाह कर सकें। यह दोनों के लिए बहुत दुखदायी था। वह नेपोलियनिक कोड के तहत पहला कानूनी तलाक भी था।

11 मार्च, 1810 को नेपोलियन ने ऑस्ट्रिया की आर्कडचेस मैरी लुईस से पहले प्रतिनिधि द्वारा और फिर 1 अप्रैल को लुव्र के चर्च में एक औपचारिक समारोह में विवाह किया। वे एक वैध उत्तराधिकारी का पिता बनते हुए अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना चाहते थे। 20 मार्च, 1811 को मैरी लुईस ने एक पुत्र नेपोलियन फ्रांकोइस जोसेफ चार्ल्स बोनापार्ट को जन्म दिया। हालाँकि वे उनके निर्वासन के समय उनके साथ नहीं गईं।

@BOOKHOUSE1

युद्ध कौशल

नेपोलियन को यूरोप में आधुनिक पेशेवर अनिवार्य सेना की अवधारणा लाने का श्रेय दिया जाता है। यह एक नई चीज थी जिसका बाद में अन्य राष्ट्रों ने अनुसरण किया। उन्होंने फ्रांसीसी सैन्य प्रणाली में बहुत नए प्रयोग नहीं किए, लेकिन पिछले सिद्धांतवादियों और पूर्व फ्रांसीसी सरकारों से मुक्त हस्त से ग्रहण किया। हालाँकि उन्होंने पहले से मौजूद चीजों का विस्तार या विकास किया। सबसे बड़ी सैन्य इकाइयों के रूप में डिविजनों की जगह कोर आ गए। आर्टिलरी को रिजर्व तोपखानों में एकीकृत किया गया। स्टाफ प्रणाली अधिक अस्थायी हो गई और घुड़सवार सेना फिर से फ्रांसीसी सैन्य सिद्धांत में एक महत्त्वपूर्ण संगठन बन गई।

सैन्य क्षेत्र में नेपोलियन का सबसे बड़ा प्रभाव युद्ध के संचालन में रहा। क्रांतिकारी और नेपोलियनिक कालों के दौरान शस्त्र और प्रौद्योगिकी बड़े पैमाने पर स्थिर रही, लेकिन 18वीं सदी की संचालन संबंधी रणनीति में व्यापक पुनर्गठन हुआ। घेरा डालना बहुत कम, लगभग महत्त्वहीनता के बिंदु पर पहुँच गया। शत्रु सेनाओं को केवल मात देने की नहीं, बल्कि उनके विनाश की एक नई नीति उभरी। शत्रु के इलाके पर चढ़ाई विस्तृत मोर्चों पर होती थी। इस प्रकार रणनीतिक अवसरों की प्रचुरता आई, जिसने युद्धों को अधिक महँगा और अधिक निर्णायक बना दिया। किसी यूरोपीय शक्ति के लिए हार का मतलब अब सिर्फ अलग-थलग पड़े इलाकों को खोने से कहीं अधिक था। इस बात पर बहस की जा सकती है कि नेपोलियन की आरंभिक सफलता ने उनके पतन के बीज बोए। 18वीं सदी

की अपरिवर्तित सत्ता प्रणाली में ऐसी विनाशकारी पराजयों की आदत न होने की वजह से बहुत से देशों ने फ्रांसीसी प्रभाव के तहत अपने अस्तित्व को मुश्किल में पाया। इसने विद्रोहों, युद्धों और सामान्य अस्थिरता को प्रेरित किया, जो 1815 तक महाद्वीप को जकड़े रहा।

फ्रांस में कुछ लोग मानते हैं कि नेपोलियन ने देश में कानून और व्यवस्था के अभाव को समाप्त कर दिया। यह भी कहा जाता है कि नेपोलियनिक युद्धों ने क्रांति को शेष यूरोप में फैला दिया। राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन और राष्ट्र राज्यों के उदय, खासकर इटली और जर्मनी में उन क्षेत्रों पर नेपोलियन के शासन से प्रेरित हुए हो सकते हैं।

नेपोलियन के कद के बारे में भ्रम

प्रचलित धारणा के विपरीत नेपोलियन बहुत अधिक नाटे नहीं थे। सन् 1821 में उनकी मृत्यु के बाद फ्रांसीसी अर्थों में फ्रांसीसी सम्राट् का कद 5 फीट 2 इंच रिकॉर्ड किया गया। यह शाही (ब्रिटिश) अर्थों में 5 फीट साढ़े 6 इंच या 1.686 मीटर होता है। इस कद के साथ वे 19वीं सदी के एक औसत फ्रांसीसी से थोड़े लंबे थे। उनके जीवन में ही मीट्रिक सिस्टम शुरू हो गया था, इसलिए यह स्वाभाविक था कि वे अपने अधिकांश जीवन में फीट और इंचों में मापे जाते। एक फ्रांसीसी इंच 2.71 सेंटीमीटर होता है और एक शाही इंच 2.54 सेंटीमीटर। इस गलत गणना के अतिरिक्त उनको दिया गया नाम ली पेटिट कैपोरल भी भ्रम उत्पन्न करता है, क्योंकि गैर-फ्रांसीसी गलती से 'पेटिट' को 'छोटे' के अर्थ में लेते थे। वास्तव में यह आम सिपाहियों से उनकी अंतरंगता की वजह से प्यार से बुलाया जाने वाला नाम है। साथ ही वे अपनी अभिजात रक्षक सेना से भी घिरे रहते थे, जो छह फीट या उससे भी लंबे सैनिकों से बना था।

@BOOKHOUSE1

नागरिक संहिता या नेपोलियन संहिता

नेपोलियनिक कोड यूरोप के अधिकांश हिस्सों में अपनाया गया और नेपोलियन की हार के बाद भी लागू रहा। टुबिन्जेन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डीटर लैंग्विश इस संहिता को एक 'क्रांतिकारी परियोजना' मानते हैं। उनकी संहिता ने अपनी संपदा के अधिकार को विस्तृत करते हुए और सामंतवाद की रीढ़ तोड़ते हुए जर्मनी में मध्यवर्गीय समाज के विकास को प्रेरित किया। लैंग्विश नेपोलियन को 1,000 से अधिक घटकों से बने रोमन साम्राज्य को 40 स्टेट्स से अधिक सुप्रवाही तंत्र के रूप में पुनर्व्यवस्थित करने का भी श्रेय देते हैं। इस पुनर्व्यवस्था ने जर्मन संघ और सन् 1871 में जर्मन साम्राज्य के अधीन जर्मनी के भावी एकीकरण को आधार प्रदान किया।

नेपोलियन संहिता पूर्व फ्रांसीसी कानूनों और रोमन कानून दोनों पर आधारित थी। उसने नागरिक कानून को तीन श्रेणियों : व्यक्तिगत स्थिति, संपत्ति और संपत्ति के अधिग्रहण में विभाजित किया।

नेपोलियन संहिता के पीछे की मंशा फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांतों के अनुरूप फ्रांसीसी विधि व्यवस्था को सुधारने की थी। इस संहिता से पहले फ्रांस में कोई एक कानून व्यवस्था नहीं थी। कानून स्थानीय प्रथाओं पर और अकसर राजाओं या अन्य सामंती अधिपतियों द्वारा दी गई छूटों, विशेषाधिकारों और विशेष घोषणापत्रों पर आधारित होते थे। क्रांति के दौरान सामंतवाद का नामोनिशान मिट गया। फ्रांस के विभिन्न भागों में इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न विधि व्यवस्थाओं के स्थान पर एक एकीकृत विधि संहिता बनाई जानी थी।

फ्रांस की विभिन्न परंपराओं से विकसित यह पुन: संहिताकरण प्रक्रिया जस्टिनियन के संहिताबद्ध रोबन कानून से प्रेरित थी।

संहिता के आरंभिक अनुच्छेद ने 'कानून के शासन' से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण प्रावधान स्थापित किए। कानूनों को तभी लागू किया जा सकता था, यदि उनका उपयुक्त प्रख्यापन किया गया हो और उन्हें आधिकारिक रूप से प्रकाशित किया गया हो। इस प्रकार गुप्त कानून प्राधिकृत नहीं किए गए। वे 'एक्स पोस्ट फैक्टो लॉज ' यानी उनसे पहले होने वाली घटनाओं पर लागू होने वाले कानूनों को वर्जित करते थे। उन्होंने न्यायाधीशों को कानून की अपर्याप्तता के आधार पर न्याय से इनकार करने से भी वर्जित किया और इस तरह उन्हें कानून की व्याख्या करने के लिए प्रोत्साहित किया। हालाँकि वे न्यायाधीशों को वैधानिक महत्त्व के सामान्य निर्णय देने से रोकते थे। परिवार के तहत संहिता ने पत्नी और बच्चों के संबंध में पति की श्रेष्ठता स्थापित की। यह उस समय यूरोप की सामान्य वैधानिक स्थिति थी। हालाँकि उन्होंने अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में अपेक्षाकृत उदार आधार पर तलाक को अनुमति दी, जिसमें पारस्परिक सहमति द्वारा तलाक शामिल था।

दंड संहिता

1791 में लुईस माइकल ली पेलेटियर, द सेंट फर्गू ने राष्ट्रीय विधानसभा में एक नई अपराध संहिता प्रस्तुत की थी। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे केवल 'वास्तविक अपराधों' को गैर-कानूनी मानते हैं, न कि 'अंधविश्वास, सामंतवाद और कर व्यवस्था तथा शाही शासन द्वारा उत्पन्न छोटे-मोटे अपराधों को'। उन्होंने 'अंधविश्वास से उत्पन्न' अपराधों को सूचीबद्ध नहीं किया, लेकिन इसमें निश्चित रूप से ईशनिंदा, विधर्मिता, धर्मविरोध और जादू-टोना तथा शायद व्यभिचार, क्रूरता और समलिंगी सहवास शामिल था। इस प्रकार इन सभी पूर्व अपराधों को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया गया। सन् 1810 में नेपोलियन के शासन में एक नई अपराध संहिता जारी की गई। पहले वाले की तरह और शायद कैंबेसेरस के प्रभाव में उसमें धार्मिक अपराधों या समलिंगी गतिविधियों के खिलाफ प्रावधान नहीं थे।

@BOOKHOUSE1

आपराधिक निर्देश संहिता

सन् 1808 में एक 'आपराधिक निर्देश संहिता' प्रकाशित की गई। इस संहिता ने आपराधिक क्रियाविधि को निर्धारित किया। क्रांति से पहले की संसदीय व्यवस्था काफी शोषण की दोषी थी। यह क्रांति द्वारा स्थापित फौजदारी अदालतों की एक जटिल और अप्रभावी व्यवस्था थी, जिन पर काफी स्थानीय दबाव होते थे। इस संहिता के जन्म ने बहस को प्रेरित किया। उसके परिणामस्वरूप बनी संहिता फ्रांस और कई नागरिक कानून वाले देशों में इस्तेमाल की जाने वाली फौजदारी अदालतों की आधुनिक तथाकथित 'परीक्षण व्यवस्था' का आधार है।

फ्रांसीसी क्रांति की मानवाधिकारों और नागरिक अधिकारों की घोषणा से यह स्पष्ट था कि संदिग्ध व्यक्ति को निर्दोष माना जाएगा, जब तक कि उसे कानून की अदालत में अपराधी न घोषित किया जाए। बोनापार्ट की एक चिंता निरंकुश गिरफ्तारी या अत्यधिक रिमांड (मुकदमे से पहले जेल में रखना) की थी। बोनापार्ट ने टिप्पणी की कि व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए, खासकर जब मामला शाही अदालत के सामने हो। उनके शब्दों में, 'ये अदालतें काफी शक्तिशाली होंगी; उन्हें बिना किसी वजह के कमजोर नागरिक के खिलाफ इसका दुरुपयोग करने से वर्जित किया जाना चाहिए।' हालाँकि हत्या जैसे गंभीर अपराधों के संदिग्धों के लिए रिमांड अब भी एक सामान्य प्रक्रिया थी।

न्याय के लिए लंबी रिमांड अवधियों को बढ़ावा देने की संभावना अपराध की वास्तविक धारणा के लिए नेपोलियन संहिता की आलोचना की एक वजह थी। हालाँकि कानूनी कार्यवाहियों में निश्चित रूप से अपराध की

धारणा वैध नहीं होती थी। उदाहरण के लिए, जूरी सदस्यों की शपथ में स्पष्ट रूप से यह होता था कि जूरी प्रतिवादियों के हित के खिलाफ नहीं जाएगी और बचाव पक्ष के तर्कों पर ध्यान देगी।

आज के मानदंडों से देखें तो अदालत की कार्यवाहियों को नियंत्रित करने वाले नियम शायद अभियोजन पक्ष को अधिक शक्ति देते थे। यह कहा जा सकता है कि उन दिनों यूरोपीय देशों में आपराधिक न्याय दमन के पक्ष की ओर झुका था। उदाहरण के लिए, सन् 1836 में बड़े अपराध के आरोपी बंदियों को प्रिजनर्स काउंसिल एक्ट के अनुसार कानूनी सलाहकार (अर्थात् वकील) रखने की अनुमति दी गई। इसकी तुलना में नेपोलियनिक कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीड्यूर (नेपोलियन संहिता में फौजदारी प्रक्रिया) की धारा 294 में प्रतिवादी को एसाइज अदालत (दुर्दांत अपराधियों का फैसला करने वाली) में एक वकील रखने की अनुमति दी गई। उसने अदालत को यह भी निर्देश दिया कि प्रतिवादी के पास वकील न होने की स्थिति में उसे एक वकील उपलब्ध कराया जाए। ऐसा न करने पर कार्यवाही व्यर्थ मानी जाती थी। एसाइज अदालतें जिनका काम गंभीर अपराधों पर फैसला देना था, को एक जूरी के साथ काम करना है या नहीं, काफी विवादास्पद विषय था। बोनापार्ट ने जजमेंट जूरी को समर्थन दिया और आखिरकार उन्हें अपनाया गया। दूसरी ओर, बोनापार्ट अभियोग अदालतों (इंडिक्टमेंट जूरी जिन्हें सामान्य कानून वाले देशों में 'ग्रैंड जूरी' कहा जाता है) के विरुद्ध थे। वे यह काम अपीली अदालत के क्रिमिनल सेक्शन को सौंपना चाहते थे। ऐसे अपराधी, जो जूरी को धमका सकते थे, के फैसले के लिए कुछ विशेष अदालतें बनाई गईं। नेपोलियन ने इस बात पर भी जोर दिया कि दीवानी और फौजदारी मामलों का निर्णय करने वाली अदालतें एक ही होनी चाहिए।

@BOOKHOUSE1

अन्य देशों में संहिताएँ

हालाँकि नेपोलियन संहिता पहली संहिता नहीं थी, वह सबसे प्रभावशाली थी। उसे नेपोलियन के समय हुए युद्धों के दौरान फ्रांसीसियों द्वारा अधिकार किए गए कई देशों में अपनाया गया, इसलिए वह इटली, नीदरलैंड्स, बैल्जियम, स्पेन, पुर्तगाल और उनके पूर्व उपनिवेशों की निजी विधि प्रणाली का आधार बनी। 1900 में पूरे जर्मन साम्राज्य के लिए पहले सामान्य नागरिक संहिता बर्गरलिशेज गेसेट्जबुक के आरंभ तक राइन के बाएँ तट पर स्थित जर्मन क्षेत्रों में नेपोलियन संहिता इस्तेमाल में लाई जाती थी।

स्विस, जर्मन और ऑस्ट्रियन संहिताएँ अपने आपमें प्रभावशाली अन्य संहिताएँ थीं। हालाँकि इनमें भी फ्रांसीसी संहिता का कुछ प्रभाव महसूस किया जा सकता है। इस प्रकार रूस और प्रायद्वीपीय देशों के अपवादों के साथ आधुनिक महाद्वीपीय यूरोप के देशों की नागरिक विधि प्रणालियाँ नेपोलियन संहिता से प्रभावित रही हैं। इस प्रकार यह संहिता नेपोलियन की सबसे स्थायी विरासत रही।

फ्रांसीसी नेपोलियन संहिता से अपनाए गए अन्य क्षेत्रों की विधि संहिताओं का उल्लेख करते हुए भी 'नेपोलियनिक कोड या नेपोलियन संहिता' का इस्तेमाल किया जाता है, खासकर क्यूबेक की नागरिक संहिता। लुसियाना की नागरिक संहिता में नेपोलियन संहिता के कुछ पक्ष हैं, लेकिन वह रोमन और स्पेनिश कानूनी परंपराओं पर अधिक आधारित है।

नेपोलियन विद्यमान कानूनों को सभी फ्रांसीसी लोगों के लिए एक मानक कानून से बदलना चाहते थे। उन्होंने पहले ही फ्रांसीसी कर प्रणाली में सुधार ला दिया था, जिससे उनके शाही खजाने में लगभग 700 मिलियन फ्रैंक वार्षिक आए। यह पैसा आय पर कर और वाइन, तंबाकू तथा नमक जैसी वस्तुओं पर लगाए गए शुल्क से आया।

सन् 1800 में उन्होंने बैंक ऑफ फ्रांस स्थापित करते हुए वित्तीय व्यवस्था में और सुधार किया। नेपोलियन ने उसके गठन में भूमिका नहीं निभाई। उसकी देखभाल सन् 1801 से एक सरकारी आयोग द्वारा की गई। उन्होंने संहिता को पूरी तरह प्रभावित करने के लिए अपनी विशिष्ट पर्सियासनिक क्षमताओं का इस्तेमाल किया।

नागरिक संहिता का प्रमुख गुण यह था कि हर फ्रांसीसी व्यक्ति कानून के सामने समान था। यह कइयों के लिए वरदान था। हालाँकि जबकि उन्होंने तलाक से धार्मिक पक्ष हटा दिया, उनके कई मतों ने क्रांति के बाद महिलाओं के लिए निर्धारित स्वतंत्रताओं को सीमित कर दिया। उदाहरण के लिए, महिलाओं को चल संपत्ति या संपदा में स्वतंत्र व्यापार करने की अनुमति नहीं दी गई, लेकिन उन्हें ऐसा करने से पहले अपने पतियों से अनुमति लेनी पड़ती थी। उन्होंने तलाक कानूनों को सख्त बनाया और पिताओं को अपने घर के शासक के रूप में अधिकार दिया गया। वे अपने बच्चों को उत्तराधिकार से वंचित कर सकते थे। उन्होंने सार्वजनिक कार्यों का एक कार्यक्रम शुरू करने में बहुत दूरदर्शिता दिखाई, जिसमें नहरों व बंदरगाहों का निर्माण और सड़कों की स्थिति सुधारते हुए उन्हें बेहतर और अधिक सुरक्षित बनाना और डाकुओं के साथ अधिक सख्ती बरतना शामिल था।

बहुतों के लिए शिक्षा का स्तर बढ़ा, लेकिन अधिकतर बच्चे उनके नए विशेषीकृत और हाईस्कूलों से लाभ नहीं उठा पाए। उन्होंने निजी स्कूलों की स्थापना को प्रोत्साहित किया और समुदायवार साक्षरता के बीज बोए। कभी आलोचना को सहन न करने वाले व्यक्ति होने की वजह से नेपोलियन प्रेस पर टूट पड़े। उन्होंने अखबारों को प्रतिबंधित कर दिया। अंत में कुछ को छोड़कर सभी अखबार बंद हो गए।

सिविल कोड या नागरिक संहिता आधिकारिक रूप से 1804 में अधिनियमित की गई और 1807 में उसे 'कोड नेपोलियन' का नाम दिया गया। वह सभी फ्रांसीसी क्षेत्रों और इलाकों पर लागू होता था और साथ ही फ्रांसीसी प्रभाव की परिधि में मौजूद देशों द्वारा भी अपनाया गया। आज नागरिक संहिता कई यूरोपीय विधि प्रणालियों का आधार है।

@BOOKHOUSE1

❑

नेपोलियन बोनापार्ट के संपूर्ण संस्मरण 1815-1821

बेलोरोफोन जहाज पर आत्मसमर्पण के बाद नेपोलियन को एक अन्य जहाज—नॉरथंबरलैंड द्वारा सेंट हेलेना भेज दिया गया। इस जहाज के कर्मचारियों को जहाज तैयार करने के लिए केवल दो दिन का अल्प समय दिया गया था।

नेपोलियन की मूर्ति

इस जहाज में लगभग दस फीट चौड़ा और पूरे जहाज में फैला एक भोजन-कक्ष था, एक सैलून और दो केबिन थे। सम्राट् को बाईं ओर का केबिन दिया गया, जिसमें उनका सफरी बिस्तर रख दिया गया था। दाहिनी ओर का केबिन एडमिरल को दिया गया। यह फैसला किया गया कि सैलून को एक सामान्य कक्ष के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। डाइनिंग टेबल भोजन-कक्ष के अनुरूप था और नेपोलियन सैलून की ओर पीठ करके उस पर बैठते थे। एडमिरल हर दिन अपने एक दो अधिकारियों को रात्रिभोज के लिए आमंत्रित करते थे। नवगठित 53वाँ बैंड रात के भोजन के समय बजाया जाता था।

@BOOKHOUSE1

10 अगस्त को नॉरथंबरलैंड ने चैनल पार कर लिया और अब जमीन नजर नहीं आ रही थी। जहाज का मार्ग इस तरह तय किया गया था कि उसे बिस्के की खाड़ी और केप फिनिस्टर को पार करना था। हवा अच्छी थी, लेकिन रोशनी और गरमी अत्यधिक थी। नेपोलियन अपने केबिन में अनियमित समय पर नाश्ता करते थे। वे हर सुबह अपने एक सहयोगी को तय की गई दूरी, हवा का रुख और उनकी यात्रा से संबंधित अन्य चीजें पूछने के लिए भेजते थे। वे काफी पढ़ते थे, लगभग चार बजे तैयार होते थे और पब्लिक सैलून में आते थे। यहाँ वे पाँच बजे तक एक पार्टी के साथ शतरंज खेलते थे, फिर एडमिरल घोषणा करते थे कि डिनर मेज पर लग चुका है। सबको यह पता था कि नेपोलियन डिनर पर शायद ही कभी पंद्रह मिनट से अधिक व्यतीत करते थे, लेकिन यहाँ दो कोर्स में ही लगभग डेढ़ घंटे लगते थे। इससे उन्हें बहुत चिढ़ होती थी, लेकिन वे उसे प्रदर्शित न करते हुए हमेशा शांत रहते थे।

वे न तो भोजन की नई व्यवस्था और न ही व्यंजनों की गुणवत्ता की कभी आलोचना करते थे। दो अनुचर जो उनकी कुरसी के पीछे खड़े रहते थे, उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करते थे। पहले एडमिरल को सम्राट् के सामने कई प्रकार के व्यंजन परोसने की आदत थी, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया इतनी ठंडी होती थी कि यह आदत छोड़ दी गई। इसके बाद एडमिरल केवल नौकरों को यह बता देते थे कि क्या सही रहेगा। नेपोलियन आम तौर पर चुप रहते थे, जैसे कि उन्हें वह भाषा समझ में नहीं आ रही हो। हालाँकि वह भाषा फ्रेंच थी। यदि वे बोलते थे तो वह कुछ तकनीकी या वैज्ञानिक सवाल पूछने के लिए होता था या एडमिरल जिन लोगों को कभी-कभार डिनर पर बुलाते थे, उनसे कुछ शब्द बोलने के लिए।

कॉफी दिए जाने के तत्काल बाद सम्राट् उठ जाते थे और डेक पर चले जाते थे। उनके बाद ग्रैंड मार्शल और लास केसेस उठ जाते थे। इससे एडमिरल कॉकबर्न परेशान हो जाते थे, जिन्होंने अपने अधिकारियों के सामने अपना आश्चर्य प्रकट किया, लेकिन मदाम बरट्रैंड, जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी थी, ने बहादुरी से जवाब दिया, ''श्रीमान्!

'यह मत भूलिए कि आपका अतिथि एक ऐसा व्यक्ति है, जिसने दुनिया के एक बड़े हिस्से पर शासन किया है और वे राजा कभी उनकी मेज पर बुलाए जाने के सम्मान के लिए तरसते थे।'

''सही बात है।'' एडमिरल ने जवाब दिया और तब से उन्होंने नेपोलियन की आदतों से तालमेल बिठाने के लिए हर संभव प्रयास किया। उन्होंने टेबल पर बैठने का समय कम कर दिया और बाकी लोगों के डिनर खत्म करने से पहले ही नेपोलियन और उनके साथियों के लिए कॉफी का ऑर्डर दे देते थे। सम्राट् अँधेरा होने तक डेक पर टहलते रहते थे। अपने केबिन में लौटने के बाद वे अपने कुछ साथियों के साथ विंग्ट एट उन खेलते थे और लगभग आधे घंटे में विश्राम करने चले जाते थे।

15 अगस्त की सुबह उनके सभी साथियों ने उनके सामने उपस्थित होने की अनुमति माँगी। वे इस मुलाकात की वजह नहीं जानते थे। उस दिन उनका जन्मदिन था, जिसे शायद वे बिलकुल ही भूल गए थे।

अगले दिन उन्होंने केप फिनिस्टर पार कर लिया और 21अगस्त तक अफ्रीका के तट के साथ-साथ मडिरा की ओर अपनी यात्रा जारी रखी। नेपोलियन सामान्यत: पूरी सुबह अपने केबिन में ही रहते थे और अत्यधिक गरमी की वजह से वे बहुत हलके परिधान पहनते थे। वे ठीक से सो नहीं पाते थे और अकसर रात में उठ जाते थे। वे मुख्य रूप से पढ़ने में व्यस्त रहते थे। अकसर सेंट हेलेना या जिन देशों से वे लोग गुजर रहे थे, से संबंधित किसी पुस्तक को अनुवाद के लिए काउंट लास केसेस के पास भेज देते थे। नेपोलियन किसी विषय पर बातचीत शुरू करते थे या किसी पिछले दिन की बातचीत को आगे बढ़ाते थे और जब वे पूरे डेक के आठ या नौ चक्कर लगा लेते थे तो वे लारबोर्ड की ओर की दूसरी तोप पर जाकर बैठते थे। जहाजकर्मियों ने जल्दी ही इस रोज की आदत पर ध्यान देना शुरू किया और इसलिए उस तोप को उस समय से सम्राट् की तोप कहा जाने लगा। यहीं पर नेपोलियन अकसर घंटों तक बात करते रहते थे।

@BOOKHOUSE1

22 अगस्त को मडिरा दिखने लगा और रात को वे बंदरगाह पर पहुँच गए। वे रसद लेने के लिए एक-दो दिन वहाँ रुके। उस समय नेपोलियन अस्वस्थ थे। अचानक एक अंधड़ उठा हवा रेत और अफ्रीका के रेगिस्तानों की दमघोंटू गरमी से भरी हुई थी। 24 अगस्त की शाम को उन्होंने फिर से सफर शुरू किया और आराम से और फिर तेजी से आगे बढ़े। सम्राट् ने अपने मनोरंजन में एक खेल शामिल किया। वे एक साधारण शतरंज खिलाड़ी थे और जहाज पर कोई बहुत अच्छा खिलाड़ी नहीं था। उन्होंने मजाक में पूछा, ''कैसा हो, यदि वे उन्हें लगातार हराए, जो उससे बेहतर खिलाड़ियों को हराते हैं?'' विंग्ट एट उन को छोड़ दिया गया, क्योंकि वे बहुत ऊँचे दाँवों के साथ खेलते थे और नेपोलियन को जुए से घोर विरक्ति थी।

एक रात एक नीग्रो कोड़ों से बचने के लिए जहाज पर चढ़ आया, जिसकी वजह से काफी शोर और हलचल हो गई। एक युवा जहाजकर्मी केबिन में जाते लास केसेस से मिलकर और यह सोचते हुए कि वे नेपोलियन को सूचित करने जा रहे हैं, ने उनका कोट पकड़ा और अत्यंत चिंतित स्वर में बोला, ''ओह सर! सम्राट् को मत बताइए! उन्हें कहिए कि यह शोर एक दुर्घटना की वजह से है।'' संक्षेप में, जहाजकर्मी ने बोनापार्ट के लिए अत्यंत सम्मान और चिंता दरशाई और अकसर संकेतों या शब्दों द्वारा नाविकों को उन्हें कोई असुविधा न होने देने का निर्देश दिया। वे कभी-कभार इस व्यवहार पर ध्यान देते थे।

1 सितंबर को उन्होंने खुद को केप डि वर्ड द्वीपों के अक्षांश पर पाया। अब हर चीज खुशहाल यात्रा का संकेत दे रही थी, लेकिन समय बहुत धीरे गुजर रहा था। लास केसेस ने उनके पुत्र को अंग्रेजी सिखाने का काम अपने जिम्मे लिया था और सम्राट् ने भी अंग्रेजी सीखने की इच्छा जाहिर की। जल्दी ही वे थक गए और उसे छोड़ दिया।

लंबे समय तक उसे फिर से शुरू नहीं किया गया। उनका आचरण और उनकी आदतें हमेशा वही होती थीं वे लगातार संतुष्ट, धैर्यवान और मजाकिया रहते थे। एडमिरल ने धीरे-धीरे अपनी हिचक छोड़ दी और अपने महान् बंदी में दिलचस्पी लेने लगे। उन्होंने शाम की नमी को देखते हुए डिनर के बाद डेक पर आने से होने वाले खतरों के बारे में सम्राट् को बताया। सम्राट् इसके बाद कभी-कभार उनका हाथ पकड़कर लंबी बातचीत करते थे, कभी-कभार नौसैनिक मामलों पर, दक्षिण में फ्रांसीसी संसाधनों पर और भूमध्य सागरीय क्षेत्र के बंदरगाहों और पत्तनों में उन्होंने जो सुधार किए, उनके बारे में बातचीत करते थे जिन्हें एडमिरल काफी ध्यानपूर्वक सुनते थे।

इसी बीच नेपोलियन ने ध्यान दिया कि लास केसेस बहुत व्यस्त थे और उन्होंने उनके जर्नल पर एक नजर डाली जिससे वे अधिक असंतुष्ट नहीं हुए, फिर भी उन्होंने ध्यान दिया कि कुछ सैन्य विवरण और घटनाएँ युद्ध के विषय की साधारण जानकारी देते हैं। इससे वे अपने संस्मरण लिखने के लिए प्रेरित हुए। आखिरकार सम्राट् निश्चय पर पहुँचे और शनिवार, 9 सितंबर को उन्होंने अपने सचिव को अपने केबिन में बुलाया और उसे टूलों की घेरेबंदी के बारे में कुछ चीजें नोट कराईं। भूमध्य रेखा के पास पहुँचने पर वे यहाँ लगातार पूर्व की ओर से बहने वाली व्यापारिक पवन में फँस गए। 16 सितंबर को वहाँ काफी वर्षा हुई जिससे नाविकों को बहुत खुशी हुई, जो बारिश चाहते थे। जब सम्राट् दोपहर को टहलने के बाद डेक पर गए, तभी तेजी से वर्षा होने लगी, लेकिन इसकी वजह से उन्होंने अपने रोजाना के काम नहीं छोड़े। उन्होंने बस अपना प्रसिद्ध ग्रे ग्रेटकोट मँगाया, जिसमें जहाज के कर्मचारियों की काफी दिलचस्पी थी। 23 सितंबर को उन्होंने भूमध्य रेखा पार कर ली। वह जहाजकर्मियों के बीच काफी उत्साह और अव्यवस्था का दिन था। उस दिन वह समारोह था, जिसे अंग्रेज नाविक 'क्रिस्निंग' कहते हैं। उस दिन किसी को नहीं बख्शा जाता और आम तौर पर किसी और से अधिक अधिकारियों को घसीटा जाता है।

@BOOKHOUSE1

एडमिरल जिन्होंने पहले इस समारोह का एक खतरनाक विवरण देते हुए मजा लिया था, ने अब बहुत शिष्टता से अपने अतिथियों को इसमें शामिल होने की असुविधा और उपहास से छूट दे दी। इस पूरे उच्छृंखल समारोह के दौरान नेपोलियन का पूरा सम्मान किया गया। उनके प्रति पूरे सम्मान के साथ मनाए गए इस उत्सव के बारे में जानकारी मिलने पर उन्होंने इस अनोखे समारोह में नेपच्यून और उनके कर्मचारियों के सामने सौ नेपोलियन प्रस्तुत किए जाने का आदेश दिया; एडमिरल ने सतर्कता और साथ ही नम्रता की वजह से इसका विरोध किया।

उन्होंने जिस जल्दबाजी में इंग्लैंड छोड़ा था, जहाज की रंगाई अभी-अभी पूरी हुई थी और इस परिस्थिति ने नेपोलियन को दो दिनों तक अपने कक्ष तक सीमित कर दिया था, जिनकी घ्राणशक्ति बहुत सही थी। अब अक्तूबर का महीना आरंभ हो चुका था और वे गिनी की खाड़ी में जा रहे थे, जहाँ वे बॉरबन उपद्वीप के लिए निकले एक फ्रांसीसी जहाज से मिले। उन्होंने कैप्टन के साथ बात की जिसने यह जानकारी मिलने पर कि नेपोलियन जहाज में हैं, अपना आश्चर्य और खेद व्यक्त किया। हवा का रुख उलटा था और जहाज बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहा था। नाविक एडमिरल पर बड़बड़ा रहे थे, जिन्होंने आम मार्ग से अलग रास्ता अपना लिया था। आखिरकार वे अपनी यात्रा के अंत तक पहुँचे। 14 अक्तूबर को एडमिरल ने उन्हें सूचित किया कि उस दिन सेंट हेलेना नजर आने की उम्मीद है। वे अभी टेबल से उठे ही थे कि उनके कानों में 'जमीन!' की चीख आई। सम्राट् द्वीप को देखने के लिए आगे गए, लेकिन वह अब भी मुश्किल से दिख रही थी। अगली सुबह दिन निकलने के समय उन्हें वह द्वीप स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

आखिरकार इंग्लैंड से निकलने के लगभग सत्तर दिन बाद और पेरिस छोड़ने के एक सौ दस दिन बाद नेपोलियन सेंट हेलेना पहुँचे। बंदरगाह में स्क्वैड्रन के बहुत से जहाज थे, जो उनसे अलग कर दिए गए थे और जिन्हें वे सोच

रहे थे कि वे पीछे छोड़ आए हैं। प्रथा के विपरीत नेपोलियन जल्दी तैयार हो गए और डेक पर पहुँच गए: वे द्वीप को देखने के लिए आगे गैंगवे तक गए। उन्होंने बादलों तक ऊँचे असंख्य निर्जन पहाड़ों से घिरा हुआ एक प्रकार का गाँव देखा। हर पहाड़ की प्रत्येक समतल जगह, प्रत्येक छिद्र और प्रत्येक शिखर पर एक तोप रखी हुई थी। सम्राट् ने अपने चश्मे से भविष्य को देखा। उनके चेहरे के भावों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वे जल्दी ही डेक से चले गए और लास केसेस को बुलाते हुए अपने दैनिक कार्य में लग गए। एडमिरल जो बहुत जल्दी तट पर चले गए थे, शाम को काफी थके हुएऐ लगभग छह बजे लौटे। वे द्वीप के विभिन्न हिस्सों में घूमते रहे। आखिरकार उन्हें लगा कि एक जगह उनके बंदियों के लिए उपयुक्त रहेगी। उस स्थान में मरम्मत की जरूरत थी, जिसमें दो महीने लग सकते थे। उनका आदेश था कि जब तक फ्रांसीसियों के स्वागत के लिए एक घर तैयार न हो जाए, तब तक उन्हें जहाज न छोड़ने दिया जाए। हालाँकि वे अपनी जिम्मेदारी पर उन्हें अगले दिन तट पर ले गए।

16 अक्तूबर को डिनर के बाद एडमिरल और ग्रैंड मार्शल बरट्रैंड तट पर जाने के लिए एक नौका में उतरे। जब वे गुजरे तो सभी अधिकारी डेक पर जमा हो गए और अधिकतर जहाजकर्मी रास्तों पर खड़े हो गए। सम्राट् ने नौका में कदम रखने से पहले जहाज के कैप्टन को बुलवाया और उनसे विदा लेते हुए इच्छा जाहिर की कि वे अधिकारियों और जहाजकर्मियों तक उनका धन्यवाद पहुँचा दें। ये शब्द उन सबके लिए जिन्होंने उन शब्दों को समझा या उनके लिए जिनको वह समझाया गया, बहुत रोमांचक प्रतीत हुए। उनके शेष सेवक लगभग आठ बजे उतरे। उन्होंने सम्राट् को अपार्टमेंट्स में पाया, जो उन्हें सौंपे गए थे। कुछ मिनट बाद वे ऊपर अपने चैंबर में गए। उन्हें जेम्स टाउन में एक प्रकार की सराय में ठहराया गया था, जहाँ केवल एक छोटी सी सड़क या दो चट्टानी पहाड़ों के बीच एक सँकरी घाटी में बनाए गए घरों की पंक्ति थी।

अगले दिन सम्राट्, ग्रैंड मार्शल और एडमिरल लोंगवुड तक गए, जिसे सम्राट् के आवास के लिए चुना गया था। लौटते समय उन्होंने शहर से लगभग दो मील दूर एक छोटा सा विला देखा, जिसके साथ एक पैविलियन था। वह द्वीप के एक व्यापारी मिस्टर बालकोंब का आवास था। नेपोलियन को यह स्थान पसंद आया और एडमिरल की भी यह राय थी कि उनके लिए वहाँ रहना बेहतर होगा। यदि सम्राट् को शहर लौटना होगा तो उनके दरवाजे पर खड़े संतरी और उसके आस-पास की भीड़ उन्हें उनके चैंबर तक सीमित कर देगी।

पैविलियन एक नोकदार पहाड़ी पर एक प्रकार का ग्रीष्मकालीन आवास था, जो घर से लगभग तीस या चालीस कदम दूर था, जहाँ वह परिवार अच्छे मौसम में रहने का अभ्यस्त था। उसे सम्राट् के अस्थायी निवास के लिए किराए पर ले लिया गया और वे तत्काल उसमें रहने आ गए। शहर से वहाँ तक वाहनों के आने-जाने वाली एक सड़क थी और इस हिस्से में घाटी कम ऊबड़-खाबड़ थी। लास केसेस को तुरंत बुलवाया गया।

जब वे पैविलियन तक पहुँचाने वाले घुमावदार रास्ते पर बढ़े तो उन्होंने नेपोलियन को दरवाजे की देहरी पर खड़े हुए देखा। उनका शरीर कुछ झुका हुआ था और उनके हाथ पीठ पीछे थे। उन्होंने अपनी सामान्य और साधारण वर्दी तथा सुप्रसिद्ध हैट पहन रखी थी। सम्राट् अकेले थे। उन्होंने थोड़ा चलने का प्रयास किया, लेकिन पैविलियन के किसी भी ओर कोई समतल जमीन नहीं थी, वह विशाल चट्टानों से घिरा था, फिर भी उन्होंने अपने साथी का हाथ पकड़कर प्रसन्न लहजे में बातचीत शुरू की। जब नेपोलियन सोने जा रहे थे तो नौकरों ने पाया कि बिस्तर के नजदीक वाली एक खिड़की खुली थी। उन्होंने उसे खूब अच्छी तरह बंद कर दिया, ताकि हवा अंदर न आए जिसके प्रति सम्राट् बहुत संवेदनशील थे। लास केसेस एक ऊपरी कक्ष में चले चले गए। अनुचर दरवाजे की देहरी के पास अपने-अपने लबादों में लेट गए। ब्रायर्स में नेपोलियन की पहली रात इस प्रकार बीती।

@BOOKHOUSE1

एक अंग्रेज अधिकारी को उनके गार्ड के रूप में उनके साथ घर में ठहराया गया था और उनकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए दो नॉन-कमीशंड अधिकारियों को घर के पास तैनात किया गया। अगले दिन नेपोलियन ने अपनी डिक्टेशन जारी रखी, जिसमें वे कई घंटे व्यस्त रहे और फिर बगीचे में टहलने चले गए। यहाँ वे बालकोंब परिवार की दो लड़कियों से मिले, जो लगभग चौदह वर्ष की खुशमिजाज लड़कियाँ थीं, जिन्होंने उन्हें फूल भेंट किए और उन्हें ऊटपटाँग सवालों से अभिभूत कर दिया। नेपोलियन उनकी आत्मीयता से विस्मित हुए, जिसकी उन्हें आदत नहीं थी। लड़कियों के जाने के बाद उन्होंने कहा, ''हम एक मुखौटों वाले बॉल (अंग्रेजी नृत्य) में थे।''

अगले दिन नाश्ते के लिए एक चिकन लाया गया। सम्राट् ने उसे खुद काटा और इसे अच्छी तरह कर पाने पर उन्हें हैरानी हुई, क्योंकि उन्होंने एक लंबे समय बाद ऐसा कुछ किया था। कॉफी उन्हें इतनी खराब लगी कि उसकी चुस्की लेने के बाद उन्हें लगा कि उन्हें जहर दिया गया है और उन्होंने वह वापस भेज दी।

सुबह काम में बीत जाती थी; शाम को नेपोलियन कभी-कभार पड़ोस की विला तक जाते थे, जहाँ वह लड़कियाँ उन्हें खेल में उलझा लेती थीं।

'इटली का अभियान' लगभग पूरा हो गया था और ला केसेस ने प्रस्ताव रखा कि शहर में मौजूद नेपोलियन के अन्य समर्थकों को हर सुबह आकर मिस्र का अभियान, काउंसिलेट का इतिहास आदि के अनुवाद में मदद करनी चाहिए। इस सुझाव ने पूर्व सम्राट् को प्रसन्न कर दिया, इसलिए उसी समय से उनके एक-दो सहयोगी नियमित रूप से प्रतिदिन उनकी डिक्टेशन लिखने के लिए आते थे और डिनर तक रहते थे। 53वीं रेजीमेंट के कर्नल द्वारा भेजे गए एक तंबू को फैलाकर पैविलियन को विस्तृत कर दिया गया। उनके रसोइए ने ब्रायर्स में अपना निवास बना लिया। ट्रंकों से मेज का कपड़ा लिया गया, प्लेट लगाई गई और इस नई व्यवस्था के बाद पहला डिनर एक प्रकार का उत्सव था।

@BOOKHOUSE1

एक दिन डिनर के समय नेपोलियन की नजर एक व्यंजन पर पड़ी, जिस पर बादशाह के हाथ उकेरे गए थे। 'उन्होंने कैसे उसे खराब कर दिया है!' वे चिल्लाए और यह महसूस करने से नहीं रह पाए कि सम्राट् इंपीरियल प्लेट पर कब्जा करने की जल्दबाजी में थे, जो निश्चित रूप से उसकी नहीं थी। सामान में एक कैबिनेट था जिमसें बहुत से फलक थे, जो उन्हें पोप और अन्य शासकों द्वारा दिए गए थे, लुई अठारहवें के कुछ पत्र थे जिन्हें 20 मार्च को ट्यूलेरिये से अपने आकस्मिक निकास की वजह से अपनी लिखने की मेज पर छोड़ आए थे और नेपोलियन के बारे में गलत और हानिकारक अफवाहें फैलाने के उद्देश्य से लिखे गए बहुत से अन्य पत्र थे।

सम्राट् कभी भी चार बजे से पहले तैयार नहीं होते थे। चार बजे वे बगीचे में टहलने जाते थे। उन्हें अपने एकांत की वजह से इसमें कोई खराबी नहीं लगती थी। मिस्टर बालकोंब के अनुरोध पर अंग्रेज सिपाहियों को हटा लिया गया था। एक छोटे से कुंज के ऊपर तिरपाल खींच दिया गया था। और उसमें एक कुरसी तथा मेज रख दी गई थी। यहाँ नेपोलियन ने अपने संस्मरणों का एक बड़ा हिस्सा लिखवाया। शाम में जब वे बाहर नहीं जाते थे तो वे सामान्यत: बातचीत को ग्यारह या बारह बजे तक खींचने का प्रयास करते थे।

इस प्रकार समय बिना किसी परिवर्तन या बाधा के बीत रहा था। सर्दियों में मौसम खुशनुमा हो जाता था। एक दिन अपना रोज का काम खत्म होने पर नेपोलियन ने शहर की ओर टहलना शुरू किया, जब तक कि सड़क और जहाज न दिखने लगे। वापसी में उन्हें श्रीमती बालकोंब और श्रीमती स्टुअर्ट मिलीं, जो बंबई से इंग्लैंड लौटने के क्रम में थीं। सम्राट् ने उनसे भारत की परंपराओं, प्रथाओं और एक लंबी समुद्री यात्रा से खासकर महिलाओं को होने वाली असुविधा के बारे में बात की। उन्होंने श्रीमती स्टुअर्ट के अपने देश स्कॉटलैंड की बात की, ओसियन की

प्रतिभा पर चर्चा की और अपनी महिला साथी को अपनी रंगत को बनाए रखने पर बधाई दी।

जब वे इस तरह बातें कर रहे थे, कुछ भारी बोझ-से लदे दास उनके निकट से गुजरे। श्रीमती बालकोंब ने उन्हें दूसरा मार्ग लेने का संकेत किया; लेकिन नेपोलियन ने यह कहते हुए हस्तक्षेप किया, ''मदाम, बोझ को देखें!'' जब उन्होंने ऐसा कहा, स्कॉच महिला जो अब तक अत्यंत उत्सुकता से नेपोलियन की विशेषताओं को देख रही थीं, अपनी मित्र के कान में फुसफुसाईं, ''ओ गॉड! क्या आदमी है और उनमें कितना धैर्य है! मैंने उनके बारे में जो धारणा बनाई थी, वे उससे कितने अलग हैं!'' इसके तुरंत बाद नेपोलियन फिर से उतनी दूर चलकर मेजर हडसन के घर पहुँचे। इस मुलाकात ने वहाँ नियुक्त अधिकारियों को काफी सतर्क कर दिया।

गवर्नर ने एक बॉल आयोजित किया जिसमें फ्रांसीसियों को निमंत्रित किया गया। लगभग उसी समय लास केसेस लोंगवुड तक यह देखने गए कि उनके स्वागत के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई हैं। वापस आने पर उनकी रिपोर्ट बहुत अच्छी नहीं थी। अब ब्रायर्स में उन्हें छह सप्ताह से अधिक समय हो चुका था, जिसके दौरान नेपोलियन लगभग उतने ही कैद थे जितने जहाज में। इसका असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा था। लास केसेस ने अपनी राय दी कि सम्राट् उतने सख्त नहीं हैं, जैसा आम तौर पर उनके बारे में माना जाता है और यह उनके शरीर की नहीं, बल्कि मन की मजबूती थी जिसने उन्हें मैदान और कैबिनेट के परिश्रम में सफलता दिलाई। इस विषय पर बोलते हुए नेपोलियन ने स्वयं महसूस किया कि 'प्रकृति' ने उन्हें दो विचित्र विशेषताएँ दी हैं—एक किसी भी समय या किसी भी स्थान पर सोने की क्षमता; दूसरा, खाने या पीने में किसी प्रकार की अति करने के योग्य न होना। उन्होंने कहा, ''अगर मैं अपनी सीमा से थोड़ा भी बढ़ जाऊँ तो मेरा पेट तुरंत विद्रोह कर देता है।'' उन्हें जरा-सी बात पर मितली आ जाती थी और जरा सी वायु परिवर्तन से जुकाम लग जाता था।

@BOOKHOUSE1

10 दिसंबर 1815 को कैदियों को लोंगवुड भेज दिया गया। नेपोलियन ने उस सुबह नाश्ते पर मिस्टर बालकोंब को आमंत्रित किया और बहुत प्रसन्न लहजे में उनसे बातचीत की। लगभग दो बजे एडमिरल कॉकबर्न के आने की घोषणा हुई; उन्होंने एक प्रकार की शर्मिंदगी के साथ प्रवेश किया। बोनापार्ट ने ब्रायर्स में उनके ऊपर थोपे गए प्रतिबंधों और शहर में रह रहे उनके अनुचरों के साथ किए जा रहे व्यवहार के विरोध में एडमिरल का स्वागत करना बंद कर दिया था, फिर भी उस अवसर पर उन्होंने एडमिरल के साथ इस तरह का व्यवहार किया, मानो कुछ हुआ ही न हो।

आखिरकार उन्होंने ब्रायर्स छोड़ा और लोंगवुड के लिए निकले। नेपोलियन घोड़े पर सवार हुए, एक छोटा, तेज और खूबसूरत जानवर जो केप से उनके लिए लाया गया था। उन्होंने शासर्स ऑफ द गार्ड की वर्दी पहनी और उनके गरिमामय लहजे तथा खूबसूरत चेहरे पर खास तौर पर निगाह जाती थी। एडमिरल उनकी सेवा में तत्पर थे। लोंगवुड के प्रवेश द्वार पर उन्होंने शस्त्रों से सुसज्जित एक गार्ड पाया, जिसने उनके यशस्वी बंदी का स्वागत किया। उनका घोड़ा, जिसे परेडों की आदत थी और जो ड्रम के बजने से डर रहा था, ने गेट के आगे जाने से इनकार कर दिया, जब तक कि नेपोलियन ने उसे प्रेरित न किया और उनके रक्षकों ने प्रशंसा की दृष्टि से यह सब देखा।

एडमिरल ने बहुत ध्यान से लोंगवुड में छोटी-छोटी चीजें बताईं। उन्होंने स्वयं सारी व्यवस्था का निरीक्षण किया, जिसमें एक बाथरूम भी था। बोनापार्ट हर चीज से संतुष्ट थे और एडमिरल काफी खुश नजर आए। उन्होंने बदमिजाजी और तिरस्कार की उम्मीद की थी, लेकिन नेपोलियन ने काफी मजाकिया व्यवहार दिखाया।

घर में प्रवेश एक कमरे के द्वारा था, जिसे एक बैठक और भोजन कक्ष के दोहरे उद्देश्य से बनाया गया था।

यह अपार्टमेंट ड्राइंगरूम की ओर जाता था, उसके आगे एक तीसरा कक्ष था, जहाँ बहुत अँधेरा था। उसे सम्राट् के मानचित्रों और पुस्तकों के लिए भंडार के रूप में इस्तेमाल किया जाना था, लेकिन बाद में उसे भोजन कक्ष में बदल दिया गया।

सम्राट् का चैंबर इस अपार्टमेंट में दाहिनी ओर था और उसे दो समान भागों में विभाजित किया गया था, जिसमें एक कैबिनेट और एक शयनकक्ष था। एक बाहरी गैलरी स्नानघर का काम करती थी। सम्राट् के चैंबर के दूसरी ओर भवन के दूसरे कोने पर मदाम मोंथोलन, उनके पति और उनके पुत्र के अपार्टमेंट थे, जिन्हें बाद में सम्राट् के पुस्तकालय के रूप में इस्तेमाल किया गया।

घर के इस हिस्से से अलग भूतल पर एक छोटा सा चौकोर कक्ष था, जो रसोईघर का विस्तार था, वह लास केसेस को सौंपा गया था। खिड़कियों और बिस्तरों पर परदे नहीं थे। फर्नीचर साधारण और कम थे। बरट्रैंड और उनका परिवार दो मील की दूरी पर रट्स गेट नामक

सेंट हेलेना में नेपोलियन

एक स्थान पर रहते थे। जनरल गौरगॉड और मिस्टर ओ' मियरा और रक्षकों का नेतृत्व करने वाला अधिकारी एक तंबू में सोते थे। वह घर एक बगीचे से घिरा हुआ था। सामने और काफी गहरे दर्रे से विभाजित 53वीं रेजीमेंट का शिविर था, जिसके विभिन्न दल बगल की पहाड़ियों पर तैनात थे।

@BOOKHOUSE1

सम्राट् की घरेलू व्यवस्था में ग्यारह लोग शामिल थे। ग्रैंड मार्शल सामान्य निरीक्षक थे, द मोंथोलन घरेलू प्रबंध देखते थे, लास केसेस फर्नीचर और संपत्ति की देखभाल के लिए थे और जनरल गौरगौड के पास अस्तबल का प्रबंधन था। हालाँकि इन व्यवस्थाओं ने नेपोलियन के सहयोगियों में असंतोष को प्रेरित किया। लास केसेस स्वीकार करते हैं कि वे अब एक परिवार के सदस्य नहीं थे, जो सभी के हित में अपना बेहतरीन प्रयास करते हैं। वे ऐसा कुछ नहीं कर रहे थे जिसकी आवश्यकता थी। वे यह भी कहते हैं, 'एडमिरल ने हमारे साथ अपने विवादों के मध्य कई बार जल्दबाजी में कहा कि सभी लोगों में निश्चित रूप से सम्राट् ही सबसे अच्छे स्वभाव के, निष्पक्ष और समझदार थे।'

पहली बार वहाँ आने पर वे द्वीप पर रहने वाले कुछ चीनियों के कब्जे वाली बैरकों और लोंगवुड फार्म नामक स्थान को देखने गए। इटली का अभियान अब पूरा हो चुका था, नेपोलियन ने उसमें सुधार किया और अन्य विषयों पर लिखवाया। यह उनके सुबह का काम था। वे आठ और नौ बजे के बीच भोजन करते थे। मदाम मोंथोलन नेपोलियन के दाहिनी ओर, लास केसेस बाईं ओर और गौरगौड, मोंथोलन तथा लास केसेस का पुत्र उनके विपरीत दिशा में बैठते थे। पेंट की गंध अब तक न जाने की वजह से वे भोजन की मेज पर दस मिनट से अधिक नहीं बैठते थे और मीठा बगल वाले अपार्टमेंट में तैयार किया जाता था, जहाँ कॉफी पेश की जाती थी और बातचीत शुरू होती थी। मोलियेर, रेसीन और वॉल्टेयर के दृश्य पढ़े जाते थे और हमेशा कॉर्नील की एक प्रति न होने पर खेद व्यक्त किया जाता था। फिर वे 'रिवरसिस' खेलते थे, जो युवावस्था में नेपोलियन का पसंदीदा खेल रहा था।

नेपोलियन ने अपनी निंदा करने वाला एक लेख पढ़ा और अंग्रेजी अखबारों में दिए गए अपने क्रूरतापूर्ण व्यवहार

के वर्णन के विपरीत अपने और पर्सिया की रानी के बीच आदरपूर्ण बातों के आदान-प्रदान का उल्लेख किया। दूसरी ओर, नेपोलियन के लोंगवुड और ब्रायर्स में रहने के दौरान दो साधारण नाविक अलग-अलग समय पर संतरियों को झाँसा देकर नेपोलियन की झलक पाने में सफल रहे। उन लोगों ने नेपोलियन में जो दिलचस्पी दिखाई, उसे देखने के बाद उन्होंने कहा, 'यह कट्टरता है! हाँ, कल्पना दुनिया पर राज करती है।'

सेंट हेलेना में नेपोलियन के साथ व्यवहार के संबंध में अंग्रेज मंत्रियों के निर्देशों को पूरी तरह उनकी सुरक्षा के दृष्टिकोण से तैयार किया गया था। एक अंग्रेज अधिकारी को लगातार उनकी टेबल पर होना था। हालाँकि इस आदेश को प्रभाव में नहीं लाया गया था। एक अधिकारी को नेपोलियन के हर बार बाहर जाने के समय उनके साथ होना था। इस आदेश को कुछ निर्धारित सीमाओं के अंदर समाप्त कर दिया गया, क्योंकि नेपोलियन ने ऐसी शर्तों पर बाहर जाने से ही इनकार कर दिया था। लगभग हर दिन अपने साथ असहजता और शिकायत का नया कारण लेकर आता था। नेपोलियन की खिड़कियों के नीचे और दरवाजों के बाहर संतरियों को तैनात किया गया था। वैसे यह आदेश निश्चित रूप से दूसरों की उत्सुकता से होने वाली परेशानी से उन्हें बचाने के लिए दिया गया था।

फ्रांसीसियों को द्वीप के निवासियों से किसी प्रकार का स्वतंत्र व्यवहार नहीं रखने दिया गया था; लेकिन यह सावधानी सम्राट् की सुरक्षा के लिए आवश्यक थी। लास केसेस शिकायत करते हैं कि पासवर्ड बराबर बदल दिए जाते थे, ताकि वे लगातार किसी अप्रत्याशित अपमान की आशंका और उलझन में रहें। वे आगे कहते हैं, 'नेपोलियन ने एडमिरल को एक शिकायत भेजी जिसका कोई समाधान नहीं किया गया।'

इन शिकायतों के बीच एडमिरल ने नेपोलियन का परिचय कुछ महिलाओं से कराना चाहा; लेकिन उन्होंने कभी अपमान और कभी शिष्टाचार का व्यवहार स्वीकार न करते हुए उससे इनकार कर दिया। हाँ, वे 53वीं रेजीमेंट के कर्नल के अनुरोध पर उसके एक अधिकारी से मिलने के लिए तैयार हो गए। उस अधिकारी के जाने के बाद नेपोलियन काफी देर तक बगीचे में टहलते रहे। वे एक जगह एक फूल को देखने के लिए क्षण भर रुके और अपने साथी से पूछा कि क्या वह लिलि का फूल है। वह वाकई एक खूबसूरत फूल था। उनके दिमाग में उस समय जो विचार था, वह स्पष्ट था। इसके बाद उन्होंने बताया कि वह कितनी बार जख्मी हुए और कहा कि लोग अब तक सोचते थे कि वे कभी उन दुर्घटनाओं के शिकार नहीं हुए, क्योंकि उन्होंने उन दुर्घटनाओं को यथासंभव गुप्त रखा था।

वह दिसंबर के अंत का समय था। एक दिन टहलने और कीचड़ में लड़खड़ाने के बाद बोनापार्ट लौटे तो उन्होंने अंग्रेजी अखबारों का एक पैकेट पाया, जिसका ग्रैंड मार्शल ने उनके लिए अनुवाद किया। इसमें वे देर तक व्यस्त रहे और उनमें प्रकाशित सामग्री पर चर्चा करने में अपना डिनर भूल गए। डिनर के परोसे जाने के बाद लास केसेस अनुवाद को जारी रखना चाहते थे, लेकिन नेपोलियन ने उनकी कमजोर दृष्टि का ध्यान रखते हुए उन्हें परेशान करना उचित नहीं समझा और कहा, 'हमें कल तक प्रतीक्षा करनी चाहिए'।

कुछ दिनों बाद एडमिरल व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने पहुँचे और वह साक्षात्कार अच्छा रहा। कुछ उत्साहपूर्ण चर्चा के बाद यह व्यवस्था की गई कि नेपोलियन अब से द्वीप पर स्वतंत्रतापूर्वक घूम सकेंगे और उनका अनुसरण करने वाला अधिकारी एक दूरी बनाए रखेगा और आगंतुकों को लोंगवुड के निरीक्षक के रूप में एडमिरल की स्वीकृति से नहीं, बल्कि ग्रैंड मार्शल की अनुमति से उनसे मिलाया जाएगा। हालाँकि इन रियायतों को जल्दी ही वापस ले लिया गया।

30 दिसंबर को एक पोल पियोंतकोवस्की, जिसे पीछे छोड़ दिया गया था, लेकिन जिसने अनुनय-विनय से अंग्रेज

@BOOKHOUSE1

सरकार को मना लिया था, बोनापार्ट के साथ आ गया। नववर्ष के दिन जब उनकी छोटी सी पार्टी एक साथ की गई तो नेपोलियन ने उस मौके की भावनाओं में बहते हुए यह आग्रह किया कि वे साथ ही नाश्ता करेंगे और समय बिताएँगे। वह हर दिन इस प्रकार की कोई नई चीज लेकर आता था।

14 अप्रैल, 1816 को नए गवर्नर सर हडसन लो सेंट हेलेना पहुँचे। इस घटना के बाद आरोपों और प्रत्यारोपों की एक अनवरत झड़ी लग गई, जिसमें नेपोलियन के जीवन के अंतिम पाँच वर्ष लगातार व्यस्त रहे। इससे न केवल वे और उनसे जुड़े लोग काफी परेशान रहे, बल्कि शायद इसकी वजह से उनका जीवन जल्दी समाप्त हो गया।

इस तुच्छ लड़ाई की प्रगति को विस्तार से बताना दुरूह होगा, लेकिन जिस विषय से नेपोलियन के जीवन का इतना बड़ा हिस्सा जुड़ा है, उसे छोड़ा नहीं जाना चाहिए। ये विवरण उनके समर्पित प्रशंसक ला केसेस से लिये जाएँगे, ताकि ऐसी किसी चीज से बचा जा सके जो नेपोलियन के खिलाफ पक्षपात जैसा लगे।

नए गवर्नर के पहली बार आने पर यानी 16 अप्रैल को नेपोलियन ने उनसे मिलने से इनकार कर दिया, क्योंकि वे स्वयं बीमार थे और गवर्नर ने मुलाकात के लिए पहले से नहीं पूछा था। दूसरी बार आने पर गवर्नर से मुलाकात कराई गई और लगता है कि नेपोलियन ने पहली नजर में ही पूर्वग्रह बना लिया था, क्योंकि उन्होंने अपने अनुचरों के आगे यह टिप्पणी की कि 'गवर्नर भयंकर हैं और उनका चेहरा बहुत कुरूप है'। हालाँकि उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें इतनी जल्दबाजी में कुछ निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए। गवर्नर ने फिर 30 अप्रैल को नेपोलियन से मुलाकात की और यह साक्षात्कार बहुत कलहपूर्ण था।

नेपोलियन ने अपने प्रति सहयोगियों के व्यवहार को लेकर गवर्नर के साथ तर्क-वितर्क किया। उन्होंने कहा कि उन्हें उनसे गलत व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है, जो उनके समकक्ष और कभी-कभी उनके स्वामी थे। इसके बाद उन्होंने उस अपमान की बात की जो अंग्रेजों ने उन्हें सेंट हेलेना भेजकर किया था। वे उन्हें तिल-तिल करके मारना चाहते थे। उनका व्यवहार कैलेब्रियंस भी बुरा था, जिन्होंने मुराट को गोली मारी थी। उन्होंने आत्मघात की कायरता की बात की, सेंट हेलेना की छोटी सीमा और भयावह जलवायु की शिकायत की और कहा कि उनका जीवन एक बार में ले लेना दयालुता होगी।

सर एच. लो ने कहा कि हर संभव सुविधा के साथ लकड़ी का एक घर उनके इस्तेमाल के लिए इंग्लैंड से चल पड़ा है। नेपोलियन ने तत्काल उससे इनकार कर दिया और कहा कि उन्हें घर नहीं, बल्कि एक जल्लाद और एक ताबूत चाहिए। वह घर एक मजाक था, मौत देना उन पर उपकार करना होगा। कुछ मिनट बाद नेपोलियन ने सन् 1814 के अभियान की कुछ रिपोर्टें उठाईं, जो मेज पर पड़ी थीं और सर एच. लो से पूछा कि क्या उन्होंने वह लिखा है। लास केसेस यह कहते हुए कि गवर्नर ने हाँ में जवाब दिया, इस साक्षात्कार का अपना वर्णन समाप्त कर देते हैं, लेकिन ओ' मियरा के अनुसार, नेपोलियन ने कहा कि वह मूर्खताओं और झूठ से भरा पड़ा है। गवर्नर काफी सौम्यता से जवाब देते हुए नम्रता से पीछे हट गए। नेपोलियन ने अपने क्रोधपूर्ण लहजे में फटकारना जारी रखा, अत्यंत बुरे लहजे में उनके साथ दुव्यर्वहार किया और अपने नौकर को कॉफी का एक कप खिड़की से बाहर फेंकने को कहा क्योंकि वह गवर्नर के पास की एक मेज पर थोड़ी देर पड़ा था।

लोंगवुड या हट्स गेट आने वाले सभी व्यक्तियों से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे फ्रांसीसियों के साथ हुई बातचीत के बारे में गवर्नर या सर थॉमस रीड को रिपोर्ट दें। लोंगवुड हाउस और मैदानों पर बहुत से अतिरिक्त संतरी तैनात कर दिए गए।

किसी अत्यंत नम और धुँध भरे मौसम में नेपोलियन कई दिनों तक बाहर नहीं गए। प्लांटेशन हाउस से एक के

@BOOKHOUSE1

बाद एक संदेशवाहक और पत्र लगातार आते-जाते रहे। गवर्नर नेपोलियन से मिलने के लिए आतुर थे और स्पष्ट रूप से अविश्वास से भरे हुए थे, हालाँकि लोंगवुड के निवासी उनकी आवाज के कारण उनकी वास्तविक उपस्थिति के प्रति आश्वस्त थे। उन्होंने काउंट बरट्रैंड के साथ इस बारे में कुछ बात की कि उनके एक अधिकारी को प्रतिदिन नेपोलियन से मिलना चाहिए। वे स्वयं भी अकसर लोंगवुड जाते थे और आखिरकार कुछ कठिनाई के बाद वे नेपोलियन से उनके बेड चैंबर में मुलाकात तय करने में सफल हो पाए। यह मुलाकात लगभग पंद्रह मिनट चली। कुछ दिन पहले उन्होंने मिस्टर ओ' मियरा को बुलवाया था और बंदी से संबंधित बहुत से सवाल पूछे थे। एक नई नाली बनाने की योजना बनाते हुए कई बार घर के चारों ओर तथा खिड़कियों के सामने चक्कर लगाए थे, जो उनके अनुसार मवेशियों के गुजरने से बचने के लिए खोदा जाना था।

5 मई की सुबह नेपोलियन ने अपने सर्जन ओ' मियरा को बुलवाया। उन्हें नेपोलियन के बेड चैंबर में ले जाया गया, जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया था—'वह लगभग चौदह गुना बारह फीट का और दस या ग्यारह फीट ऊँचा कमरा था। दीवारों पर भूरा नानकीन लगा था जिन पर आम हरे बॉर्डर बनाने वाले कागज से बॉर्डर और किनारा बना हुआ था और उन पर स्कर्टिंग नहीं थी। बिना घिरनी वाली दो छोटी खिड़कियाँ जिनमें से एक ऊपर चढ़ी हुई थी और दाँतेदार लकड़ी के एक टुकड़े से बँधी हुई थी, 53वीं रेजीमेंट के शिविर की ओर खुलती थी। खिड़कियों के परदे सफेद कपड़े के थे, एक छोटी सी अँगीठी और उससे मिलते-जुलते ग्रेट और फायर आयरन थे, लकड़ी का एक साधारण मैंटलपीस था, जो सफेद रंगा हुआ था, जिसके ऊपर उनके पुत्र की एक छोटी सी संगमरमर की अर्धप्रतिमा थी। मैंटलपीस के ऊपर मारिया लुइसा का चित्र और युवा नेपोलियन के चार या पाँच चित्र टँगे हुए थे, जिनमें से एक पर उनकी माँ द्वारा कढ़ाई की गई थी। थोड़ी दाहिनी ओर साम्राज्ञी जोसफिन का चित्र टँगा था और बाईं ओर पोत्सदम में नेपोलियन द्वारा प्राप्त फ्रेडरिक द ग्रेट का अलार्म चैंबर वॉच टँगा था, जबकि दाहिनी ओर कॉन्सुलर घड़ी थी जिस पर बी संकेताक्षर खुदा हुआ था और वह मारिया लुईसा के बालों के एक चेन द्वारा नानकीन लाइनिंग में ठुके एक पिन से लटका हुआ था। दाहिने कोने में हरे सिल्क के परदों के साथ छोटा सादा लोहे का शिविर बेडस्टेड था, जिस पर उसका स्वामी मरेंगो और ऑस्टरलिट्ज के मैदानों में लेटा था। खिड़कियों के बीच में दराजों वाला एक संदूक था और अगले अपार्टमेंट की ओर खुलने वाले दरवाजे के बाईं ओर हरी पट्टियों वाला एक बुककेस था। हरे रंग की चार-पाँच बेंत के आधार वाली कुरसियाँ कमरे में यहाँ-वहाँ रखी हुई थीं। पिछले दरवाजे के आगे नानकीन से ढका एक परदा था और उसके तथा अँगीठी के बीच सफेद लोंग क्लॉथ से ढका एक पुराने फैशन का सोफा था जिस पर सफेद मार्निंग गाउन, सफेद ढीले ट्राउजर्स और स्टॉकिंग पहने नेपोलियन टेक लगाए हुए थे। उनके सिर पर चारखाने वाला एक लाल रूमाल था और उनकी शर्ट का कॉलर टाई के बिना खुला हुआ था। वे उदास और परेशान लग रहे थे। उनके सामने कुछ किताबों के साथ एक छोटी सी गोल मेज थी। उसके नीचे कालीन पर उन किताबों का ढेर बिखरा हुआ था, जिन्हें वे पढ़ चुके थे। सोफे के दूसरी ओर अपने पुत्र को अपनी गोद में लिए हुए साम्राज्ञी मारिया लुइसा का चित्र टँगा हुआ था। अँगीठी के सामने अपने हाथों को छाती के पास मोड़े हुए और अपने एक हाथ में कुछ कागज लिये लास केसेस खड़े थे।

कभी फ्रांस के महान् सम्राट् रहे नेपोलियन की पुरानी शानो-शौकत में से बस बाएँ कोने में एक बढ़िया वाश हैंडस्टैंड रह गया था, जिसमें एक चाँदी का बेसिन और चाँदी का पानी का जग था। 'इस अवसर पर ओ' मियरा को बुलवाने का नेपोलियन का उद्देश्य उनसे यह पूछना था कि भविष्य में उनके पारस्परिक व्यवहार में वे उसे गवर्नर के जासूस के रूप में देखें या उनके चिकित्सक के रूप में?' इस पर डॉक्टर ने एक निर्णायक और

@BOOKHOUSE1

संतोषजनक जवाब दिया। नेपोलियन ने ओ' मियरा से कहा, 'मेरे बेडचैंबर में गवर्नर ने मेरे साथ हुई मुलाकात के दौरान जिन चीजों का प्रस्ताव रखा, उनमें एक शुरुआती प्रस्ताव था आपको बाहर भेजना और यह कि मैं आपके स्थान पर उनके अपने सर्जन को रख लूँ। उन्होंने यह बात दोहराई और वे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए इतने उत्सुक थे कि मेरे स्पष्ट इनकार के बावजूद बाहर जाते समय वे मुड़े और फिर से यह प्रस्ताव रखा।'

11 मई को गवर्नर ने एक उद्घोषणा जारी की जिसमें 'द्वीप पर रहने वाले किसी भी व्यक्ति को जनरल बोनापार्ट या उनके अनुचरों से पत्र-व्यवहार करने से प्रतिबंधित किया गया था। ऐसा करने पर उन्हें तत्काल गिरफ्तार करके उपयुक्त काररवाई की जाएगी।' सर हडसन लो की तेज नजरों से कुछ भी नहीं बच पाया। नेपोलियन ने कहा, ''गवर्नर ने अभी-अभी बरट्रैंड को एक निमंत्रण भेजा है कि जनरल बोनापार्ट लेडी मोइरा से मिलने के लिए प्लांटेशन हाउस आएँ। मैंने बरट्रैंड को कहा कि उसका कोई उत्तर न दें। यदि वे वाकई चाहते थे कि मैं उनसे मिलूँ तो वे प्लांटेशन हाउस को सीमा के भीतर रख सकते थे, लेकिन यह जानते हुए कि ऐसा चाहने पर मुझे एक रक्षक के अधीन होकर जाना होगा, ऐसा निमंत्रण भेजना मेरा अपमान करना था।''

इसके तुरंत बाद गठबंधन देशों की घोषणा आई और संसद के अधिनियमों द्वारा एक युद्धबंदी और यूरोप की शांति में बाधा पहुँचाने वाले व्यक्ति के रूप में नेपोलियन बोनापार्ट की नजरबंदी को उचित ठहराया गया था। इस विधेयक के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में पेश किए जाने पर उसके खिलाफ विरोध की दो आवाजें उठीं। ये थीं लॉर्ड हॉलैंड और ड्यूक ऑफ ससेक्स की। इन आधिकारिक दस्तावेजों में फ्रांसीसियों का गुस्सा शांत करने या उनका उत्साह बढ़ाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। अपनी अधीनता के अतिरिक्त नेपोलियन को अपने समर्थकों के असहनीय हास्य विनोदों से संतुष्ट होना पड़ता था। जैसा कि ऐसी परिस्थितियों में लोगों के साथ अकसर होता है, वे कभी-कभी आपस में असहमत होते थे और उनकी चिड़चिड़ाहट और गुस्से का कुछ हिस्सा अपने प्रमुख पर निकलता था। वे ऐसी छोटी-छोटी घटनाओं को दिल से लगा लेते थे। एक अवसर पर उन्होंने कड़वाहट से कहा, ''मैं जानता हूँ कि मेरा पतन हो गया है; लेकिन इसे तुम लोगों के बीच महसूस करना पड़ता है! मैं जानता हूँ कि व्यक्ति अकसर नासमझ और आक्रामकता की ओर झुका हुआ होता है। इसलिए जब मुझे अपने आप पर संदेह होता है तो मैं पूछता हूँ, क्या ट्यूलेरिये में मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जाता? यह मेरी परीक्षा है।''

नेपोलियन के समर्थकों और दूसरों ने सर हडसन लो के चरित्र को काला करने का भरसक प्रयत्न किया है और यह दिखाने की कोशिश की है कि उनका एकमात्र उद्देश्य नेपोलियन को परेशान करना और उनके जीवन को दयनीय बनाना था। अब हालाँकि इस बात पर सवाल उठाए जा सकते हैं कि सर हडसन लो सत्ताच्युत सम्राट् की निगरानी करने की नाजुक परिस्थिति में डाले जाने के लिए उपयुक्त व्यक्ति थे या नहीं, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि उस अधिकारी के द्वीप पर पहुँचने से बहुत पहले झगड़े और शिकायतें शुरू हो चुकी थीं और उन शिकायतों की प्रकृति यह बताती है कि उन बंदियों को संतुष्ट करना बहुत कठिन था। यह कहा गया है कि सम्राट् वहाँ पर बहुत बीमार थे। उन्हें बिना किसी सेवक के 'एक पिंजड़े में' बंदी किया गया था और उनके अनुचरों को उनसे दूर रखा गया था तथा उन्हें व्यायाम से वंचित कर दिया गया था। लास केसेस के जर्नल में कुछ पृष्ठ आगे हम सम्राट् को अच्छे स्वास्थ्य में पाते हैं और जैसे ही यह घोषणा की गई कि लोंगवुड उनके आगमन के लिए तैयार है, इस बात पर जोर दिया गया कि कारापाल उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध जाने के लिए विवश करना चाहते थे। वे अपना सर्वोच्च अधिकार दर्शाना चाहते थे, लोंगवुड में पेंट की गंध बहुत अप्रिय थी आदि। नेपोलियन स्वयं जाने के लिए तैयार थे और तब तो बहुत परेशान हो गए, जब काउंट बरट्रैंड और जनरल गौरगॉड लोंगवुड से इस सूचना के साथ

@BOOKHOUSE

आए कि वह स्थान अभी तक रहने योग्य नहीं है। उनकी नाराजगी इस बात से बढ़ गई कि बरट्रैंड और गौरगॉड द्वारा यह सूचना प्राप्त करने के कुछ ही मिनटों बाद काउंट मोंथोलन इस सूचना के साथ आए कि लोंगवुड में सबकुछ तैयार है। उन्हें शायद यह लगा कि उनके सहयोगी उनसे झूठ बोलकर उन्हें वे चीजें मानने के लिए प्रेरित कर रहे थे, जो उनकी अपनी सुविधा के अनुसार था। हमें यह भी देखना चाहिए कि वह व्यवस्थित विरोध जो सर हडसन लो के खिलाफ इतने विस्तार से चलाया गया, उसकी शुरुआत एडमिरल कॉकबर्न के सामने ही हो चुकी थी। उनसे मुलाकात करने से इनकार कर दिया जाता था; उन पर सनकी, घमंडी और गुस्ताख होने का आरोप लगाया गया और स्वयं नेपोलियन ने उसका नाम 'शार्क' रखा था। उनके अपने शांत स्वभाव ने ही शायद अधिक हिंसक घटनाओं को होने से रोका।

आखिरकार वह लकड़ी का घर आ गया और गवर्नर ने नेपोलियन से इस बात पर परामर्श करने के लिए उनकी प्रतीक्षा की कि उसे कैसे और कहाँ स्थापित किया जाए। बगल के एक कमरे में इस विवाद को सुनने वाले लास केसेस कहते हैं कि वह विवाद लंबा और शोरगुल से भरा था। वे नेपोलियन के शब्दों में इसका ब्योरा देते हैं और हमें उनके बयान की सर हडसन लो के वर्णन के साथ तुलना करने का लाभ मिलता है, जो उन्होंने 17 मई, 1816 को ब्रिटिश सरकार को सौंपा था। ये दोनों विवरण बहुत कम भिन्न हैं। नेपोलियन स्वीकार करते हैं कि वे आपे से बाहर थे कि उन्होंने उग्र भाव-भंगिमा के साथ गवर्नर का स्वागत किया, उन्हें गुस्से में देखा और घर के आने की उनकी सूचना का कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें कुछ नहीं चाहिए, न ही वे कुछ ग्रहण करेंगे, क्योंकि उन्हें लगता है कि उन्हें विष या तलवार से मौत के घाट उतारा जाना है। विष देना कठिन, होगा लेकिन उनके पास तलवार से ऐसा करने का उपाय है। उनके शरीर की पवित्रता को भंग नहीं किया जाना चाहिए और सैनिक उनके घर में न घुसें और उनके शव को न रौंदें। इसके बाद उन्होंने सर हडसन लो द्वारा उन्हें अपने घर में लेडी लुडन से मिलने का निमंत्रण दिए जाने का उल्लेख किया है और कहा कि 'जनरल' के संबोधन से उन्हें अपनी टेबल पर आमंत्रित करने से अधिक परिष्कृत क्रूरता की बात और नहीं हो सकती थी, ताकि उन्हें अपने अतिथियों के लिए उपहास या मनोरंजन का विषय बनाया जा सके। उन्हें उनको 'जनरल' बोनापार्ट बुलाने का क्या अधिकार था? उन्हें सर हडसन लो या दुनिया में और किसी के भी द्वारा उनके पद से वंचित नही किया जा सकता है। यदि लेडी लुडन उनकी सीमाओं के भीतर होतीं तो वे निश्चित रूप से उनसे मिलने की कृपा करते, क्योंकि वे किसी महिला के साथ कठोर शिष्टाचारों के लिए आग्रह नहीं करते, लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए था कि वे उस महिला को सम्मान दे रहे हैं। वे खुद को एक युद्धबंदी नहीं मानते, बल्कि वे अत्यंत घृणित विश्वासघात द्वारा अपनी वर्तमान स्थिति में पहुँचे हैं। कुछ और कहने के बाद उन्होंने उस घर, जहाँ उन्हें जाना था, का एक बार और जिक्र किए बिना गवर्नर को चलता कर दिया। इस बदकिस्मत घर के दुर्भाग्य का यहाँ उल्लेख किया जा सकता है। उसे बहुत विवादों के बाद खड़ा किया गया था, लेकिन यह दुर्भाग्यवश एक चारदीवारी और सजावटी रेलिंग से घिरा हुआ था। नेपोलियन के दिमाग में तत्काल यह बात आई कि यह किलेबंदी है; उन्हें यह समझाना कठिन था कि नाली और कटहरा उनकी सुरक्षा के लिए हैं। जैसे ही इस आपत्ति के बारे में पता चला, सर हडसन लो ने आदेश दिया कि जमीन को समतल किया जाए और रेलिंग हटा ली जाए, लेकिन इस काम के पूरा होने से पहले ही नेपोलियन का स्वास्थ्य इतना खराब हो गया कि उन्हें वहाँ से हटाने की अनुमति नहीं दी जा सकती थी और वे उस घर में कभी नहीं जा पाए।

ऐसा लगता है कि नेपोलियन को यह महसूस हो गया था कि उनका व्यवहार काफी आक्रामक था। उन्होंने कुछ

@BOOKHOUSE

दिनों बाद अपने अनुचरों के साथ मेज पर बैठे हुए यह स्वीकार किया कि उन्होंने बहुत बुरा व्यवहार किया था और किसी भी दूसरी स्थिति में वे अपने व्यवहार के लिए शर्मिंदा हो जाते। उन्होंने कहा, ''हो सकता है मुझे उन्हें थोड़ा क्रोध प्रदर्शित करते या जाते समय अपने पीछे दरवाजे को भड़ाक से बंद करते देखने की चाह रही हो।'' ये कुछ शब्द हमें नेपोलियन के स्वभाव का अच्छा परिचय देते हैं। वे प्रभुत्व दिखाना पसंद करते थे, लेकिन उनकी आक्रामक भाषा का जवाब शांति और अत्यंत धैर्य से दिया गया जिसकी उन्हें आदत नहीं थी और अपने गुस्से का कोई असर न होने पर वे बाद में और क्रोधित हो गए।

सर हडसन लो के साथ उनके विवादों के बारे में यहाँ दिए गए उदाहरण शायद पर्याप्त होंगे: लास केसेस, ओ 'मियरा और नेपोलियन के अन्य सहयोगियों द्वारा और भी बातें बताई गई हैं और उन्होंने भी हमेशा उन्हें आक्रामक बताया है। नेपोलियन ने स्वयं शांति के समय इस बात को स्वीकार किया है। 18 अगस्त, 1816 को गवर्नर के साथ सबसे हिंसक विवाद के बाद जिसने अंतत: दोनों पक्षों के बीच किसी भी शिष्टाचार की गुंजाइश को पूरी तरह खत्म कर दिया; उन्होंने माना कि उन्होंने गवर्नर के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया, क्योंकि उन्होंने बार-बार और जान-बूझकर उन्हें गुस्सा दिलाया और कहा कि सर हडसन लो ने कभी भी असम्मान प्रदर्शित नहीं किया। उन्होंने शायद सिर्फ यह किया कि वे अचानक वहाँ से चले जाते थे।

निर्वासितों को अपर्याप्त भोजन की आपूर्ति की बहुत शिकायतें की गईं और उनके द्वारा बार-बार यह आरोप लगाया गया कि उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है। कहा गया कि वाइन भी बहुत घटिया थी। इतनी खराब कि उसे पीना असंभव था और हर व्यक्ति को एक दिन में एक बोतल मिलती थी, जिसे लास केसेस हास्यास्पद रूप से कम बताते हैं। नेपोलियन ने मासिक अनुपातों में अपनी प्लेट को नष्ट करने का संकल्प लिया और चूँकि वे जानते थे कि ईस्ट इंडिया के कुछ कैप्टनों ने उस एक प्लेट के लिए एक सौ अशर्फी देने का प्रस्ताव किया है, ताकि उनकी स्मृति सँजोई जा सकें तो उन्होंने निश्चय किया कि जिसे बेचा जा रहा है, उसे तोड़ दिया जाना चाहिए। हथियारों को नष्ट कर दिया गया और ऐसा कोई निशान नहीं छोड़ा गया, जो यह दर्शा सकते हों कि वे कभी उनके रहे थे। केवल उन छोटे गरुड़ों को छोड़ दिया गया था, जो कुछ डिश कवरों पर कढ़े हुए थे। ये अंतिम चिह्न नेपोलियन के सहयोगियों के लिए सम्मान का विषय थे। उन्हें उदासी और धार्मिकता की भावनाओं से स्मृति चिह्न के रूप में देखा जाता था। जब प्लेट को तोड़ने का क्षण आया तो लास केसेस नौकरों की पीड़ा और दु:ख की भावनाओं के गवाह थे। वे जिन वस्तुओं को बड़ी चाहत के साथ लेकर आए थे, उन पर अपने सम्मान का हथौड़ा नहीं चला सकते थे।

वापसी यात्रा पर जा रहे ईस्ट इंडिया के जहाज नियमित रूप से सेंट हेलेना द्वीप पर आते थे, जो वहाँ पानी लेने और रक्षक सेना के इस्तेमाल के लिए गनपाउडर रखने के लिए रुकते थे। ऐसे अवसरों पर लोग अकसर उस प्रसिद्ध बंदी को देखने के लिए उत्सुक होते थे। ऐसी मुलाकातों का ध्यान रखा जाता था, ताकि नेपोलियन को अजनबियों की बेवकूफाना उत्सुकता से परेशानी न हो, जिसके प्रति उनकी बहुत अरुचि थी। जो लोग उनसे मिलना चाहते थे, उन्हें सबसे पहले गवर्नर को आवेदन देना पड़ता था, जो उनके नाम काउंट बरट्रैंड को भेजते थे। घर के ग्रैंड मार्शल के रूप में काउंट उन लोगों की प्रार्थना को नेपोलियन तक पहुँचाते थे और अनुकूल जवाब मिलने की स्थिति में मुलाकात का समय निर्धारित करते थे।

जिन लोगों से मिलने के लिए नेपोलियन तैयार होते थे, वे मुख्य रूप से उच्च पदस्थ और विशिष्ट लोग, दूरस्थ देशों के यात्री या विज्ञान की दुनिया में अपने आपको स्थापित करने वाले व्यक्ति होते थे, जो सम्राट् के अनुग्रह के

@BOOKHOUSE

बदले उन्हें दिलचस्प जानकारियाँ दे सकते थे। उनसे मिलनेवाले उनमें से कुछ लोगों ने अपनी बातचीत का वर्णन प्रकाशित किया है और सबने इन मुलाकातों में नेपोलियन द्वारा अत्यंत शालीनता, शिष्टता और सद्भावना के प्रदर्शन की बात कही है। उनके सवाल हमेशा अत्यंत कौशलपूर्ण और किसी ऐसे विषय पर होते थे जिनसे सामने वाला व्यक्ति सुपरिचित होता था, ताकि उसे कोई ऐसी नई और अनोखी जानकारी देने के लिए प्रेरित किया जा सके, जो उसके पास हो।

अगस्त, 1817 में लाइरा का प्रमुख रहते हुए कैप्टन बेसिल हॉल ने सम्राट् के साथ मुलाकात की जिनके बारे में वे कहते हैं, ''बोनापार्ट मुझे उन तसवीरों और अर्धप्रतिमाओं से काफी भिन्न लगे, जो मैंने देखी थीं। उनका चेहरा और शरीर काफी चौड़ा और चौकोर लग रहे थे—वास्तव में मेरे सामने जो भी वर्णन आया था, उससे अधिक बड़े थे उनका मोटापा, जो इस समय तक अत्यधिक माना जा रहा था, किसी भी तरह से अधिक नहीं था। इसके विपरीत उनकी चमड़ी कसी हुई और मजबूत लग रही थी। उनके गालों में रंग का नामोनिशान नहीं था। वास्तव में उनकी त्वचा आम चमड़ी के बजाय संगमरमर जैसी अधिक लग रही थी। उनके माथे पर झुर्रियाँ नहीं थीं और न ही उनके चेहरे के किसी भी हिस्से पर कोई शिकन थी। उनके स्वास्थ्य और स्फूर्ति में कोई कमी नहीं दिख रही थी। हालाँकि इस समय तक इंग्लैंड में आम तौर पर यह माना जाने लगा था कि वह बहुत से रोगों से ग्रस्त होकर तेजी से अस्वस्थ हो रहे हैं और उनकी ऊर्जा पूरी तरह खत्म हो चुकी है। उनका बोलने का लहजा कुछ धीमा, लेकिन पूरी तरह विशिष्ट था। वे अपने सवालों का जवाब सुनने में काफी धैर्य और सौम्यता दिखाते थे और पूरी बातचीत के दौरान काउंट बरट्रैंड का जिक्र सिर्फ एक बार हुआ। उनकी आँखों की चमक और कभी-कभार चकाचौंध कर देने वाली अभिव्यक्ति को अनदेखा नहीं किया जा सकता था। हालाँकि वह कोई स्थायी चमक नहीं थी, क्योंकि वह तभी उल्लेखनीय होती थी, जब वे खास दिलचस्पी वाली किसी बात से उत्तेजित होते थे। इससे अधिक सौम्यता प्रदर्शित करने की कल्पना नहीं की जा सकती। मैं उसे लगभग सहृदयता और दयालुता का प्रदर्शन कह सकता हूँ, जो पूरी बातचीत के दौरान उनकी विशेषताओं पर हावी रहा। इसलिए यदि वे इस समय खराब स्वास्थ्य और आत्मविश्वास की कमी से जूझ रहे थे तो अपने पर नियंत्रण करने की उनकी शक्ति आम धारणा से कहीं अधिक असाधारण थी, क्योंकि उनका पूरा बर्ताव, उनके बात करने का ढंग और उनके चेहरे की अभिव्यक्ति बिलकुल सही स्वास्थ्य और सहज मानसिक अवस्था का संकेत देती थी।''

ऐसे आगंतुकों के साथ यदा-कदा होने वाली मुलाकातों में नेपोलियन का व्यवहार उससे इतना अलग होता था, जो वे उन अधिकारियों के प्रति लगातार बरकरार रखते थे जिनकी कस्टडी में उन्हें रखा गया था। हम मुश्किल से यह संदेह कर पाते हैं कि वे इनमें से एक परिस्थिति में अभिनय कर रहे थे। मिस्टर इलीस ने अनुमान लगाया कि या तो वे अपनी अनवरत शिकायतों के द्वारा इंग्लैंड में अपनी दिलचस्पी बनाए रखना चाहते थे, जहाँ उनकी खुशफहमी थी कि एक पार्टी उनके अनुकूल है या उनके परेशान दिमाग को गवर्नर को चिढ़ाने में एक व्यस्तता मिलती थी। सर हडसन लो की ओर से सुलह करने का हर प्रयास परेशानी की नई वजह उत्पन्न करता था। वे फाउलिंग पीस लोंगवुड भेजते थे और उन्हें इसके बदले नेपोलियन का यह जवाब मिला कि जहाँ कोई खेल न हो, वहाँ फाउलिंग पीस भेजना उनका अपमान है। एक बॉल में आमंत्रित किए जाने पर फ्रांसीसी दल ने जोरदार नाराजगी जताई और आलोचना की। एक बार सर हडसन लो ने इंग्लैंड से आए ढेर सारे कपड़े और अन्य वस्तुएँ भिजवाईं, जो उनके विचार से लोंगवुड में काम आ सकते थे। इस पर काफी नाराजगी जताई गई। उन्होंने कहा कि उनसे कंगालों की तरह व्यवहार किया जा रहा है। उन वस्तुओं को गवर्नर के घर में ही रखा जाना था और

@BOOKHOUSE

सम्मानपूर्वक उस घर में एक सूची भेजी जानी थी, जिसमें यह कहा जाता कि यदि वे चाहें तो ये चीजें उनके इस्तेमाल के लिए भेजी जा सकती हैं।

ऐसा अनुमान पहले ही व्यक्त किया जा चुका है कि यह चिढ़ काफी हद तक नेपोलियन के सहयोगियों के आहत गर्व की वजह से थी, जो निश्चित रूप से उनसे अधिक दोषदर्शी थे। उन्होंने एक अवसर पर ओ' मियरा के साथ बातचीत में स्वयं इसे स्वीकार किया। उन्होंने कहा, ''निश्चित रूप से लास केसेस सर हडसन से बहुत चिढ़े हुए थे और मेरे दिमाग में मौजूद छवि बनाने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान

सेंट हेलेना के गवर्नर सर हडसन लो

दिया।'' उन्होंने लास केसेस के संवेदनशील मन को इसका जिम्मेदार ठहराया, जो उनके अनुसार नेपोलियन और अपने खिलाफ सभी बुरे व्यवहारों के प्रति विचित्र रूप से जागरूक था। सर हडसन लो ने भी यह बात महसूस की और एक से अधिक अवसरों पर यह टिप्पणी की कि उन्होंने नेपोलियन के सहयोगियों के मुकाबले नेपोलियन को अधिक समझदार पाया।

परेशानी का एक अनवरत स्रोत वह संकल्प था, इसके जो नेपोलियन ने किसी भी शर्त पर खुद को एक बंदी न मानने का लिया था। इसके साथ ही उन्होंने ऐसे नियमों को मानने से मना कर दिया था, जो उनकी दासता को कम कष्टदायक बना देते। किसी अधिकारी की उपस्थिति का नियम समाप्त करने का एक से अधिक बार प्रस्ताव दिया गया था, यदि वे प्रतिदिन एक बार मुलाकात करने को तैयार होते और बचने का कोई उपाय न करने का वादा करते। नेपोलियन ने कहा, ''यदि वे मुझे इस शर्त पर पूरा द्वीप भी सौंप देते कि मैं बचने का प्रयास न करने का वादा करूँ तो मैं उसे स्वीकार नहीं करता, क्योंकि वह अपने आपको बंदी मानने के बराबर होता। हालाँकि साथ ही मैं उस प्रकार का प्रयास नहीं करता। मैं यहाँ बलपूर्वक लाया गया हूँ, अधिकार से नहीं। यदि मुझे वाटरलू ले जाया जाता तो शायद मुझे कोई आपत्ति नहीं होती। हालाँकि उस स्थिति में भी वह देशों के कानून के खिलाफ होता, क्योंकि वहाँ अब कोई युद्ध नहीं चल रहा। यदि वे मुझे ऐसी ही शर्तों पर इंग्लैंड में रहने की अनुमति दें तो मैं उसे अस्वीकार कर दूँगा।''

चाहे एक पल के लिए, प्रतिदिन किसी अधिकारी के सामने खुद को प्रदर्शित करने का विचार नाराजगी के साथ अस्वीकार कर दिया गया था। वे अपने साथ एक भरी हुई पिस्तौल भी रखते थे, ताकि अपने एकांत में दखल देने वाले किसी भी व्यक्ति को गोली मार सकें। ओ' मियरा के जर्नल में एक टिप्पणी में कहा गया है कि 'सम्राट् इस विचार से इतना प्रभावित हुए थे कि उनके एकांत में बलपूर्वक दखल देने की कोशिश की जाएगी कि सर जॉर्ज कॉकबर्न के जाने के कुछ ही दिन बाद से वे अपने अपार्टमेंट में चार-पाँच जोड़ी भरी हुई पिस्तौलें और कुछ तलवारें रखने लगे थे जिससे वे अपनी इच्छा के विपरीत प्रवेश करने वाले को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्ध थे।' ऐसा लगता है कि यह दस्तूर उनकी मृत्यु तक जारी था।

नेपोलियन ने सुबह को अपने संस्मरण लिखवाना जारी रखा और शाम को वे पढ़ते हुए या बातचीत करते हुए बिताते थे। वे रेसीन के प्रशंसक हो गए, लेकिन उनके पसंदीदा कॉर्नील थे। उन्होंने दोहराया कि यदि वे उनके समय में रहे होते तो उन्हें राजकुमार बना दिया होता। उन्हें वॉल्टेयर में कोई रुचि नहीं थी और उन्होंने पाया कि वे अपने

@BOOKHOUSE1

नाटकों में भावनाओं के बजाय अपने विचार प्रदर्शित करते थे जो शायद सही था। उन्होंने उनके 'महोमत' की आलोचना की और कहा कि उन्होंने उसे सिर्फ एक धोखेबाज और तानाशाह बना दिया है और उसे एक महान् व्यक्ति के रूप में नहीं दिखाया। यह वॉल्टेयर के धार्मिक और राजनीतिक विद्वेषों के कारण था; क्योंकि जो लोग सामान्य पूर्वग्रहों से मुक्त होते हैं, वे उनके स्थान पर अपने अन्य पूर्वग्रहों को अपना लेते हैं, जिनके प्रति वे उतने ही कट्टर होते हैं और जिसे वे सभी अवसरों पर सामने ले आते हैं। जब पुस्तकों का सहारा लिए बिना शाम बातचीत में गुजर जाती थी तो वे उसे एक उपलब्धि मानते थे।

किसी ने जब सम्राट् से पूछा कि उन्होंने जो लड़ाइयाँ लड़ीं, उनमें सबसे महान कौन सी थी तो उन्होंने जवाब दिया कि यह पूछे बिना इस सवाल का जवाब देना मुश्किल है कि महान् लड़ाई से क्या तात्पर्य है। उन्होंने आगे कहा, ''मेरी लड़ाइयों को अलग से नहीं आँका जा सकता है। वे विस्तृत योजनाओं का एक हिस्सा थीं, इसलिए उन्हें उनके परिणामों से आँका जाना चाहिए। मरेंगो की लड़ाई जो इतने लंबे समय तक अनिर्णायक रही थी, ने हमें पूरी इटली पर कब्जा दिलाया। उल्म ने एक पूरी सेना का अस्तित्व समाप्त कर दिया; जेना ने पूरी पर्सियन राजशाही को हमारे कदमों में ला दिया। फ्रेडलैंड ने रूसी साम्राज्य का रास्ता हमारे लिए खोल दिया और एकमुल ने एक लड़ाई की नियति निर्धारित की। मोस्क्वा की लड़ाई में महानतम प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ और जिसके द्वारा हमें बहुत कम लाभ मिले। वाटरलू, जहाँ सबकुछ समाप्त हो गया, में यदि हमारे प्रयासों को सफलता मिलती तो फ्रांस बच जाता और यूरोप में शांति स्थापित हो जाती।''

@BOOKHOUSE1

वाटरलू की लड़ाई

मदाम मोंथोलन ने यह पूछा कि वे किस प्रकार के सैनिकों को बेहतरीन मानते थे तो सम्राट् ने जवाब दिया, ''जो विजयी होते हैं, मदाम!'' उन्होंने आगे जोड़ा, ''लेकिन सैनिक आप महिलाओं की तरह मनमौजी और चंचल होते हैं। बेहतरीन सैनिक हैनिबाल के नेतृत्व में कारथागिनियन, साइपियोस के नेतृत्व में रोमन, एलेक्जेंडर के नेतृत्व में मैकेडोनियन और फ्रेडरिक के नेतृत्व में पर्सियन थे।'' हालाँकि उन्होंने सोचा, फ्रांसीसी सैनिक उन अन्य लोगों में थे, जो सबसे आसानी से अपना बेहतरीन प्रदर्शन कर सकते थे। '40,000 या 50,000 की अपनी पूरी रक्षक सेना के साथ मैं यूरोप में विजय अभियान शुरू कर सकता था। शायद मेरी इटली और ऑस्टरलिट्ज की सेना जैसे बेहतर सैनिक उत्पन्न करना संभव है, लेकिन निश्चित रूप से उनसे उत्कृष्ट कोई नहीं हो सकता।''

वाटरलू की लड़ाई की वर्षगाँठ ने सम्राट् के ऊपर एक स्पष्ट प्रभाव डाला। ''वह दिन समझ से बाहर था!'' उन्होंने उदास होते हुए कहा; ''जैसी नियति के बारे में सुना नहीं था! ग्राउची, ने, द' एर्लन...क्या इसमें कोई विश्वासघाती था या यह बस एक दुर्भाग्य था? आह, बेचारा फ्रांस!'' यहाँ पर उन्होंने अपनी हथेलियों से अपनी आँखें ढक लीं। उन्होंने कहा, ''और फिर भी मनुष्य जितना कुछ कर सकता है, वह किया गया था! सबके सफल होने तक सबकुछ खत्म नहीं हुआ था।'' कुछ समय बाद, फिर से इस विषय को उठाते हुए उन्होंने कहा, ''उस असाधारण अभियान में एक सप्ताह से भी कम समय में मैंने तीन बार फ्रांस की निश्चित जीत को अपने हाथों से फिसलते देखा। यदि एक विश्वासघाती न होता तो मैं अभियान की शुरुआत में ही शत्रु को समाप्त कर देता। मैं लिग्नी में ही उसे नष्ट कर देता, यदि मेरी बाईं सेना ने सिर्फ अपना काम किया होता। मैं फिर उसे वाटरलू में हरा

देता, यदि मेरी दाहिनी सेना ने मेरी मदद की होती। सबसे बुरे परिणाम के बावजूद यह एक ऐसी हार थी, जिससे पराजित पक्ष का गौरव कम नहीं हुआ है।''

हम यहाँ वाटरलू की लड़ाई के बारे में नेपोलियन का अपना मत दे रहे हैं। उन्होंने कहा, ''एक इतिहासकार की नजरों में एक जनरल के रूप में लॉर्ड वेलिंगटन को युद्धनीति का कोई श्रेय नहीं मिलेगा। सबसे पहले तो उन्हें विभाजित सेनाओं के साथ लड़ाई में नहीं उतरना चाहिए था। उन्हें एकजुट होना चाहिए था और 15 से पहले डेरा डाल देना चाहिए था। इसके बाद मैदान का चयन गलत था, क्योंकि यदि वे हार गए होते तो वे पीछे नहीं जा सकते थे, क्योंकि उनके पीछे जंगल से केवल एक रास्ता जाता था। उन्होंने एक ऐसी गलती भी की, जो अभियान के शुरू होने से पहले या लड़ाई में उतरने से पहले ही उनकी सारी सेना के विनाश का कारण बन सकती थी। उन्होंने खुद को हैरानी में डाला। 15 को मैं शार्लरॉय में था और पर्सिया को हरा चुका था, जबकि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मैं उनके मुकाबले अड़तालीस घंटे का रणनीतिक लाभ प्राप्त कर चुका था और यदि मेरे कुछ जनरलों ने वह जोश और क्षमता दिखाई होती, जो उन्होंने अन्य अवसरों पर दिखाई थी तो मैं कोई युद्ध लड़े बिना उनकी सेना को छावनियों में ले जाता, लेकिन वे हतोत्साहित थे और उन्होंने मान लिया था कि उनके खिलाफ हर कहीं 1,00,000 लोगों की सेना है। मेरे पास सेना के छोटे-मोटे ब्योरों को खुद देखने का समय नहीं था। मैंने वेलिंगटन को चकित करने और कमजोर करने पर विस्तार से ध्यान दिया था। मुझे ग्यारह बजे बुलो के आगमन के बारे में जानकारी थी, लेकिन मैंने उसे महत्त्व नहीं दिया। मेरे पक्ष में तब भी सौ में से अस्सी मौके थे।

''अपने खिलाफ जोरदार सेनाओं के होने के बावजूद मुझे विश्वास था कि मैं जीत हासिल कर लूँगा मेरे पास लगभग 70,000 सैनिक थे, जिनमें से 15,000 घुड़सवार सैनिक थे। मेरे पास 260 तोपें भी थीं, लेकिन मेरे सैनिक इतने बेहतर थे कि मैं उन्हें 1,20,000 सैनिकों को हराने के काबिल समझता था। वैसे उन सभी सेनाओं में से मैं केवल अंग्रेजी सेना को ही अपनी सेना की बराबरी करने में समर्थ मानता था। दूसरों को मैं बहुत कम महत्त्व देता था। मैं मानता हूँ कि अंग्रेजी सेना में 35,000 से 40,000 सैनिक थे। उन्हें मैं अपने सैनिकों जैसा बहादुर और बेहतर समझता था। उस समय अंग्रेजी सेना महाद्वीप में प्रसिद्ध थी और इसके अलावा आपके देश में साहस और ऊर्जा है। जहाँ तक पर्सियन, बेल्जियन और दूसरों का प्रश्न है, मेरे आधे सैनिक उन्हें हराने के लिए काफी थे। मैंने पर्सियनों से निबटने के लिए केवल 34,000 सैनिक छोड़े। उस लड़ाई में हार के मुख्य कारण थे, सबसे पहले अपने आदेशों को लागू करवाने में ग्राउची की अत्यंत सुस्ती और लापरवाही; इसके बाद ग्रेनेडियर्स ए शेवाल और जनरल गुयो के नेतृत्व वाली घुड़सवार सेना जो मैंने रिजर्व में रखी थी और जिन्हें कभी भी मुझे नहीं छोड़ना था, को आदेशों या मेरी जानकारी के बिना युद्ध में लगा दिया गया; इसलिए आखिरी हमले के बाद जब सैनिक हार गए और अंग्रेजी घुड़सवार सेना आगे बढ़ी तो मेरे पास उनका मुकाबला करने के लिए वह घुड़सवार सेना, जिसे मैं उनकी संख्या के दुगने के बराबर समझता था, के स्थान पर घुड़सवार सेना का एक भी कोर नहीं था।

''इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने हमला किया, वे सफल हुए और सबकुछ समाप्त हो गया। एकजुट होने का कोई उपाय नहीं था। सबसे युवा जनरल ने सेना को पूरी तरह बिना किसी रिजर्व के छोड़ देने की गलती नहीं की होती, जो यहाँ विश्वासघात के रूप में की गई या नहीं, मैं कह नहीं सकता। वाटरलू की लड़ाई में हारने की दो मुख्य वजहें यही थीं।''

नेपोलियन ने आगे कहा, ''यदि लॉर्ड वेलिंगटन ने अपनी मोर्चाबंदी की होती तो मैं उन पर हमला नहीं करता। एक जनरल के रूप में उनकी योजना में कोई कौशल नहीं था। निश्चित रूप से उन्होंने बड़ा साहस और हठ

@BOOKHOUSE

दिखाया, लेकिन उसमें से भी थोड़ा श्रेय वापस लिया जा सकता है, जब आप इस पर विचार करते हैं कि उनके पास वापस जाने का कोई उपाय नहीं था और यदि वे ऐसा प्रयास करते तो उनकी सेना का एक भी आदमी नहीं बच पाता। पहली बात, वे मुख्य रूप से इस विजय के लिए अपने सैनिकों की दृढ़ता और साहस के ऋणी हैं, क्योंकि अंग्रेज बहुत बहादुरी और दृढ़ता के साथ लड़े। जीत का कोई श्रेय जनरल के रूप में उनके अपने व्यवहार को नहीं जाता है। इसके बाद जीत का श्रेय वेलिंगटन के मुकाबले ब्लूशर को अधिक दिया जाना चाहिए और जनरल के रूप में उन्हें अधिक महत्त्व मिलना चाहिए, क्योंकि पिछले दिन हार जाने के बावजूद उन्होंने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया और शाम में उन्हें मैदान में उतार दिया। हालाँकि मैं मानता हूँ कि वेलिंगटन अत्यंत दृढ़निश्चयी व्यक्ति हैं। ऐसी जीत का गौरव एक बड़ी बात है, लेकिन इतिहासकार की नजर में उनकी सैन्य प्रतिष्ठा को इससे कोई लाभ नहीं पहुँचेगा।''

एक दिन अल्जीयर्स के अभियान से उठी एक बातचीत में नेपोलियन ने ओ' मियरा से कहा, ''आपके नाविकों के बारे में मेरी राय हमेशा अच्छी रही थी। जब मैं साम्राज्ञी मारिया लुईसा के साथ हॉलैंड से लौट रहा था तो हम जिवेट में सुस्ताने के लिए रुके। रात में हवा और बारिश के साथ एक जोरदार तूफान आया, जिसने म्यूज को इतना लबालब भर दिया कि उसके ऊपर नावों का पुल बह गया। मैं वहाँ से निकलने के लिए चिंतित था और मैंने वहाँ मौजूद सभी नाविकों को एकत्रित होने का आदेश दिया, ताकि मैं नदी के पार जा सकूँ। उन्होंने कहा कि पानी इतना अधिक है कि दो या तीन दिन से पहले निकलना असंभव होगा। मैंने उनमें से कुछ से पूछताछ की और जल्दी ही मुझे पता चल गया कि वे असमुद्री नाविक थे, फिर मैंने याद किया कि बैरक में अंग्रेज बंदी थे और आदेश दिया कि उनमें से सबसे पुराने और बेहतरीन नाविकों को नदी के तट पर मेरे सामने लाया जाए। पानी बहुत अधिक था और लहरें तेज तथा खतरनाक थीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या वे कई नावों को साथ जोड़ सकते हैं, ताकि मैं पार हो सकूँ। उन्होंने जवाब दिया कि वह संभव था, लेकिन जोखिम भरा था। मैंने इच्छा प्रकट की कि वे तत्काल ऐसा करें। कुछ ही घंटों में वे ऐसा करने में सफल हो गए, जिसे दूसरों ने असंभव बता दिया था और मैं शाम खत्म होने से पहले ही पार हो गया। मैंने इस प्रयास में हाथ बँटाने वाले सभी लोगों को पैसे, कपड़े और उनकी आजादी दे दी। उस समय मर्चेंड मेरे साथ थे।''

दिसंबर, 1816 में लास केसेस को सेंट हेलेना छोड़ने के लिए विवश कर दिया गया। उन्होंने लुसियन बोनापार्ट को एक पत्र लिखा था और उन्हें यूरोप भेजने के लिए एक नीग्रो नौकर को सौंपा था। उन्हें पकड़ लिया गया। चूँकि वे इस प्रकार यूरोप के साथ गुप्त पत्र व्यवहार करने का प्रयास कर रहे थे (द्वीप के नियमों के खिलाफ)। लास केसेस और उनके पुत्र को वहाँ से पहले केप और फिर इंग्लैंड भेज दिया गया, जहाँ उन्हें भूमि पर सिर्फ डोवर और जहाज से ओस्टेंड भेजने की अनुमति दी गई।

सेंट हेलेना आने के कुछ ही समय बाद मदाम बरट्रैंड ने एक पुत्र को जन्म दिया और जब नेपोलियन उनसे मिलने गए तो उन्होंने कहा, ''मुझे आपके सम्मान में पहला फ्रांसीसी अधीन पेश करने का गौरव प्राप्त हो रहा है, जिसने लॉर्ड बैथर्स्ट की अनुमति के बिना लोंगवुड में प्रवेश किया है।'' आम तौर पर यह माना जाता है कि नेपोलियन प्रारब्ध में विश्वास करते थे। लास केसेस के साथ निम्नलिखित बातचीत स्पष्ट रूप से इस बिंदु को सिद्ध करती है।

उन्होंने कहा, ''क्या मुझे नियति में विश्वास करने वाला माना जाता है?''

''जी, हाँ, महामहिम! कम-से-कम कुछ लोग तो ऐसा मानते हैं।''

@BOOKHOUSE1

''चलो ठीक है! उन्हें जो अच्छा लगे, वह कहने दो, लेकिन लोग क्या हैं? तार्किक विचारों के बजाय बेवकूफाना बातों से उनका ध्यान आकृष्ट करना और उनकी कल्पनाओं को जगाना कितना आसान है, मगर क्या एक बुद्धिमान व्यक्ति एक पल के लिए भी ऐसे सिद्धांत को मान सकता है? नियति या तो स्वेच्छा के अस्तित्व को स्वीकार करती है या उसे खारिज करती है। यदि वह उसे स्वीकार करती है तो वह कैसे एक पूर्वनिश्चित परिणाम हो सकता है जिसे एक साधारण संकल्प, एक कदम, एक शब्द बदल सकता है या संशोधित कर सकता है? इसके विपरीत अगर नियति स्वेच्छा का अस्तित्व नहीं मानती तो यह एक और प्रश्न है। उस स्थिति में एक बच्चे को जन्म होते ही उसके पालने में फेंक देना चाहिए। उसकी जरा भी देखभाल करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यदि यह भाग्य में लिखा हुआ है कि उसे जीवित रहना है तो वह बिना भोजन के ही खुद बड़ा हो जाएगा। ऐसा सिद्धांत लगातार नहीं माना जा सकता है; नियति एक निरर्थक शब्द है।

''नियति का समर्थन करने वाले तुर्कों को भी इस सिद्धांत पर भरोसा नहीं था, क्योंकि यदि ऐसा होता तो तुर्की में दवाओं का अस्तित्व नहीं होता और तीसरे तल पर रहने वाला कोई व्यक्ति सीढ़ियाँ उतरने की जहमत नहीं उठाता, बल्कि तुरंत खिड़की से बाहर कूद जाता। देखिए कि इससे क्या-क्या बेवकूफियाँ हो सकती हैं।''

@BOOKHOUSE1

ये नेपोलियन के व्यक्तित्व की विशेषताएँ थीं। अपने सामान्य जीवन में और आम बातचीत में नेपोलियन भली-भाँति जानने वाले नामों को, यहाँ तक कि फ्रांसीसी नामों को भी बदल देते थे। हालाँकि किसी सार्वजनिक अवसर पर ऐसा कभी नहीं हुआ। टहलने के दौरान उन्हें कई बार कॉर्नील की ट्रेजडी में ऑगस्टस के प्रसिद्ध भाषण को दोहराते सुना गया और उन्होंने हमेशा यह कहा, 'बैठो साइला' जबकि वह सिनन्ना है। वे अपनी कल्पना के अनुसार अकसर नामों को बदल देते थे और एक बार वह नाम अपना लेने पर उनके दिमाग में बैठ जाता था, जबकि वे दिन में सैकड़ों बार उसका सही उच्चारण सुनते थे, लेकिन यदि दूसरे लोग उस नाम को उनके द्वारा बदले हुए रूप में इस्तेमाल करते तो वे ठिठक जाते। यही चीज वर्तनी के संबंध में भी थी। आमतौर पर वे उस पर ध्यान नहीं देते थे, लेकिन यदि उसकी प्रतियों में वर्तनी संबंधी कोई त्रुटि होती थी तो वे उसकी शिकायत करते थे।

एक दिन नेपोलियन ने लास केसेस से कहा, ''आपकी वर्तनी शुद्ध नहीं है, है न?'' इस सवाल से नजदीक खड़े एक व्यक्ति के चेहरे पर व्यंग्यपूर्ण मुसकराहट आ गई, जिसे लगा कि यह बात झिड़की देने के लिए कही गई है।

यह देखकर सम्राट् ने आगे कहा, 'कम-से-कम मुझे लगता है कि ऐसा नहीं है क्योंकि महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक कार्य में व्यस्त व्यक्ति, जैसे कि कोई मंत्री वर्तनी पर ध्यान नहीं दे सकता और इसकी आवश्यकता भी नहीं है। उनके विचार इतने तेज होने चाहिए कि हाथ उन्हें व्यक्त न कर सकें। उसके पास केवल जरूरी चीजों पर ध्यान देने का समय होता है; उसे वर्णों से शब्द और शब्दों से वाक्य बना देना चाहिए और बाकी चीजें लेखक के लिए छोड़ देनी चाहिए।' नेपोलियन वास्तव में प्रतिलिपिकों के लिए काफी काम छोड़ते थे। वे उनके लिए कष्टदायक थे। उनकी हस्तलिपि वास्तव में बहुत गूढ़ थी। अकसर वे खुद ही उन्हें नहीं समझ पाते थे। एक दिन लास केसेस का पुत्र 'इटली का अभियान' से एक अध्याय पढ़कर उन्हें सुना रहा था। अचानक वह लिखावट न पढ़ पाने की वजह से रुक गया। नेपोलियन ने कहा, ''यह नन्हा मूर्ख अपनी ही लिखावट नहीं पढ़ पा रहा है।''

@BOOKHOUSE1

''यह मेरी नहीं है, महामहिम!''

''फिर किसकी है?''

''महामहिम की।''

''तुम ऐसा कैसे कह सकते हो, नन्हे बदमाश! क्या तुम मेरा अपमान करना चाहते हो?'' सम्राट् ने पांडुलिपि अपने हाथ में ली, लंबे समय तक उसे पढ़ने की कोशिश की और अंत में यह कहते हुए उसे नीचे फेंक दिया कि ''वह ठीक कहता है; मैं खुद नहीं बता सकता कि क्या लिखा हुआ है।'' वे अकसर प्रतिलिपिकों को लास केसेस के पास वह समझने के लिए भेज देते थे, जिसे वे खुद समझने में असमर्थ होते थे।

अब हम नेपोलियन के जीवन के उस अंतिम दुखद काल पर पहुँच रहे हैं, जब उन्होंने पहली बार उस रोग की पीड़ा को महसूस किया जिसने आखिरकार उनकी जान ले ली। कुछ वर्षों से उनका रोग कभी-कभार अपनी मौजूदगी प्रकट करता रहा था, लेकिन हर अटैक के बाद उनका सामान्य स्वास्थ्य फिर लौट आता था और उसके घातक होने का संदेह किसी को नहीं था। हालाँकि स्वयं नेपोलियन ने कई बार कहा था कि उनकी मृत्यु पाइलोरस (जठरनिर्गम) के सिरस (कैंसर) से होगी। जिस रोग से उनके पिता की मृत्यु हुई थी और जिसके बारे में मोंटपेलियर के चिकित्सकों ने कहा था कि उनके परिवार में आनुवंशिक होगी। सन् 1818 के मध्य में यह महसूस किया गया कि उनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे और खराब होने लगा और ओ' मियरा ने गवर्नर को उनकी अवस्था के बारे में बताना उपयुक्त समझा। इन अवसरों पर भी नेपोलियन ने सम्राट् की पदवी के अपने दावे को बरकरार रखा। उन्होंने जोर दिया कि चिकित्सक को कोई भी सरकारी सूचना नहीं भेजनी चाहिए, जब तक कि उसमें उनको शाही पदवी से

संबोधित न किया गया हो। ओ' मियरा ने समझाया कि सरकार के निर्देशों और सर हडसन लो के आदेशों के कारण वे यह शब्द इस्तेमाल नहीं कर सकते; लेकिन उनका समझाना व्यर्थ था। कुछ कठिनाई के बाद इस बात पर सहमति हुई कि जनरल की पदवी, जिसकी वजह से इतनी मुसीबत थी, के बजाय 'रोगी' शब्द इस्तेमाल किया जाएगा और यह विकल्प इस कठिनाई को दूर करने में सफल रहा।

बाद में ओ' मियरा ने द्वीप के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. बैक्स्टर की सहायता लेने का प्रस्ताव रखा, जिसे नेपोलियन ने यह आरोप लगाते हुए तुरंत अस्वीकार कर दिया, ''यह सच है कि वे एक ईमानदार व्यक्ति लगते हैं, वे उस जल्लाद (लो) से अधिक जुड़े हुए हैं।'' उन्होंने दवाओं की सहायता लेने से भी मना करना जारी रखा और यह निश्चय किया कि वे बाहर जाकर व्यायाम नहीं करेंगे, जब तक कि वे संतरियों के अधीन होंगे। यह कहे जाने पर कि उनका यह निश्चय एक घातक रोग के उपचार में बाधक बन सकता है तो उन्होंने जवाब दिया, ''कम-से-कम मुझे यह तसल्ली रहेगी कि मेरी मृत्यु अंग्रेजी राष्ट्र के लिए एक शाश्वत कलंक का विषय होगा जिसने...के हाथों मरने के लिए मुझे इस जलवायु में भेज दिया।''

नेपोलियन के एकरस जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना ओ' मियरा को हटाया जाना थी, जो उनके द्वीप पर पहुँचने के समय से ही उनके चिकित्सक थे। उनको हटाया जाना भी उसी प्रकार के संदेह से प्रेरित था, जिसकी वजह से बीस महीने पहले लास केसेस को हटाया गया था यानी द्वीप से बाहर के लोगों से गुप्त पत्र व्यवहार।

नेपोलियन ने अपने चिकित्सक को हटाए जाने की कड़वाहट से शिकायत की। हालाँकि उन्होंने शायद ही कभी उनकी सलाह मानी हो और डॉ. बैक्स्टर की प्रस्तावित सहायता का अपना अपमान मानते हुए विरोध किया। उन्होंने आरोप लगाया कि गवर्नर उनके जीवन को अपनी मुट्ठी में रखना चाहते हैं। कुछ समय बाद एक नौसैनिक सर्जन डॉ. स्ट्रोक्स को बुलाया गया, लेकिन आखिरकार उन्हें हटा दिया गया और लोंगवुड में फ्रांसीसियों को सूचनाएँ पहुँचाने के आरोप में उनका कोर्ट मार्शल किया गया। इसके बाद नेपोलियन ने किसी भी अंग्रेज चिकित्सक से मुलाकात न करने का अपना निश्चय व्यक्त किया और ब्रिटिश मंत्रालय द्वारा कार्डिनल फेश से अनुरोध किया गया कि वे इटली के किसी प्रतिष्ठित चिकित्सक को चुनें, जिसे नेपोलियन की चिकित्सा के लिए सेंट हेलेना भेजा जा सके। इसके लिए एक युवा सर्जन डॉ. एंटोमार्शी को चुना गया, जिन्हें नेपोलियन की इच्छानुसार दो कैथोलिक पादरियों एब्बे बोनाविटा और विग्नाल तथा दो घरेलू नौकरों के साथ सेंट हेलेना भेज दिया गया। यह दल 10 सितंबर, 1819 को द्वीप पर पहुँचा।

पहली मुलाकात में सम्राट् एंटोमार्शी पर अपनी माता और परिवार, राजकुमारी जूली (जोसेफ की पत्नी) और ला केसेस, जिन्हें एंटोमार्शी ने फ्रैंकफोर्ट से गुजरते हुए देखा था, के बारे में सवालों की बौछार कर दी। कोरसिका में कभी उन्होंने पीछे हटने का जो इरादा किया था, उसके बारे में संतुष्टि से विस्तारपूर्वक बताया, डॉक्टर से उसके पेशे के बारे में कुछ बातचीत की और फिर अपनी बीमारी के ब्योरों पर अपना ध्यान लगाया।

जब वे लक्षणों की जाँच कर रहे थे, सम्राट् ने अपनी टिप्पणियाँ जारी रखीं। कभी-कभार वे गंभीर होती थीं, कभी-कभी जिंदादिल, उनके शब्दों और उनकी मुखमुद्रा में कभी दयालुता, कभी रोष और कभी प्रसन्नता की झलक होती थी। उन्होंने कहा, ''तो डॉक्टर, आपकी राय क्या है? क्या मैं राजाओं को और लंबे समय तक परेशान करने वाला हूँ?''

''आप उन्हें हरा देंगे महामहिम!''

''मैं तुम पर विश्वास करता हूँ। वे हमारी विजयकीर्ति को बंदी रखने में सफल नहीं हो पाएँगे। वह युगों तक कायम

@BOOKHOUSE

रहेगी, वह विजयी और विजित की घोषणा करेगा, जो लोग क्षमतावान थे और जो लोग नहीं थे; ये सब आने वाली पीढ़ियाँ फैसला करेंगी, मैं उसके निर्णय से नहीं डरता।''

''नहीं डॉक्टर! मैं इस भयावह जलवायु में लंबे समय तक नहीं टिक सकता।

''आपका बढ़िया गठन उसके हानिकारक प्रभावों के खिलाफ ढाल का काम करेगा।

''प्रकृति ने मुझे दिमाग की शक्ति बख्शी है, लेकिन एक सक्रिय जीवन से पूरी तरह एकांतवास ने सबकुछ नष्ट कर दिया है। मैं मोटा हो गया हूँ, मेरी ऊर्जा खत्म हो गई है और शरीर ढीला पड़ गया है।'' एंटोमार्शी ने ऐसी राय को नकारने की कोशिश नहीं की जिसका मजबूत आधार था, लेकिन बातचीत को दूसरे विषय की ओर घुमा दिया।

नेपोलियन ने कहा, ''मैं खुद को तुम्हारे हवाले करता हूँ। दवाओं को अपना काम करने दो, मैं उसके फैसले को स्वीकार करता हूँ। मैं अपने स्वास्थ्य को तुम्हारी देखभाल में सौंपता हूँ। मैंने जो आदतें अपना ली हैं, जिन चीजों के अधीन हो गया हूँ, वे तुम्हें बताना जरूरी समझता हूँ। मैं प्रकृति के आदेशों का आम तौर पर अत्यंत अनियमित रूप से पालन करता हूँ। मैं परिस्थितियों या मुझे जिस स्थिति में रखा गया है, उसके अनुसार सोता और खाता हूँ; मेरी नींद आम तौर पर गहरी और शांतिपूर्ण होती है। अगर दर्द या कोई दुर्घटना उसमें बाधा पहुँचाती है तो मैं बिस्तर से उठता हूँ, रोशनी की माँग करता हूँ, टहलता हूँ, काम में लग जाता हूँ और अपना ध्यान कहीं और लगा लेता हूँ; कभी-कभी मैं अँधेरे में ही रहता हूँ, दूसरे अपार्टमेंट में जाता हूँ, दूसरे बिस्तर पर सोता हूँ या सोफे पर पसर जाता हूँ। मैं सुबह दो, तीन या चार बजे उठता हूँ; मैं किसी को अपने साथ बुला लेता हूँ; यादों या काम से अपने आपको बहलाता हूँ और दिन निकलने का इंतजार करता हूँ। भोर होते ही मैं बाहर जाता हूँ, टहलता हूँ और जब सूरज निकलता है तो मैं फिर से अंदर जाता हूँ और फिर बिस्तर पर चला जाता हूँ, जहाँ मैं दिन जैसा भी हो, उसके अनुसार कम या लंबे समय तक रहता हूँ। यदि दिन बुरा होता है और मुझे परेशानी व असहजता महसूस होती है तो मैं उसी तरीके का सहारा लेता हूँ, जिसका मैंने अभी जिक्र किया। मैं अपनी मुद्रा बदलता हूँ, बिस्तर से सोफे पर चला जाता हूँ, सोफे से बिस्तर पर चला जाता हूँ, ताजगी पाने की कोशिश करता हूँ। मैं आपको अपने सुबह के पहनावे के बारे में नहीं बता रहा; उसका उन कष्टों से कोई लेना-देना नहीं है जो मैं सहता हूँ और इसके अलावा मैं आपको उसे खुद देखने की खुशी से वंचित नहीं करना चाहता। ये बढ़िया उपाय मुझे नौ या दस बजे या कभी-कभी उसके बाद तक व्यस्त रखते हैं; फिर मैं नाश्ता लाए जाने का आदेश देता हूँ, जो मैं समय-समय पर अपने स्नानघर में, लेकिन अकसर बगीचे में लेता हूँ। बरट्रैंड या मोंथोलन, अकसर दोनों मेरा साथ देते हैं। चिकित्सकों को भोजन नियंत्रित करने का अधिकार होता है; इसलिए यह उचित है कि मैं आपको अपने भोजन के बारे में बताऊँ तो वह है एक प्याला सूप, दो प्लेट मीट, एक प्लेट सब्जी, एक प्लेट सलाद जब मैं उसे खाने लायक हूँ; आधी बोतल क्लेरेट जिसे मैं ढेर सारा पानी मिलाकर पतला करता हूँ, मेरा पेय होता है; दावत के अंत में मैं उसे थोड़ा शुद्ध रूप में पीता हूँ। कभी-कभी जब मैं थकान महसूस करता हूँ, तो मैं क्लेरेट के बदले शैंपेन लेता हूँ; इससे पेट को थोड़ी ऊर्जा मिल जाती है।''

डॉक्टर द्वारा नेपोलियन के कम आहार पर आश्चर्य जताए जाने पर उन्होंने जवाब दिया, ''इटली की सेना के साथ हुई लड़ाइयों में मैं कभी भी अपने साथ एक वाइन की बोतल, थोड़ा ब्रेड और एक ठंडा मुरगा रखना नहीं भूलता था। यह रसद मेरे पूरे दिन के लिए पर्याप्त होती थी, बल्कि मैं कहूँगा कि मैं उसे दूसरों के साथ भी बाँटता था। इस तरह मुझे समय मिल जाता था। मैं तेजी से खाता हूँ, कम चबाता हूँ, मुझे भोजन करने में घंटों नहीं लगते। आपको यह बात अधिक पसंद नहीं आएगी, लेकिन मेरी वर्तमान अवस्था में उसका क्या महत्त्व है? मुझे लीवर की

@BOOKHOUSE

शिकायत है, एक ऐसा रोग जो इस भयावह जलवायु में आम है।''

सम्राट् का विश्वास जीतने के बाद एंटोमार्शी उनके चिकित्सक के साथ उनके साथी भी बन गए और कभी-कभार उनके साथ पढ़ते थे। वे समाचार पत्रों के आने पर उत्सुकता से उन्हें पलटते थे और स्वतंत्र होकर उनमें छपी सामग्रियों पर टिप्पणी करते थे। वे कहते, ''लोगों के दिल से मेरी तानाशाही भुलाने के लिए गठबंधन देशों द्वारा अपनाए गए बुद्धिमत्तापूर्ण उपायों को देखकर मुझे हैरत होती है!'' एक बार वे सामान्य से अधिक थकान महसूस कर रहे थे और रेसीन की 'एंड्रोमैक' पर रोशनी करते हुए उन्होंने पुस्तक हाथ में ली, पढ़ने लगे लेकिन जल्दी ही उनके हाथों से वह गिर गई। वह उस प्रसिद्ध अंश पर आ गए थे, जहाँ माँ इस बात का वर्णन कर रही है कि उसे दिन में एक बार अपने बेटे को देखने की इजाजत दी जाती है।

वे भावुक हो गए थे। उन्होंने अपने चेहरे को अपने हाथों से ढका और यह कहते हुए कि वह इससे बहुत प्रभावित हो गए हैं, अकेला छोड़ दिए जाने की इच्छा प्रकट की। वे शांत हो गए, सो गए और जागने के बाद फिर से एंटोमार्शी को बुलाए जाने की इच्छा जताई। वे शेव करने की तैयारी कर रहे थे और डॉक्टर इस काम को देखने के लिए उत्सुक थे। वे अपनी शर्ट में थे; उनका सिर खुला हुआ था, उनके दोनों ओर दो नौकर थे जिनमें से एक ने शीशा और एक तौलिया पकड़ा हुआ था और दूसरे ने बाकी सामान। सम्राट् ने अपने चेहरे के एक ओर साबुन लगाया, ब्रश नीचे रखा, अपने हाथ और मुँह धोए, गरम पानी में डूबा हुआ एक रेजर उठाया और दक्षता से दाहिनी ओर शेव किया। वे बोले, 'क्या यह ठीक है नोवराज?'

'जी, महामहिम!'

'चलो ठीक है, फिर दूसरी ओर। चलो दुष्ट, जल्दी से, सीधे खड़े रहो।' रोशनी बाईं ओर पड़ी जिसे झाग बनाने के बाद उन्होंने उसी प्रकार और उसी कुशलता से शेव किया। उन्होंने अपनी ठुड्डी पर हाथ फिराया, ''शीशा ऊपर करो। क्या मैं ठीक हूँ।''

''बिलकुल।''

''एक भी बाल मुझसे बच नहीं पाया। क्या कहते हो?''

''जी नहीं, महामहिम!'' सेवक ने जवाब दिया।

''नहीं! मुझे लगता है कि मुझे एक बाल दिख रहा है। शीशा ऊपर करो; उसे बेहतर रोशनी में रखो। तुम यह कैसे कर सकते हो, रास्कल! चापलूसी? तुम सेंट हेलेना में मुझे धोखा दे रहे हो? इस जगह? तुम भी बराबर के अपराधी हो।'' यह कहने के साथ उन्होंने उन दोनों को कान पर घूँसा मारा, हँसे और यथासंभव प्रसन्न लहजे में मजाक किया।

लोंगवुड में आने पर एंटोमार्शी को निर्वासितों द्वारा यथासंभव अधिक शत्रु बनाने के निश्चय की लगभग अविश्वसनीय बात का पता लगा। वे बताते हैं कि सर्जन के रूप में अपना कार्य शुरू करने की अनुमति मिलने से पहले उन्हें यह शपथ दिलाई गई कि वे अंग्रेजों के साथ कोई संपर्क नहीं रखेंगे और वे नेपोलियन की बीमारी के बारे में उन्हें कोई भी सूचना देने से परहेज करेंगे। जब तक उन्होंने यह शपथ नहीं ले ली, उन्हें उनके यशस्वी रोगी से मिलने की इजाजत नहीं दी गई। नेपोलियन के चिकित्सक को ऐसी शपथ दिलाने के बाद, उनके सहयोगियों को यह शिकायत, जो उन्होंने बाद में की, करने का कोई अधिकार नहीं था कि अंग्रेजी सरकार ने जान-बूझकर दुनिया से उनकी बीमारी के बारे में छिपाया। इस बात की अधिक संभावना है कि अपने आस-पास रहस्य और गोपनीयता बनाए रखने के अनवरत प्रयासों ने उनके वहाँ से बच निकलने के संदेह को उत्पन्न किया होगा, जिसकी वजह से

@BOOKHOUSE1

गवर्नर द्वारा उनकी निगरानी को और सख्त कर दिया गया होगा।

पादरियों के आने के तुरंत बाद नेपोलियन ने उनमें से एक को बिशप (धर्माध्यक्ष या बड़ा पादरी) का पद देने का निश्चय किया, जो हम मान सकते हैं कि कुछ मजाक में किया गया होगा और उन्होंने जुमना धर्मक्षेत्र को चुना। ''यूरोप से लाया गया अंतिम बक्सा खोल लिया गया है।'' एंटोमार्शी ने कहा; ''उसमें गुलदान और चर्च के सजावटी सामान हैं।''

''रुको!'' नेपोलियन ने कहा, ''यह सेंट पीटर की संपत्ति है; उसे ध्यान से सँभालो; एब्बे को बुलाओ—लेकिन एब्बे की बात करें तो क्या तुम जानते हो कि कार्डिनल कितना बेचारा है? वह मेरे पास मिशनरी और प्रचारक भेजता है जैसे कि मैं पश्चाताप करने वाला हूँ और जैसे कि उनके श्रेष्ठ पादरियों की एक पूरी कतार हमेशा मेरे गिरजाघर में न आई हों। मैं वह करूँगा, जो उन्हें करना चाहिए था; मेरे पास प्रतिष्ठापन का अधिकार है और मैं उसका इस्तेमाल करूँगा।'' एब्बे बोनाविटा ने उसी समय कमरे में प्रवेश किया, ''मैं आपको धर्माध्यक्ष का ताज देता हूँ।''

''महामहिम!''

''मैं यह आपको वापस देता हूँ। विधर्मियों के बावजूद आप इसे धारण करेंगे। वे फिर से यह आपसे नहीं ले पाएँगे।''

''किंतु महामहिम! मैं इसे वेलेंशिया जितना समृद्ध नहीं बना सकता, जो सुशे ने आपको दिया था, लेकिन किसी भी कीमत पर आपका पद युद्ध की संभावनाओं से सुरक्षित होगा। मैं आपको—देखने दो—जुमना का बिशप नियुक्त करता हूँ। वह नदी जो कई देशों से होकर बहती है, वे मेरे साथ समझौता करने की कगार पर थे—सब तैयार थे, सब मार्च करने जा रहे थे। हम इंग्लैंड को हराने ही वाले थे।'' अंत में काउंट मोंथोलन को एब्बे के लिए आवश्यक ड्रेस तैयार करवाने का आदेश दिया गया, ताकि सभी विधर्मियों को विस्मय में डाला जा सके। इस सबका अंत यह रहा कि नए बिशप के वैभव के एकमात्र अंश, उनकी ड्रेस के लिए आवश्यक सुर्ख लाल और बैंगनी रंग के कपड़े द्वीप में नहीं मिले और एब्बे अपने प्रतिष्ठापन के बावजूद एब्बे ही रहे और यह सारा स्वाँग भुला दिया गया।

कभी-कभार इस निर्वासन में हमें कुछ बेहतर माहौल देखने को मिलता है। जब वे तर्क को सुनते थे और उन कष्टों के बारे में कम सोचते थे, जो उनकी उस अवस्था से जुड़े हुए थे जिसमें उनकी महत्त्वाकांक्षा या जैसा कि वे स्वयं हमेशा दावे से कहते थे, उनकी किस्मत ने उन्हें पहुँचा दिया था। उन्होंने एक लंबे समय तक अपने आपको सभी प्रकार की कसरत से दूर रखा था, जैसा कि उन्होंने कहा था कि वे किसी अंग्रेज अधिकारी द्वारा साथ चलने या किसी संतरी द्वारा चुनौती दिए जाने की संभावना का अपमान सहने के लिए तैयार नहीं थे। एक दिन जब उन्होंने अपने निष्क्रिय जीवन की शिकायत की तो उनके चिकित्सक ने जमीन खोदने का व्यायाम बताया; नेपोलियन ने अपने जाने-पहचाने उत्साह से इस विचार को लपका। उनके शासर नोवराज, जो पहले ग्रामीण कामों के आदी थे, को मुख्य माली का सम्मान दिया गया और उनके निर्देशों के अनुसार, नेपोलियन ने बड़े उत्साह से काम करना शुरू किया। उन्होंने कुदाल के प्रयोग में अपनी नई हासिल दक्षता दिखाने के लिए एंटोमार्शी को बुलवाया। उन्होंने कहा, ''तो डॉक्टर, क्या आप अपने रोगी से संतुष्ट हैं? क्या वह आपका कहना मानता है? यह आपकी गोलियों से बेहतर हैं, डॉक्टर! अब आप मेरी चिकित्सा नहीं करेंगे।''

पहले वे जल्दी ही थक गए और अपने शरीर की कमजोरी और हाथों की नाजुकता की शिकायत की, लेकिन फिर कहा, ''कोई बात नहीं, मैंने हमेशा अपने शरीर को अपनी इच्छाशक्ति के आगे झुकने की आदत डाली है।''

@BOOKHOUSE1

उन्हें जल्दी ही अपना नया काम पसंद आने लगा और उन्होंने लोंगवुड के सभी निवासियों को इस काम में लगा लिया। यहाँ तक कि महिलाओं को भी काम से बचने में काफी कठिनाई हुई। वे उन पर हँसते थे, उनसे आग्रह करते थे, उनसे चिरौरी करते थे और खासकर मदाम बरट्रैंड के साथ अपनी अनुनय-विनय की सभी कलाओं का इस्तेमाल करते थे। वे उन्हें भरोसा दिलाते थे कि बागवानी का व्यायाम डॉक्टर के सभी नुस्खों से अधिक बेहतर है। वह वास्तव में उनका एक नुस्खा ही है, लेकिन इस मामले में उनकी वाक्पटुता विफल हो गई और उन्हें काफी अनिच्छा से महिला माली तैयार करने के अपने प्रयासों को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा।

इसकी क्षतिपूर्ति में उनके पास पुरुषों के रूप में इच्छुक श्रमिक थे। एंटोमार्शी कहते हैं, ''सम्राट् ने हमसे आग्रह किया, हमें उत्साहित किया और हमारे आस-पास हर चीज ने तुरंत एक भिन्न पक्ष ग्रहण कर लिया। वहाँ एक खाई थी, एक बेसिन या एक सड़क थी। हमने वहाँ उद्यान पथ बनाए, गुफाएँ, कैसकेड बनाए; जमीन में एक जान और विविधता आ गई। हमने घर के चारों ओर थोड़ी छाया देने के लिए विलो, बलूत और आड़ू के पेड़ लगाए। अपने श्रम का सजावटी हिस्सा पूरा करने के बाद हम उपयोगी हिस्से की ओर मुड़े। हमने जमीन को बाँटा; उसमें खाद डाली और उसमें ढेर सारे बीन्स, मटर और द्वीप पर उगने वाली हर सब्जी उगाई।'' इस मेहनत के क्रम में उन्होंने पाया कि पानी जमा करने के लिए एक टंकी बहुत उपयोगी होगी, पानी को 3,000 फीट की दूरी पर स्थित एक झरने से पाइपों द्वारा लाया जा सकता था।

इस मेहनत के प्रयास के लिए अतिरिक्त मानव शक्ति की बहुत आवश्यकता थी और चीनियों का एक दल उनकी मदद के लिए तैयार था। ये लोग नेपोलियन के काम करने के कपड़ों को देखकर बहुत हँसते थे, जो एक जैकेट और बड़े ट्राउजर्स थे जिसके साथ उन्हें धूप से बचाने के लिए एक बड़ा-सा स्ट्रॉ हैट और सैंडल थे। वे धूप से परेशान होने वाले बेचारे लोगों पर तरस खाते थे और उन्होंने हर किसी को अपने जैसा एक बड़ा हैट उपहार में दिया। काफी मेहनत के बाद बेसिन तैयार हुआ, पाइप बिछाए गए और उसमें पानी बहने लगा।

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन ने अपने तालाब को गोल्ड फिश से भर दिया, जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से उसमें रखा। वे लगातार कई घंटों तक तालाब के पास रहते, जबकि उस समय वे इतने कमजोर थे कि वे मुश्किल से अपने आपको सँभाल पाते थे। वे मछलियों के करतब देखते हुए, उन्हें ब्रेड खिलाते हुए, उनके तरीकों को ध्यान से देखते हुए, उनके प्रेम और उनके झगड़ों में दिलचस्पी लेते हुए और उनके तथा मनुष्य के उद्देश्यों में समानता की बातें खोजने का प्रयास करते हुए अपना दिल बहलाते थे। वे अकसर अपनी खोजें बताने के लिए अपने सहयोगियों को बुलवाते थे और कोई भी विचित्र बात महसूस होने पर उन्हें बताते थे। आखिरकार उनके पसंदीदा जीव बीमार पड़ गए, तड़पे, पानी पर ऊपर आ गए और एक के बाद एक मर गए।

वे इससे बहुत भावुक हो गए और एंटोमार्शी से बोले, ''आप अच्छी तरह देख सकते हैं कि मेरे साथ एक दुर्भाग्य जुड़ा हुआ है। मैं जिस भी चीज से प्रेम करता हूँ, जो भी चीज मेरी होती है, वह अचानक नष्ट हो जाती है। ईश्वर और मनुष्य साथ मिलकर मेरे खिलाफ हो जाते हैं।'' इस समय से वे बीमारी या खराब मौसम के बावजूद रोज उन्हें देखने जाते थे और उनकी बेचैनी तब तक खत्म नहीं हुई, जब तक कि यह पता नहीं चल गया कि जिस तांबई सीमेंट से बेसिन का प्लास्टर किया गया था, उसने पानी को जहरीला कर दिया। जो मछलियाँ अब तक नहीं मरी थीं, उन्हें वहाँ से निकालकर एक टब में डाल दिया गया।

नेपोलियन पशुओं की प्रवृत्तियों को ध्यान से देखने और उनके व्यवहार तथा प्रवृत्तियों की मनुष्यों से तुलना करने में अनोखी दिलचस्पी लेते थे। बारिश में एक दिन जब टंकी की खुदाई जारी नहीं रखी जा सकती थी, उन्हें बहुत सी

चींटियों का व्यवहार देखने का मौका मिला, जो उनके शयनकक्ष में घुस आई थीं और आम तौर पर चीनी रखी जाने वाली एक मेज पर चढ़कर चीनी के बरतन को कब्जे में ले लिया। वे उन मेहनती छोटे जीवों की योजनाओं में बाधा नहीं डालना चाहते थे, लेकिन वे जब-तब चीनी को इधर से उधर कर देते, उनके प्रयासों को देखते और चीनी को फिर से पाने तक चींटियों की गतिविधि और उद्यम की सराहना करते। ऐसा करने में चींटियों को कभी-कभी दो-तीन दिन लगे, लेकिन अंत में वे हमेशा सफल हुईं। इसके बाद उन्होंने बरतन को पानी से घेर दिया, लेकिन चींटियाँ फिर भी चीनी तक पहुँच गईं। अंत में उन्होंने सिरके का सहारा लिया और चींटियाँ इस नए अवरोध को पार नहीं कर पाईं, लेकिन अब तक उनका दिमाग जो कुछ सक्रिय था, जल्दी ही बीमारी की कमजोरी और उदासी से भर गया। हालाँकि कभी-कभी सकारात्मक पीड़ा और निराशा के अंतराल आते रहते थे।

सन् 1820 का अंत आते-आते उन्हें चलने में कठिनाई होने लगी और अपने बगीचे में किसी कुरसी तक पहुँचने के लिए भी उन्हें किसी की मदद लेनी पड़ती थी। वे कुछ भी करने में लगभग अक्षम हो गए; उनके पैरों में सूजन आ गई, कमर और पीठ का दर्द बढ़ गया; उन्हें मितली, काफी पसीना आने और भूख की कमी की शिकायतें हो गईं। वे अकसर अचेत हो जाते थे।

एक दिन उन्होंने कहा, ''डॉक्टर, मेरा अंतिम समय आ गया है। मुझमें अब कोई ऊर्जा और ताकत नहीं बची है, मैं बोझ से झुक गया हूँ...मैं जा रहा हूँ। मुझे लगता है कि मेरा समय आ गया है।''

कुछ दिनों बाद जब वे अपने काउच पर लेटे हुए थे, उन्होंने भावुकता से एंटोमार्शी के सामने उस बड़े परिवर्तन को अभिव्यक्त किया, जो उनके अंदर आया था। उन्होंने कुछ पलों के लिए अतीत को याद किया और अपनी पुरानी ऊर्जा की तुलना उस कमजोरी से की जिसमें वे डूबे जा रहे थे।

अपनी बहन एलिसा की मृत्यु की खबर ने भी उन्हें बहुत आहत किया। अपनी भावनाओं से संघर्ष करने के बाद जिसने उन्हें लगभग अभिभूत कर दिया था। वे उठे, एंटोमार्शी की बाँहों का सहारा लिया और बोले, ''तो डॉक्टर! देखो एलिसा ने अभी-अभी मुझे रास्ता दिखाया है। मौत, जो लगता है मेरे परिवार को भूल गई थी, उसने अब हमला करना शुरू कर दिया है; मेरी बारी बहुत दूर नहीं होगी। क्या कहते हो?''

''महामहिम को कोई खतरा नहीं है। आपके करने के लिए अब भी कुछ महान् काम हैं।''

''आह, डॉक्टर! मेरे पास न तो ताकत है, न क्षमता और न ऊर्जा; मैं अब नेपोलियन नहीं रहा। आप व्यर्थ मुझे दिलासा दे रहे हैं, खत्म होने वाली जिंदगी को वापस बुला रहे हैं। आपकी देखभाल किस्मत के आगे बेकार है—वह अमिट है—उसके फैसलों के आगे कोई अपील नहीं होती। एलिसा के बाद मकबरे में जाने वाला हमारे परिवार का अगला व्यक्ति होगा महान् नेपोलियन, जिसका अस्तित्व लगभग खत्म हो चुका है, जो अधीनता से झुका हुआ है और जो इसके बावजूद अब भी यूरोप को डराकर रखता है। देखो, मेरे अच्छे दोस्त! मैं किस तरह अपनी स्थिति को देखता हूँ! मेरे लिए सब खत्म हो चुका है। मैं फिर कहता हूँ, जल्दी ही इस अप्रिय पहाड़ी पर मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा।''

एंटोमार्शी कहते हैं, ''हम उनके चैंबर में लौट आए। नेपोलियन बिस्तर पर लेट गए। मेरी खिड़कियाँ बंद कर दो।'' उन्होंने कहा, ''मुझे अकेला छोड़ दो; मैं बाद में आपको बुला लूँगा। आराम कितनी आनंददायी चीज होती है! मैं दुनिया के किसी भी सिंहासन के लिए इसे नहीं छोड़ सकता! क्या बदलाव है! मैं कितना कमजोर हो गया हूँ! मैं, जिसकी गतिविधि असीम थी, जिसका दिमाग कभी सुस्त नहीं होता था, अब एक निश्चेष्ट मूर्च्छा में डूब गया हूँ। इतना कि अपनी पलकें उठाने के लिए भी कोशिश करनी पड़ती है। कभी-कभी मैं चार या पाँच सचिवों को

@BOOKHOUSE1

लिखवाता था, जो उतनी तेज गति से लिखते थे, जितना तेज शब्दों को बोला जा सकता था, लेकिन तब मैं नेपोलियन था—अब मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरी ताकत, मेरी क्षमता ने मुझे त्याग दिया है। मैं जीवित नहीं हूँ—बस खुद को ढो रहा हूँ।''

इस समय नेपोलियन का अस्तित्व स्पष्ट रूप से अंत की ओर जा रहा था; उनके दिन गिनती के थे। हर समय और दिन दु:खदायी चुप्पी में गुजरता था या दर्द में बीतता था, साथ ही कष्टदायक खाँसी होती थी और मृत्यु के पास आने के सभी दु:खद संकेत नजर आते थे। उन्होंने 22 जनवरी, 1821 को लोंगवुड के आस-पास कुछ मील सफर करने की आखिरी कोशिश की, लेकिन उसने उनकी ताकत निचोड़ ली और उस समय से उनकी एकमात्र कसरत कलेश (एक प्रकार का वाहन) में होती थी। यह हलकी गति भी जल्दी ही थकाऊ होने लगी।

अब वे अपने कमरे में ही रहते थे और बाहर नहीं निकलते थे। उनकी बीमारी और कमजोरी उनके ऊपर हावी होने लगी। वे अब भी खा सकते थे, लेकिन बहुत कम और उनकी भूख बिलकुल ही खत्म हो चुकी थी। वे बोले, ''आह! डॉक्टर, मैं कितना दु:ख उठा रहा हूँ। तोप के गोलों ने मुझे इस तरह मरने के लिए क्यों बख्श दिया? मैं कितना सक्रिय था, कितना सचेत, अब मुश्किल से अपनी पलकें उठा सकता हूँ!''

17 मार्च से उनकी स्थिति और बिगड़ने लगी और एंटोमार्शी जो काफी चिंतित हो गए थे,उन्होंने थोड़ी कठिनाई से एक अंग्रेज फिजीशियन से मिलने की अनुमति हासिल की। उन्होंने 26 मार्च को 20वीं रेजीमेंट के डॉ. अर्नोट से परामर्श किया; लेकिन नेपोलियन अब भी दवा लेने से इनकार कर रहे थे और अकसर अपनी पसंदीदा कहावत दुहराते रहते थे—'जो भी होना है, वह लिखा हुआ है; एक समय निर्धारित है और प्रकृति के विरुद्ध समय से एक भी पल चुराना हमारे बस में नहीं है।'

@BOOKHOUSE1

उनकी हालत और बिगड़ती रही और अंत में वे डॉ. अर्नोट से मिलने के लिए तैयार हुए, जो पहली बार 1 अप्रैल को देखने आए। उन्हें रोगी के चैंबर में ले जाया गया, जहाँ अँधेरा था और जिसमें नेपोलियन कोई रोशनी नहीं लाने देते थे। डॉक्टर ने उनकी नब्ज और अन्य लक्षणों को देखा और फिर उन्हें अगले दिन आने को कहा गया। नेपोलियन अब अपनी मौत के बहुत करीब थे। हालाँकि वे कभी-कभी अपनी जानी-पहचानी वाक्पटुता और तेजी के साथ बोलते थे, लेकिन उनका दिमाग स्पष्ट रूप से सुस्त हो रहा था। कहा जाता है कि एक धूमकेतु के दिखने को उनकी मृत्यु का संकेत मान लिया गया। वे रोमांचित होकर भावनाओं में बहते हुए बोले, ''धूमकेतु! वह सीजर की मृत्यु का पूर्वसंकेत था।''

3 अप्रैल को बीमारी के लक्षण इतने चिंताजनक हो गए कि एंटोमार्शी ने बरट्रैंड और मोंथोलन को सूचित कर दिया कि उनके अनुसार नेपोलियन खतरे में हैं और नेपोलियन को अपनी स्थिति सुधारने के लिए कदम उठाने की जरूरत है। अब वे बुखार और उग्र प्यास की चपेट में थे, जो अकसर रात को उनकी नींद में बाधा डाल देती थी।

14 अप्रैल को नेपोलियन ने खुद को थोड़ी बेहतर स्थिति में पाया और डॉ. अर्नोट से मार्लबोरो के लाभों पर चर्चा की। वे चाहते थे कि मार्लबोरो के अभियान 20वीं रेजीमेंट को भेंट किए जाएँ और उन्हें पता चला कि उनके पुस्तकालय में उसकी एक भी प्रति नहीं है।

15 अप्रैल को नेपोलियन के दरवाजे मोंथोलन और मर्चेंट को छोड़कर सभी के लिए बंद थे और ऐसा लगा कि वे अपनी वसीयत तैयार कर रहे थे। 19 अप्रैल को वे बेहतर थे, दर्द ठीक था, वे बैठे और थोड़ा भोजन किया। वे अच्छे मूड में थे और चाहते थे कि उन्हें पढ़कर सुनाया जाए। जब जनरल मोंथोलन ने अन्य के साथ इस सुधार पर संतोष जाहिर किया तो वे सौम्यता से मुसकराए और कहा, ''आप अपने आपको छल रहे हैं, मित्रो! यह सच है कि

मैं कुछ बेहतर हूँ, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरा अंत निकट है। जब मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँगा तो आपको यूरोप लौटने की सांत्वना मिलेगी। कोई अपने रिश्तेदारों से मिलेगा, कोई अपने मित्रों से और जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं एलीसियन फील्ड्स के अपने बहादुर साथियों से मिलूँगा।'' उन्होंने अपनी आवाज ऊँची करते हुए आगे कहा, ''क्लेबर, डिसेक्स, बेसियेरेस, डुरोक, नेय, मुराट, मैसेना, बर्थियेर—सभी मेरा स्वागत करने आएँगे। हमने साथ मिलकर जो किया था, उसके बारे में वे मुझसे बात करेंगे। मैं अपने जीवन की नवीनतम घटनाओं के बारे में उन्हें बताऊँगा। मुझे देखकर वे एक बार फिर उत्साह और प्रसन्नता से भर जाएँगे। हम साइपियोस, हैनिबॉल, सीजर और फ्रेडरिक के साथ अपने युद्धों पर चर्चा करेंगे—उसमें एक संतुष्टि होगी।'' उन्होंने कड़वाहट से हँसते हुए आगे कहा, ''यदि नीचे लोग इतने सारे योद्धा एक साथ जुटने पर चिंतित न हों!''

जब वे बोल रहे थे, उस दौरान डॉ. अर्नोट अंदर आए। उन्होंने डॉ. अर्नोट से उस उपचार की बात की, जो उन्हें इंग्लैंड से मिला, कहा कि इंग्लैंड ने उन्हें बंदी बनाने में हर अधिकार का उल्लंघन किया है, क्योंकि उनका रूस, ऑस्ट्रिया या यहाँ तक कि पर्सिया में बेहतर उपचार होता, लेकिन उन्हें मरने के लिए सेंट हेलेना के भयावह पथरीले द्वीप पर भेज दिया गया,। उन्हें जान- बूझकर उस अनजान द्वीप के निवास न करने योग्यस्थान पर रखा गया और छह वर्षों तक बंदी बनाकर रखा गया। उन्होंने कहा कि सर हडसन लो उनके लिए जल्लाद थे। उन्होंने इन शब्दों के साथ अपनी बात खत्म की, ''आपका अंत वेनिस के महान् गणतंत्र की तरह होगा और मैं, अपने प्रियजनों से दूर और हर चीज से वंचित, इस भयावह पहाड़ी पर मरते हुए अपनी मृत्यु का कलंक और त्रास इंग्लैंड के शाही परिवार को वसीयत में दे जाऊँगा।''

21 अप्रैल को नेपोलियन ने उपस्थित पादरी को इस बारे में निर्देश दिए कि मरने के बाद उन्हें किस स्थिति में लिटाया जाए और उन्होंने गंभीरता से हर विषय में सूक्ष्म निर्देश दिए। इसके बाद उन्होंने घोषित किया कि वे कैथोलिक जन्मे थे इसलिए कैथोलिक के रूप में ही मरेंगे। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उनके शरीर के पास कैथोलिक प्रार्थना की जाए और उनको दफनाए जाने तक प्रतिदिन प्रथागत रस्में की जाएँ। उनके चेहरे की भावना गंभीर और आक्षेपात्मक थी। उन्होंने एंटोमार्शी को अपनी ओर देखते देखा, जब उनकी आँखों ने कुछ संकेत पकड़े जिसने उन्हें अप्रसन्न कर दिया, ''आप इन कमजोरियों से ऊपर हैं, लेकिन आपके पास क्या होगा? मैं न तो दार्शनिक हूँ, न ही चिकित्सक। मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ; मैं अपने पूर्वजों के धर्म का हूँ, हर कोई नास्तिक नहीं हो सकता।''

फिर पादरी की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, ''मैं कैथोलिक धर्म में पैदा हुआ था। मैं उस धर्म से संबंधित कर्तव्यों को पूरा करना चाहता हूँ और उससे मिलने वाली सहायता लेना चाहता हूँ। आप साथ के गिरजाघर में प्रतिदिन प्रार्थना करेंगे और आप चालीस घंटों तक पवित्र संस्कार करेंगे। मेरी मृत्यु के पश्चात् आप अंतिम संस्कार वाले चैंबर में वेदी को मेरे सिर पर रखेंगे, आप प्रार्थना करना जारी रखेंगे और सभी रस्में अदा करेंगे, आप नहीं रुकेंगे, जब तक कि मुझे जमीन में दफना न दिया जाए।''

एब्बे (विन्याल) चले गए; नेपोलियन ने अपने साथी देशवासी को उनके कल्पित भोलेपन के लिए धिक्कारा, ''क्या आप इस बिंदु को स्पष्ट कर सकते हैं? क्या आप ईश्वर में अविश्वास कर सकते हैं? हर चीज उसके अस्तित्व को दर्शाती है और इसके अलावा महान् लोगों ने भी यह माना है।''

''लेकिन महामहिम, मैंने कभी उस पर उँगली नहीं उठाई। मैं बुखार की जाँच कर रहा था; महामहिम ने अपनी कल्पना में मेरे चेहरे पर ऐसे भाव देखे, जो उन्होंने नहीं देखें।''

@BOOKHOUSE

''आप चिकित्सक हैं, डॉक्टर!'' उन्होंने हँसते हुए जवाब दिया, ''ये लोग सिर्फ विषय से परिचित होते हैं; वे इससे परे किसी चीज में विश्वास ही नहीं करते।''

25 अप्रैल की शाम को वे बेहतर थे; लेकिन अकेला छोड़ दिए जाने पर अचानक उन्हें खाने की बात सूझी। उन्होंने फल, वाइन मँगाया, एक बिस्कुट खाने की कोशिश की, फिर थोड़ा शैंपेन पिया, कुछ अंगूर खाए और जैसे ही उन्होंने एंटोमार्शी को लौटते देखा, उन्हें हँसी का दौरा पड़ा। चिकित्सक ने डेजर्ट को वापस भेजा; लेकिन शरारत हो चुकी थी, बुखार लौट आया और उग्र हो गया। सम्राट् अब मृत्युशैया पर थे, लेकिन उन्होंने हर किसी के लिए चिंता जताई। उन्होंने एंटोमार्शी से पूछा, ''क्या अंग्रेज चिकित्सक के लिए 500 गिनी पर्याप्त होंगी और क्या वे खुद मारिया लुईसा के चिकित्सक का काम करना चाहेंगे? वह मेरी पत्नी है, यूरोप की पहली पिंरसेस और मेरे बाद आपको किसी और की देखभाल नहीं करनी चाहिए।'' एंटोमार्शी ने अपनी स्वीकृति व्यक्त की। तेज प्यास और पैर ठंडे होने के साथ बुखार लगातार जारी रहा।

27 अप्रैल को उन्होंने छोटे चैंबर से बैठक में जाने का फैसला किया। वे उन्हें उठाकर ले जाने की तैयारी कर रहे थे। ''नहीं!'' उन्होंने कहा, ''जब तक मेरी मौत नहीं हो जाती, तब तक नहीं; फिलहाल मुझे बस सहारे की जरूरत है।''

27 और 28 अप्रैल के बीच सम्राट् ने एक बहुत बुरी रात गुजारी। बुखार बढ़ गया, उनके हाथ-पैर ठंडे हो गए, उनकी ताकत समाप्त हो चुकी थी। उन्होंने एंटोमार्शी से प्रोत्साहन के कुछ शब्द कहे, फिर बिलकुल शांति और धैर्य के स्वर में उन्होंने निम्नलिखित निर्देश दिए, ''मेरी मृत्यु के बाद, जो अब बहुत दूर नहीं है, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे शरीर को खोलें। मैं यह भी चाहता हूँ कि आप किसी अंग्रेज चिकित्सक को मेरा शरीर स्पर्श नहीं करने दें, फिर भी, यदि किसी की मदद लेना अपरिहार्य हो तो मेरी इच्छा है कि आप सिर्फ डॉ. अर्नोट को इस काम में लगाएँगे। इसके अलावा मैं चाहता हूँ कि आप मेरा हृदय निकाल लें, उसे वाइन के घोल में रखें और उसे मेरी प्यारी मारिया लुईसा के पास पर्मा ले जाएँ। आप उनसे कहेंगे कि मैंने उनसे कितना अधिक प्रेम किया है कि मेरा प्रेम उनके लिए कभी खत्म नहीं हुआ और आप उन्हें मेरी स्थिति और मेरी मृत्यु से संबंधित सभी बातों की रिपोर्ट देंगे, जो आपने देखी हैं। सबसे ऊपर मैं सिफारिश करता हूँ कि आप सावधानी से मेरे पेट की जाँच करें और उसकी विस्तृत रिपोर्ट दें, जो आप मेरे पुत्र को बताएँ। मुझे जितना वमन हुआ, उससे मुझे यह लगता है कि मेरा पेट मेरे सबसे क्षतिग्रस्त अंगों में से है और मुझे लगता है कि वह उस रोग से पीड़ित है जिसने मेरे पिता को कब्र में पहुँचा दिया—मेरा मतलब है निचले पेट का कैंसर। आप क्या सोचते हैं?''

अपने चिकित्सक को हिचकिचाते देख उन्होंने अपनी बात जारी रखी, ''मुझे तब यह संदेह हुआ जब यह बीमारी बार-बार आने लगी और जिद्दी हो गई, फिर भी यह बात अहम है कि मेरा पेट हमेशा लोहे का रहा, मुझे हाल तक इस अंग से कोई असुविधा नहीं महसूस हुई और जबकि मेरे पिता खूब पके व्यंजनों और मादक पेयों के शौकीन थे। मैंने कभी ऐसा नहीं किया। जो भी हो, मैं विनती करता हूँ, मैं आपको यह काम सौंपता हूँ कि आप ऐसी किसी जाँच में ढिलाई नहीं करेंगे, जब आप मेरे पुत्र से मिलेंगे तो अपनी जाँच के परिणाम उसे बताएँगे और सबसे उपयुक्त उपचार सुझाएँगे। जब मैं नहीं रहूँगा तो आप रोम जाएँगे, मेरी माता और मेरे परिवार को खोजेंगे। आप उन्हें मेरी स्थिति, मेरी बीमारी और इस सुदूर तथा दु:खदायी पहाड़ी पर मेरी मृत्यु से संबंधित हर चीज का विवरण देंगे। आप उन्हें बताएँगे कि महान् नेपालियन हर चीज से वंचित, अत्यंत शोचनीय हालत में मृत्यु को प्राप्त हुए, उन्हें उनके और उनके गौरव के साथ छोड़ दिया गया था।'' उस समय सुबह के दस बजे थे। इसके बाद बुखार कम हो गया

@BOOKHOUSE

और वे एक प्रकार की नींद में चले गए।

सम्राट् ने एक बहुत बुरी रात गुजारी और वे सो नहीं पाए। वे बुद्धि खो बैठे और अंट-शंट बकने लगे। सुबह होते-होते हिचकी ने उन्हें परेशान करना शुरू किया, बुखार बढ़ गया और वे काफी उन्मत्त हो गए। उन्होंने अपनी समस्या के बारे में बात की और बैक्स्टर (गवर्नर के चिकित्सक) को आकर अपनी रिपोर्टों की सच्चाई देखने के लिए बुलवाया। फिर अचानक कल्पना में ओ' मियरा को उपस्थित देखते हुए उन्होंने अंग्रेजी नीति की निंदा करते हुए दोनों के बीच एक वार्त्तालाप की कल्पना की। उनका बुखार कम हो गया था, उनके सुनने की क्षमता सुस्पष्ट हो गई। वे शांत हो गए और फिर से आगे की बातचीत शुरू कर दी कि उनकी मृत्यु के बाद क्या किया जाना है। वे प्यास महसूस करने लगे और बड़ी मात्रा में उन्होंने ठंडा पानी पिया।

''अगर किस्मत में मेरा स्वस्थ होना लिखा है तो मैं उस जगह पर एक स्मारक बनवाऊँगा, जहाँ से यह पानी निकलता है। इस पानी ने मुझे जो सुकून दिया, उसकी याद में मैं उस झरने को सम्मानित करूँगा। यदि मैं मर जाऊँ तो जैसे उन्होंने मुझे निर्वासित किया है, वैसे मेरे अवशेषों को निर्वासित न करें। मेरी इच्छा है कि मुझे कोरसिका में अजेशियो के कैथेड्रल में मेरे पूर्वजों के साथ दफना दिया जाए, लेकिन यदि मुझे उस जगह न ले जाया गया, जहाँ मैं पैदा हुआ था तो फिर वे मुझे इस स्थान पर दफना दें, जहाँ यह बढ़िया और ताजा पानी बहता है।'' इस अनुरोध को बाद में मान लिया गया।

वे कुछ दिनों के लिए इसी स्थिति में रहे। 1 मई को वे लगभग पूरे दिन उन्मत्त रहे और उन्हें बहुत ज्यादा वमन हुआ। उन्होंने दो छोटे बिस्कुट खाए और रेड वाइन की कुछ बूँदें लीं। 2 मई को वे कुछ चुप थे और खतरनाक लक्षण कुछ शांत हो गए थे, लेकिन 2 बजे उन्हें फिर से बुखार का दौरा पड़ा और वे फिर उन्मत्त हो गए। वे अपने आपसे फ्रांस, अपने प्रिय पुत्र, अपने कुछ पुराने सहयोगियों की बात करते रहे। कभी-कभार परिकल्पना में स्पष्ट रूप से लड़ाई के मैदान में होते थे। वे चिल्लाते थे, ''स्टेंजेल! डिसेक्स! मैसेना! आह! जीत सामने नजर आ रही है! दौड़ो—आगे बढ़ो—हमला करो! वे हमारे हैं!''

'मैं यह सब सुन रहा था।'' डॉ. एंटोमार्शी कहते हैं, ''और गहरे दु:ख में उस पीड़ादायक यातना को बढ़ते देख रहा था, जब नेपोलियन सहसा अपनी ताकत बटोरते हुए फर्श पर कूद गए और टहलने के लिए बगीचे में जाने लगे। मैं उन्हें अपनी बाँहों में सँभालने के लिए दौड़ा, लेकिन उनके पैर उनके शरीर के भार के नीचे मुड़ गए। वे पीछे की ओर गिरे और मुझे उन्हें गिरने से न बचा पाने का संताप हुआ। हमने उठाया और फिर से बिस्तर पर चलने का अनुरोध किया, लेकिन वे किसी को नहीं पहचान रहे थे और एक हिंसक आवेग में आ गए। वे अचेत थे और बेचैनी से बगीचे में टहलने की इच्छा जता रहे थे। हालाँकि दिन में वे अधिक संयमित हो गए और फिर से अपनी बीमारी और सटीक शारीरिक परीक्षण, जो वे मृत्यु के बाद अपने शरीर का कराना चाहते थे, के बारे में बात करने लगे। उन्हें एक फितूर था कि यह उनके बेटे के लिए उपयोगी हो सकता है।''

''मोंटपेलियर के चिकित्सकों ने...।'' उन्होंने एंटोमार्शी से कहा, ''घोषणा की थी कि पाइलोरस में सिरोसिस की बीमारी मेरे परिवार में आनुवंशिक होगी। मुझे लगता है कि उनकी रिपोर्ट मेरे भाई लुई के पास होगी, उसे माँगो और उसकी मेरे केस में अपने विचारों से तुलना करो, ताकि मेरा बेटा इस क्रूर बीमारी से बचाया जा सके। आप उससे मिलेंगे डॉक्टर और आप उसे बताएँगे कि उसके लिए क्या अच्छा है और उसे इस निष्ठुर पीड़ा से बचाएँगे जिसका मैं अभी अनुभव कर रहा हूँ। मैं आपसे यह आखिरी चीज माँगता हूँ।'' बाद में दिन में उन्होंने कहा, ''डॉक्टर, मैं बहुत बीमार हूँ। मुझे लगता है कि मैं मरने जा रहा हूँ।''

@BOOKHOUSE

कुछ अस्फुट असंबद्ध शब्दों के उच्चारण के अलावा नेपोलियन आखिरी बार 3 मई को बोले। यह दोपहर की बात है और उन्होंने अपने सहयोगियों से अनुरोध किया था कि उनकी चेतना खो देने की स्थिति में डॉ. अर्नोट को छोड़कर किसी अन्य अंग्रेज चिकित्सक को उनके पास नहीं लाया जाए। उन्होंने कहा, ''मैं मरने जा रहा हूँ और आप लोगों को यूरोप लौटना है। मुझे आपको इस बारे में कुछ सलाह देनी है कि आपको क्या करना है। आप लोगों ने मेरा निर्वासन बाँटा है; आप मेरी स्मृति को लेकर वफादार रहेंगे और उसे क्षति पहुँचाने वाला कोई काम नहीं करेंगे। मैंने सभी उपयुक्त सिद्धांतों को स्वीकृत किया है और उन्हें अपने कानूनों और अधिनियमों में डाला है; मैंने एक भी छोड़ा नहीं है, लेकिन दुर्भाग्यवश मैं विकट परिस्थिति में था और सख्ती से काररवाई करने के लिए तथा अपनी योजनाओं के कार्यान्वयन को स्थगित करने के लिए बाध्य था। हमारी पराजय हुई और फ्रांस को उन उदार संस्थानों से वंचित होना पड़ा, जो मैं उसे देना चाहता था। फ्रांस मुझसे प्यार करता है, वह मेरे इरादों के लिए शुक्रगुजार है, वह मेरे नाम और मेरी जीतों का जश्न मनाता है। उसके उदाहरण का अनुकरण करो, उन विचारों के प्रति वफादार रहो, जिनका हमने बचाव किया है और जो गौरव हमने हासिल किया है; कोई और रास्ता सिर्फ लज्जा और भ्रम को प्रेरित कर सकता है।''

इस समय तक यह नहीं लगता था कि नेपोलियन समझ पा रहे थे कि उनके आस-पास क्या चल रहा है। उनकी कमजोरी हर पल बढ़ रही थी और यातनादायी हिचकी मृत्यु तक जारी रही। उस घटना से एक दिन पहले एक भयावह अंधड़ आया, जिससे लगा कि लोंगवुड में सबकुछ नष्ट हो जाएगा। पेड़-पौधे जड़ से उखड़ गए और खास तौर पर यह देखा गया कि एक विलो का पेड़, जिसके नीचे नेपोलियन आम तौर पर ताजी हवा का आनंद लेने के लिए बैठते थे, गिर गया था। एंटोमार्शी ने कहा, ''ऐसा लग रहा था कि सम्राट् जिन चीजों को भी महत्त्व देते थे, वे उनके बाद नष्ट हो जाने वाली हैं।''

@BOOKHOUSE1

उनकी मृत्यु के दिन मदाम बरट्रैंड, जो उनकी बगल में लगातार बैठी हुई थीं, ने अपने बच्चों को बुलवाया ताकि वे नेपोलियन को अंतिम विदाई दे सकें। इसके बाद जो दृश्य दिखा, वह दिल को छू लेने वाला था। बच्चे बिस्तर की ओर दौड़े, नेपोलियन के हाथों को चूमा और उन्हें आँसुओं से भर दिया। एक बच्चा अचेत हो गया और सबको वहाँ से ले जाना पड़ा। एंटोमार्शी कहते हैं, ''हम सब उनकी तरह विलाप कर रहे थे। हम सब वही व्यथा महसूस कर रहे थे, उस घातक क्षण के आने का क्रूर पूर्वाभास, जो हर मिनट पास आ रहा था।''

उनके प्रिय अनुचर नोवराज, जो कुछ समय से काफी बीमार था, ने जब नेपोलियन की अवस्था के बारे में सुना तो दूसरों की सहायता से

सेंट हेलेना में नेपोलियन का मकबरा

नीचे आया और रोते हुए अपार्टमेंट में प्रवेश किया। उसे बहुत मुश्किल से कमरे से बाहर जाने के लिए मनाया गया। वह उन्मत्त था और कल्पना में देख रहा था कि उसका स्वामी खतरे में है और उसे सहायता के लिए बुला रहा है। उसने कहा कि वह उन्हें छोड़कर नहीं जाएगा, बल्कि उनके लिए लड़ेगा और जान दे देगा, लेकिन अब नेपोलियन पर अपने अनुचरों के आँसुओं का कोई असर नहीं पड़ रहा था। वे दो दिनों से शायद ही कुछ बोले थे;

सुबह-सुबह वे अस्फुट स्वर में कुछ बोले थे, जिनमें सिर्फ यह शब्द सुनाई दिया था, ''टेट द आर्मी!'' ये शब्द अंत तक उनके होंठों पर थे और जो उनकी कल्पनाओं की दिशा दिखाते थे। दिन मरोड़ और ऐंठन की हरकतों और धीमी सिसकियों में गुजरा, कभी-कभी एक ऊँची चीख सुनाई दे जाती थी और शाम को छह बजे से ठीक पहले यह शोकमय दृश्य खत्म हो गया। एक हलकी सी झाग ने उनके होंठों को ढक लिया और वे अब इस दुनिया में नहीं थे।

उनकी मृत्यु के लगभग छह घंटे बाद एंटोमार्शी ने शव को सावधानी से नहलाया और दूसरे बिस्तर पर लिटा दिया, फिर एक्जीक्यूटर्स ने दो कोड पत्र खोलने की प्रक्रिया शुरू की, जिन्हें सम्राट् के निधन के तुरंत बाद खोलने के निर्देश थे। एक ग्रेच्युटी से संबंधित था, जिसे उनके घर के विभिन्न लोगों को उनके निजी धन में से दिया जाना था और उसमें उस दान का भी जिक्र था, जिसे वे सेंट हेलेना के गरीबों में बाँटना चाहते थे। दूसरे पत्र में उनकी इस अंतिम इच्छा का उल्लेख था कि उनकी अस्थियाँ सीयेन नदी के तट पर फ्रांसीसी लोगों के बीच में दफनाई जाएँ, जिन्हें वे बहुत प्यार करते थे। एक्जीक्यूटर्स ने यह अनुरोध गवर्नर तक पहुँचाया, जिन्होंने कहा कि उनके आदेशानुसार उनके शव को इसी द्वीप पर दफनाया जाए। अगले दिन नेपोलियन के चेहरे का एक प्लास्टर साँचा बनाने के बाद एंटोमार्शी ने सर थॉमस रीड, कुछ स्टाफ अधिकारियों और आठ मेडिकलकर्मियों की उपस्थिति में शव को खोलना शुरू किया।

सम्राट् ने इच्छा प्रकट की थी कि उनके बाल (जो भूरे रंग के थे) उनके परिवार के अलग-अलग लोगों को दिए जाएँ, इसलिए उनके बालों को काटकर इस उद्देश्य के लिए रख लिया गया। पिछले कुछ महीनों के दौरान वे काफी दुबले हो गए थे। उनकी मृत्यु के बाद उनका चेहरा और शरीर पीला पड़ गया था, लेकिन उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ था या विवर्ण नहीं हुआ था। उनकी आकृति बिलकुल ठीक थी, आँखें बंद थीं और ऐसा लगता था कि सम्राट् मृत नहीं हैं, बल्कि एक गहरी नींद में हैं। उनके मुँह पर सौम्यता बरकरार थी। हालाँकि एक ओर एक कटु मुसकराहट की मुद्रा में होंठ मुड़े हुए थे। उनके शरीर पर बहुत से घाव थे। उसे खोलने पर पता चला कि उनका लीवर प्रभावित नहीं हुआ था, लेकिन पेट का वह कैंसर मौजूद था, जिसका संदेह उन्होंने खुद जताया था और जिससे उनके पिता और दो बहनों की मृत्यु हुई थी। यह कष्टदायक जाँच पूरी करने के बाद एंटोमार्शी ने उनका हृदय निकाला और उसे वाइन से भरे एक चाँदी के बरतन में रख दिया; फिर उन्होंने मुख्य अनुचर को शव को कपड़े पहनाने के लिए कहा, जिसका वह सम्राट् के जीवनकाल के दौरान अभ्यस्त था। इसमें शासर्स ऑफ द गार्ड के कर्नल की हरी वर्दी में सीने पर लिजन ऑफ ऑनर की भव्य पट्टी लगाई गई, जो लिजन ऑफ ऑनर के आदेशों और लोहे के ताज, छोटी एड़ियों वाले लंबे बूटों और अंत में तीन कोने वाले हैट से सजा हुआ था। इस प्रकार से सजाकर नेपोलियन को 6 मई की दोपहर में हॉल से बाहर लाया गया, जिसमें भीड़ तुरंत घुस गई। शरीर को काटने में जिस चादर का इस्तेमाल किया गया था, वह खून से सनी होने के बावजूद उसे टुकड़ों में फाड़कर वहाँ खड़े लोगों में वितरित कर दिया गया।

नेपोलियन अपने छोटे से शयनकक्ष में शांत लेटे हुए थे, जिसे अंतिम संस्कार के कक्ष में बदल दिया गया था। उसमें काला कपड़ा टँगा हुआ था, जो शहर से लाया गया था। इस समारोह से ही निवासियों को पहले उनकी मृत्यु के बारे में पता चला। शव, जिस पर लेप नहीं लगाया गया था और जो असाधारण रूप से सफेद था, उसे छोटे सफेद परदों से घिरे एक कैंप बेड पर रखा गया था, जो ताबूत का काम कर रहा था। नेपोलियन ने मरेंगो की लड़ाई में जो नीला लबादा पहना था, उससे उनके शरीर को ढका गया था। उनके पैर और हाथ आजाद थे; बाईं ओर तलवार रखी हुई थी और सीने पर एक क्रूसिफिक्स रखा हुआ था। कुछ दूरी पर चाँदी का बरतन था जिसमें हृदय

@BOOKHOUSE

और पेट रखा हुआ था, जिसे हटाने की अनुमति नहीं दी गई थी। सिर के पीछे एक वेदी थी, जहाँ अपने स्टोल और उत्तरीय में पादरी प्रथागत प्रार्थनाएँ कर रहे थे। नेपोलियन के सहयोगी, अधिकारी और घरेलू नौकर शोक के कपड़े पहने हुए बाईं ओर खड़े थे। डॉ. अर्नोट को इस बात की निगरानी करने का काम सौंपा गया था कि शरीर को वहाँ से ले जाने की कोई कोशिश न की जाए।

कुछ घंटों से भीड़ ने दरवाजों को घेर रखा था। उन्हें अंदर आने दिया गया और वे नेपोलियन के निर्जीव शरीर के पास श्रद्धापूर्ण शांति में खड़े रहे। पहले 20वीं और 66वीं रेजीमेंट के अधिकारियों को, फिर दूसरों को अंदर आने दिया गया। अगले दिन (7 मई को) और भीड़ जुटी। एंटोमार्शी को नेपोलियन का हृदय अपने साथ यूरोप नहीं ले जाने दिया गया। उन्होंने हृदय और पेट को शराब से भरे दो बरतनों में रखा और उन्हें ताबूत के कोने में रख दिया, जिसमें नेपोलियन को रखा गया था। वह सफेद साटन लगा हुआ जिंक का एक शेल था, जिसमें एक तकिये के साथ एक गद्दा रखा गया था। उनके सिर पर हैट रखने की जगह नहीं थी, इसलिए उसे उनके पैरों के पास कुछ सैन्य चिह्नों, उनके शासनकाल के दौरान ढाली गई कुछ फ्रांसीसी मुद्राओं आदि के साथ रखा गया था। ताबूत को बंद कर दिया गया, उसे सावधानी से बाँधा गया और फिर उसे महोगनी के एक और बक्से में रखा गया, जिसे लीड के बने एक तीसरे बक्से में डाला गया और अंत में महोगनी के एक चौथे बक्से में बंद कर दिया गया। उसे सील कर दिया गया और स्क्रू से कस दिया गया। जहाँ पहले उनका शव रखा गया था, वहीं ताबूत को दर्शन के लिए रखा गया और उसे उस लबादे से ढका गया जिसे नेपोलियन ने मरेंगो की लड़ाई में पहना था। अंतिम संस्कार के लिए अगला दिन 8 मई रखा गया और सैनिकों को सुबह-सुबह उसमें शामिल होना था।

यह क्रमबद्ध रूप में हुआ। सबसे पहले गवर्नर आए, उनके तुरंत बाद रीयर-एडमिरल और फिर सभी पर्सियासनिक तथा सैन्य अधिकारी लोंगवुड में एकत्रित हुए। दिन अच्छा था, लोगों ने सड़कों पर भीड़ लगा दी, पहाड़ियों से संगीत का स्वर गूँज रहा था। इन निर्जन इलाकों में कभी इतना उदास और भव्य समारोह नहीं देखा गया था। साढ़े बारह बजे ग्रेनेडियरों ने ताबूत पकड़कर उसे बड़ी मुश्किल से उठाया और उसे बहुत मेहनत से बगीचे में ले जाने में सफल रहे, जहाँ अर्थी इंतजार कर रही थी। उसे गाड़ी में रखा गया, बैंगनी रंग के मलमल के एक कपड़े से और उस लबादे से ढका गया, जो उस नायक ने मरेंगो में पहना था। सम्राट् का परिवार शोकग्रस्त था। गवर्नर के आदेश से जुलूस का क्रमबद्ध किया गया था। अपने पुरोहिती लबादों में एब्बे विग्नाल, उनकी बगल में अभिमंत्रित जलकुंड लिए हुए हेनरी बरट्रैंड, डॉ. अर्नोट और एंटोमार्शी, साइसों द्वारा सँभाले जा रहे चार घोड़ों द्वारा खींची जा रही अर्थी की निगरानी का काम सँभालने वाले लोग, अर्थी के दोनों ओर बिना हथियारों वाले ग्रेनेडियर, बाद में ऊबड़-खाबड़ सड़क की वजह से अर्थी के आगे बढ़ने में मुश्किल होने पर इन्हें ही अपने कंधों पर ताबूत ढोना था। युवा नेपोलियन बरट्रैंड और मर्चेंट दोनों पैदल अर्थी की बगल में चल रहे थे। काउंट बरट्रैंड और मोंथोलन घोड़े पर सवार होकर अर्थी के नजदीक चल रहे थे, जो सम्राट् के परिवार का हिस्सा थे। हाथ से चलाए जा रहे दो घोड़ों द्वारा खींची जा रही बग्घी में अपनी बेटी हॉरटेंस के साथ काउंटेस बरट्रैंड; उनके पिकेर आर्शेम्बो द्वारा चलाया जा रहा सम्राट् का घोड़ा; मेरीन के अधिकारी घोड़े पर और पैदल; स्टाफ अधिकारी घोड़ों पर; द्वीप के परिषद् के सदस्य इसी प्रकार से; जनरल कॉफिन और मार्क्वी मॉन्ट्शेनू घोड़े पर; रीयर एडमिरल और गवर्नर घोड़े पर द्वीप के निवासी।

यह शृंखला इसी क्रम में लोंगवुड से चली, बैरकों से गुजरी और रक्षक सेना से मिली, जो 2,500 की संख्या में थे और हट्स गेट तक सड़क के बाईं ओर पंक्तिबद्ध थे। अलग-अलग जगहों पर तैनात किए गए सैन्य बैंडों द्वारा

@BOOKHOUSE

बजाई जानेवाली शोक की धुन उस अवसर की तीव्र उदासी को और बढ़ा रही थी। जब यह शृंखला आगे निकल गई तो टुकड़ियाँ पीछे-पीछे चलीं और दफनाने के स्थान तक उनके साथ गईं। सबसे पहले घुड़सवार सिपाहियों ने मार्च किया, फिर पैदल सेना की 20वीं रेजीमेंट, मेरीन, 66वीं रेजीमेंट, सेंट हेलेना के स्वयंसेवक और अंत में पंद्रह तोपों के साथ रॉयल आर्टिलरी की कंपनी। लेडी लो और उनकी बेटी हट्स गेट पर सड़क के किनारे दो घोड़ों द्वारा खींची जा रही एक खुली बग्घी में थीं। उनके साथ कुछ नौकर थे और वे एक दूरी से जुलूस के पीछे चल रहे थे। पंद्रह तोपें सड़क किनारे लगाई गई थीं और गनर तोप चलाने के लिए अपनी चौकियों पर तैयार थे। हट्स गेट से चौथाई मील आगे बढ़ने के बाद अर्थी रुकी, सिपाही रुककर सड़क किनारे पंक्ति में खड़े हो गए। इसके बाद ग्रेनेडियरों ने ताबूत को अपने कंधों पर उठाया और उसे इसी तरह नए रास्ते, जो पहाड़ की ढाल पर बनाया गया था, से दफनाने के स्थान तक ले गए। सभी सहयोगी उतरे, महिलाएँ अपनी बग्घियों से उतरीं और बिना किसी क्रम के जुलूस शव के साथ चला।

काउंट बरट्रैंड और मोंथोलन, मर्चेंट और युवा नेपोलियन बरट्रैंड ने ताबूत के कपड़े के चारों कोनों को पकड़ा। ताबूत को कब्र की बगल में रखा गया, जहाँ काला कपड़ा टाँगा गया था। पास में रस्सियाँ और घिरनियाँ दिख रही थीं, जिनकी मदद से उसे नीचे किया जाना था। इसके बाद ताबूत को खोल दिया गया, एब्बे विग्नाल ने सामान्य प्रार्थनाएँ दोहराईं और पैरों को पूर्व की ओर करते हुए शव को कब्र में डाल दिया गया। इसके बाद तोप ने लगातार तीन सैल्यूट किए, हर सैल्यूट में पंद्रह गोलियाँ दागी गईं। एक विशाल पत्थर जिसे सम्राट् के नए घर के निर्माण में लगाया जाना था, अब उनकी कब्र को बंद करने के लिए इस्तेमाल किया गया और उसे तब तक नीचे उतारा गया, जब तक कि वह एक मजबूत पथरीली दीवार पर नहीं टिक गया, ताकि वह ताबूत को स्पर्श न करे।

जब कब्र को बंद किया जा रहा था, भीड़ ने विलो के पेड़ों को घेर लिया जिन्हें नेपोलियन की पूर्व उपस्थिति ने पहले ही श्रद्धा की वस्तु बना दिया था। हर कोई उन पेड़ों की एक टहनी या कुछ पत्ते लेना चाहता था जिन्हें अब इस महान् व्यक्ति की कब्र पर छाया करनी थी। वे उन चीजों को एक बहुमूल्य यादगार के रूप में सुरक्षित रखना चाहते थे। गवर्नर और एडमिरल ने इस उपद्रव को रोकने की कोशिश की, लेकिन वह कोशिश व्यर्थ रही। हालाँकि बाद में गवर्नर ने उस स्थल को एक बैरिकेड से घेर दिया, जहाँ पर उन्होंने घुसपैठ रोकने के लिए एक सुरक्षाकर्मी लगा दिया। सम्राट् की कब्र लोंगवुड से एक लीग दूर थी। ताबूत चतुर्भुज आकार का था, नीचे की अपेक्षा ऊपर से अधिक चौड़ा: उसकी गहराई बारह फीट थी। ताबूत को लकड़ी के दो मजबूत फट्टों पर रखा गया था और उसे उसकी पूरी परिधि में अलग किया गया।

नेपोलियन के सहयोगी फ्रांस लौट गए और वह द्वीप धीरे-धीरे अपनी पहले जैसी नीरवता में लौट गया, जबकि कब्र के ऊपर रोते विलो के पेड़ उस व्यक्ति के अवशेषों की सुरक्षा के लिए खड़े थे जिसके लिए यूरोप बहुत छोटी जगह थी।

❑

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन और यहूदी

नेपोलियन बोनापार्ट के उदय ने यूरोप के यहूदियों को पुराने कानूनों से आजाद करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो उन्हें यहूदी बस्तियों तक सीमित करते थे, साथ ही ऐसे बहुत से कानून जो यहूदियों को संपत्ति, उपासना और कैरियर के अधिकार से वंचित करते थे। फ्रांसीसी क्रांति ने धर्म या जन्म के अनुसार लोगों में उस भेदभाव को समाप्त कर दिया, जो राजतंत्र के अधीन मौजूद था। सन् 1789 के

फ्रांसीसी क्रांति के दौरान बासिल की तबाही

व्यक्तिगत तथा नागरिक अधिकारों की घोषणा ने धर्म की स्वतंत्रता और उपासना की आजादी को सुनिश्चित किया, जब तक कि वह सार्वजनिक व्यवस्था को भंग नहीं करता। उस समय अधिकांश अन्य यूरोपीय देश अल्पसंख्यक धर्मों के लोगों के अधिकारों को सीमित करने वाले नियम लागू करते थे। नेपोलियन बोनापार्ट की विजयों ने नागरिकों की बराबरी और कानून व्यवस्था के संबंध में क्रांतिकारी फ्रांस के आधुनिक विचारों को फैलाने का काम किया।

यहूदियों की ओर नेपोलियन का व्यक्तिगत दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट नहीं है, क्योंकि उन्होंने अलग-अलग समय में यहूदी लोगों के पक्ष और विरोध दोनों में बहुत से बयान दिए हैं। इतिहासकार बेरेल वेन 'ट्रायंफ ऑफ सरवाइवल' में कहते हैं कि नेपोलियन मुख्य रूप से यहूदियों को एक पृथक समुदाय के रूप में उभरते देखने के बजाय उन्हें समाज में मिलाने में दिलचस्पी रखते थे। ''यहूदियों की ओर नेपोलियन की बाहरी सहिष्णुता और निष्पक्षता उनकी इस बृहत् योजना पर आधारित थी कि उन्हें पूरी तरह अपनाते हुए, पारस्परिक विवाह और धर्मांतरण द्वारा पूरी तरह खत्म किया जा सके।'' यह दोहरी नीति उनके कुछ शुरुआती रिकॉर्डिड बयानों में देखी जा सकती है, जो 30 अप्रैल, 1806 को इंपीरियल काउंसिल में उठाए गए एल्सेस यहूदियों के प्रति व्यवहार और उनके देनदारों के सवाल से संबंधित थे। उन्होंने यहूदियों के विशाल जमावड़े को होने देना जोखिम भरा बताया, जो फ्रांसीसी साम्राज्य के एक हिस्से में, जो शत्रुओं की सीमाओं पर पड़ता था, एक राज्य के भीतर राज्य के बराबर थे। हालाँकि एक सप्ताह बाद वे कुछ उदार निष्कर्ष पर पहुँचे और उसी सभा में उनके किसी भी उत्पीड़न के खिलाफ बयान दिया।

बहरहाल, उनकी नीतियों के शुद्ध प्रभाव ने यूरोप में यहूदियों की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन ला दिया और परिणामस्वरूप यहूदी उन्हें काफी पसंद करते थे। नेपोलियन ने सन् 1806 से शुरू करके फ्रांसीसी साम्राज्य में यहूदियों की स्थिति का समर्थन करते हुए बहुत से कदम उठाए, जिनमें यहूदी समुदाय द्वारा चुना गया एक प्रतिनिधि समूह सेनहेड्रिन संयोजित करना शामिल था। विजित देशों में उन्होंने यहूदियों को उनकी बस्तियों तक सीमित करने वाले कानूनों को समाप्त कर दिया। सन् 1807 में उन्होंने रोमन कैथोलिसिज्म और लुथेरान और कैलविनिस्ट प्रोटेस्टेंटिज्म के साथ-साथ यहूदी धर्म को फ्रांस का आधिकारिक धर्म घोषित कर दिया। सन् 1808 में नेपोलियन ने बहुत से सुधार किए, यहूदियों के सभी कर्जों को समाप्त, कम या स्थगित कर दिया, जिन्होंने यहूदी समुदाय को लगभग ढहा दिया था। यहूदियों को कुछ स्थानों तक सीमित भी किया गया था, जहाँ पर वे रह सकते थे। इन प्रतिबंधों को फिर सन् 1811 में समाप्त कर दिया गया।

@BOOKHOUSE

हालाँकि यहूदियों के खिलाफ नेपोलियन का व्यक्तिगत दृष्टिकोण निश्चित नहीं था। वे स्पष्ट रूप से राजनीतिक कारणों से भी काररवाई कर रहे थे। वे यहूदियों या कैथोलिकों जैसे अलग-थलग पड़े समुदायों से लाभ उठाने के उपाय के रूप में समानता का इस्तेमाल करना चाहते थे। उनके विचार के इन दोनों पक्षों को एक चिकित्सक द्वारा पूछे गए सवाल के उनके जवाब में देखा जा सकता है, जिसने पूछा था कि उन्होंने सन् 1816 में अपने निर्वासन के बाद यहूदियों की मुक्ति पर जोर क्यों दिया था?

''मेरी मुख्य इच्छा यहूदियों को आजाद करने और उन्हें पूर्ण नागरिक बनाने की थी। मैं उन्हें समानता, आजादी और बंधुत्व के वे सभी वैधानिक अधिकार दिलाना चाहता था, जो कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों को मिले हुए थे। मेरी इच्छा है कि यहूदियों से भाइयों जैसा व्यवहार किया जाए मानो हम सब यहूदी धर्म के अंग हों। एक अतिरिक्त लाभ के रूप में मुझे लगा कि इस कदम से फ्रांस में बहुत सी संपदा आएगी, क्योंकि यहूदी काफी संख्या में हैं और वे बड़ी संख्या में हमारे देश में आएँगे, जहाँ उन्हें किसी अन्य देश के बजाय अधिक सुविधाएँ मिलेंगी। सन् 1814 की घटनाएँ न होतीं, तो यूरोप के अधिकतर यहूदी फ्रांस आ जाते, जहाँ पर समानता, बंधुत्व और आजादी उनका इंतजार कर रहे थे और जहाँ वे किसी अन्य की तरह देश की सेवा कर सकते थे।''

नेपोलियन और यहूदी राष्ट्र

सन् 1799 में एक्रे की घेराबंदी के दौरान नेपोलियन ने फिलीस्तीन को यहूदी राष्ट्र बताते हुए एक घोषणा तैयार की, हालाँकि उन्होंने उसे जारी नहीं किया। बहरहाल, उस घेराबंदी में वे अंग्रेजों से हार गए और वह योजना कभी कार्यान्वित नहीं हो पाई। नेपोलियन एंड होली लैंड में नाथन शउर सहित कुछ इतिहासकार मानते हैं कि वह घोषणा पूरी तरह प्रचार के उद्देश्य से की गई थी और नेपोलियन एक यहूदी देश के निर्माण को लेकर गंभीर नहीं थे।

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन की विरासत

यहूदियों के भविष्य पर नेपोलियन का अप्रत्यक्ष प्रभाव उनके नाम से दर्ज किसी भी आदेश से कहीं अधिक शक्तिशाली था। मध्य यूरोप की सामंती बेड़ियों को तोड़ते हुए और फ्रांसीसी क्रांति की समानता को लागू करते हुए उन्होंने यहूदी मुक्ति के लिए उससे अधिक काम किया, जितना उनसे पहले की तीन सदियों के दौरान हुआ था। वेस्टफेलिया परिषद् नेपोलियन के पतन के बाद तक अन्य जर्मन प्रांतों के लिए एक आदर्श बन गई और राइन प्रांतों के नेपोलियन या उनके प्रतिनिधियों के अधीन होने के परिणामस्वरूप उन प्रांतों में यहूदियों की स्थिति स्थायी रूप से सुधर गई। हेन और बोर्न दोनों नेपोलियन के सिद्धांतों की उदारता के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। खासकर जर्मन यहूदियों ने हमेशा नेपोलियन को जर्मनी में यहूदियों की मुक्ति का एक मुख्य प्रवर्तक माना है। कहा जाता है कि जब यहूदी कुलनाम चुन रहे थे, तो उनमें से कुछ ने 'शोंथेल' नाम अपनाते हुए अपना आभार प्रकट किया, जो 'बोनापार्ट' का अनुवाद है। इसके बाद यहूदी बस्तियों में नेपोलियन के कार्यकलापों के बारे में कहानियाँ प्रचलित हो गईं।

❑

निष्कर्ष

रात्रि लगभग 9.00 बजे वेलिंगटन और ब्लूशर की मुलाकात हुई जिसका अर्थ था कि लड़ाई खत्म हो चुकी थी। वाटरलू में एंग्लो गठबंधन बलों के लगभग 15,000 सैनिक मारे गए और घायल हुए। पर्सियनों को कुल मिलाकर 7000 लोगों का नुकसान हुआ। नेपोलियन की सेना में मृत और घायलों की संख्या 25,000 थी। उनके 8000 सैनिकों को बंदी बना लिया गया।

वाटरलू में फ्रांसीसी हार और वेन्न की लड़ाई में नेपोलियनिक युद्धों की आखिरी लड़ाई के बाद, नेपालियन को गद्दी से उतार दिया गया। वे अंग्रेजों के आगे आत्मसमर्पण करने से पहले कुछ समय के लिए फरार रहे। इसके बाद उन्हें निर्वासित करके सेंट हेलेना भेज दिया गया, जहाँ सन् 1821 में उनकी मृत्यु हो गई।

वाटरलू में लॉयन स्मारक डच द्वारा उस स्थान पर बनाया गया है, जहाँ पर यह माना जाता है कि पिंरस ऑफ आरेंज जख्मी हुए थे।

रणभूमि का वर्तमान इलाका उससे काफी अलग है, जो वह सन् 1815 में रहा होगा। सन् 1820 में डच राजा विलियम प्रथम ने उस स्थान पर एक स्मारक के निर्माण के आदेश दिए, जहाँ यह माना जाता था कि उनका पुत्र, पिंरस ऑफ आरेंज जख्मी हुआ था। यहाँ पर एक विशाल टीला बनाया गया जिसमें वेलिंगटन की जलमग्न सड़क सहित रणभूमि के दूसरे भागों से ली गई 3,00,000 क्यूबिक मीटर मिट्टी का इस्तेमाल किया गया। कहा जाता है कि बरसों बाद उस स्थल पर आने के बाद वेलिंगटन ने शिकायत की—

@BOOKHOUSE1

CODE CIVIL
DES FRANÇAIS.

TITRE PRÉLIMINAIRE.

DE LA PUBLICATION, DES EFFETS ET DE L'APPLICATION DES LOIS EN GÉNÉRAL.

ARTICLE 1.er

नेपोलियन कानून

''उन्होंने मेरी रणभूमि को बरबाद कर दिया।''

यह नाटा व्यक्ति, जिसने दो शताब्दियाँ देखीं, अठारहवीं सदी का अंत और उन्नीसवीं सदी की शुरुआत और जिसने दो दुनिया देखीं, राजतांत्रिक यूरोप और आधुनिक यूरोप, अपनी आखिरी विरासत के रूप में कई स्थायी विरासतें छोड़कर गया। उनके पतन के बावजूद उनके पर्सियासनिक और कानूनी सुधार फ्रांस में बरकरार रहे और बाद में अन्य यूरोपीय सरकारों ने उसे आदर्श रूप में अपनाया, खासकर नेपोलियनिक कोड को। उन्होंने लगभग अकेले दम पर राज्य नियंत्रित पुलिस और सार्वजनिक शैक्षणिक तंत्र के साथ आधुनिक, केंद्रीकृत ब्यूरोक्रेटिक राष्ट्र बनाया। इसके अलावा वियना के सम्मेलन के साथ 'वैधता' की अवधारणा यूरोपीय संबंधों की प्रभावी विधि बन गई। ग्रेट ब्रिटेन ने फ्रांस के खिलाफ प्रतिशोध की काररवाई को रोकने के लिए सम्मेलन में इस सिद्धांत को पेश किया; अंत में वह राजतंत्र को बहाल करने का तर्क बन गया। हालाँकि राजतंत्र की बहाली से फ्रांस को अपनी पारंपरिक सीमाएँ वापस मिल गईं। वह सारी व्यवस्था संतुलन और स्थिरता की एक अवधारणा पर आधारित थी। यूरोप के किसी भी राष्ट्र को बहुत अधिक क्षेत्रीय ताकत हासिल करने की अनुमति नहीं दी जा सकती थी; कांग्रेस

आक्रामकता के स्थान पर क्षेत्रीय वैधता का एक राजनयिक शासन स्थापित करने की उम्मीद कर रहा था, जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों का मार्गदर्शन करता।

नेपोलियन के बचपन की यह दिलचस्प घटना 'मेमोयर्स ऑफ डि डचेस द अरब्रेंस' से ली गई है—''एक दिन उनकी एक बहन ने उन

वाटरलू में शेर स्मारक

पर एक टोकरा अंगूर, अंजीर और चकोतरे खा जाने का आरोप लगाया, जो उनके अंकल द कैनन के बगीचे से आए थे। जो लोग बोनापार्ट परिवार से परिचित नहीं थे, उन्हें इस अपराध की विशालता का अंदाजा नहीं था।

अंकल द कैनन के फलों को खाना और किसी के भी अंगूर या अंजीर खाने से अधिक आपराधिक था। एक जाँच करवाई गई। नेपोलियन ने इस बात से इनकार कर दिया और उन्हें कोड़े लगाए गए। उनसे कहा गया कि यदि वह माफी माँगते हैं, तो उन्हें माफ कर दिया जाएगा। उन्होंने विरोध किया कि वे निर्दोष हैं, लेकिन उन पर विश्वास नहीं किया गया। यदि मुझे सही याद है तो उनकी माता उस समय एम. डि मारबफ या किसी अन्य मित्र से मिलने गई हुई थीं।

@BOOKHOUSE1

नेपोलियन की जिद का परिणाम यह रहा कि उन्हें पूरे तीन दिन ब्रेड और चीज पर रखा गया और चीज 'ब्रोशियो' नहीं थी, लेकिन वे रोए नहीं। वे उदास थे, मगर नाराज नहीं। आखिरकार अपनी सजा के चौथे दिन मेरियन बोनापार्ट की एक नन्ही मित्र देश से लौटी और नेपोलियन के इस कलंक के बारे में सुनने पर उसने स्वीकार किया कि उसने और मेरियन ने वे फल खाए थे। अब सजा पाने की बारी मेरियन की थी। जब नेपोलियन से पूछा गया कि उन्होंने अपनी बहन पर आरोप क्यों नहीं लगाया, तो उन्होंने जवाब दिया कि हालाँकि उन्हें संदेह था कि वह दोषी है, फिर भी उसकी नन्ही मित्र के बारे में सोचते हुए, जिसका इस झूठ में कोई योगदान नहीं था, उन्होंने कुछ नहीं कहा। उस समय वे सिर्फ सात वर्ष के थे।'' (खंड 1, पृष्ठ 9, एडिशन 1883)

❑❑❑